मुस्लिम संत-चरित

सुप्रसिद्ध फारसी ग्रथ तजकिरत-उल औलिया के आधार पर रचित
सूफी सतो के चरित और उनके उपदेश

महात्मा भगवान

•

१९७२

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

प्रकाशकीय

संत-साहित्य के प्रकाशन की ओर 'मण्डल' का ध्यान बहुत दिनो से रहा है और उसने अबतक उसके अन्तर्गत कई पुस्तके प्रकाशित की हैं। 'संत-सुधासार', 'संत-वाणी', 'बुद्ध वाणी', 'तुकाराम गाथासार', 'तामिलवेद', 'शेख फरीद' 'स्वामी दादूदयाल', 'पुरन्दरदास', 'दक्षिण की सरस्वती' आदि-आदि "मडल' की ऐसी कृतियां है, जिन्हें सभी वर्गो के पाठको ने पसन्द किया है और उनकी उपयोगिता को मुक्त कण्ठ से स्वीकार किया है।

प्रस्तुत पुस्तक मे चुने हुए २७ मुस्लिम संतो के संक्षिप्त जीवन-परिचय दिये गए है, साथ ही उनके उपदेश भी। इन जीवन-चरितो और उपदेशो से जीवन-शोधको को तो प्रेरणादायक सामग्री प्राप्त होती ही है, सामान्य पाठको को भी बहुत-कुछ मिलता है। वस्तुतः संत-महात्मा किसी भी देश और किसी भी धर्म मे पैदा हो, वे देश-काल की परिधि मे सीमित नही होते। उनकी वाणी सार्वजनिक और सार्वकालिक होती है।

इस पुस्तक के उदात्त चरितो मे बहुत-सी ऐसी घटनाएं मिलती हैं, जो शिक्षित-अशिक्षित सभी के लिए शिक्षाप्रद हैं। वे जीवन के लक्ष्य को समझने और उसे प्राप्त करने की दिशा मे अच्छी प्रेरणा देती हैं। कुछ चमत्कारी घटनाएँ भी है, जिन्हे संभव है, बुद्धिवादी सहज ग्रहण न कर सकें। ऐसी घटनाओ के शाब्दिक अर्थ को न लेकर उनकी मूल भावना को समझेंगे तो उनमे से नया प्रकाश मिलेगा।

इसके लेखक का वास्तविक नाम क्षेमानन्द 'राहत' है। वह हिन्दी के पुराने लेखक हैं। मौलिक लेखक के रूप मे उनकी सेवाए उल्लेखनीय रही हैं। उनकी कविताओ ने किसी समय में हिन्दी-जगत मे अच्छा स्थान प्राप्त किया था। हिन्दी के अनन्य प्रेमी और उन्नायक के रूप

विषय-सूची

अबुल हसन नूरी

अबुल हसन नूरी सारी मक्ती के शिष्य थे। यह अहमद हवारी के सत्-सगी और जुनैद के समकालीन थे। तसव्वुफ (अध्यात्मवाद) को यह फुक्र से अच्छा समझते थे। इनकी सुन्दर सूक्ति यह है—"सोहवत व ईसार हराम हैं।" सोहवत से अभिप्राय होगा सन्तो के सत्सग या ईश्वरोपासना से और ईसार का अभिप्राय होगा त्याग से। ये दोनो ही साधनाए तबतक व्यर्थ है जबतक मन से विकारो को और तरह-तरह की आसक्तियो को निकाल न दिया जाय। ससार की वासनाओ का मन से त्याग करके ही सत्सग और उपासना का ठीक लाभ मिल सकता है।

इस छोटे-से वाक्य मे 'हराम' शब्द से एक महत्वपूर्ण ध्वनि निकलती है। सत्सग करने से कुछ लाभ हो ही नही सकता, यह तो कह नही सकते। कुछ रहस्यो का ज्ञान तो बुद्धिमान् मनुष्य को होगा ही और उपासना करने से भी उपासक के सवेग के अनुसार मानसिक शक्ति का उद्रेक होगा ही। पर यदि मन मे शुद्धता नही है, तो उस सत्सग-जनित ज्ञान का दुरुपयोग हो सकता है और उपासना द्वारा प्राप्त शक्ति का दुरु-पयोग तो होता ही है। स्वार्थ और निम्न वृत्तियो को चरितार्थ करने मे वह खर्च होती है, यह तो रोज ही देखने मे आता है।

वर्तन को साफ किये विना उसमे दूध डालने से दूध खराब हो जाता है। मन को यम-नियमो के आधार पर पहले साधे। निम्न स्वार्थ और हेय वृत्तियो का पर्याप्त परिशोध किये विना सत्सग और उपासना वैसी ही भयकर हो सकती है जैसाकि बालक के हाथ मे तलवार देना। आज ससार के अध पतन का कारण यही है, कि विना आवश्यक पूर्व तैयारी

के आध्यात्मिक और वैज्ञानिक ज्ञान खुलेआम लोगो को दिया जाता है। हराम का अर्थ है अशुद्ध, वर्जित, अकल्याणकरी, अश्रेयस्कर।

नूरी शब्द नूर से बना है। यह अन्य सतो के नाम की तरह स्थान या जाति का सूचक नही, बल्कि उनकी उत्कृष्ट प्रतिभा-जनित एक विशिष्ट गुण का द्योतक है। कहते हैं, अधेरी रात मे यह (अबुल हसन) जब बोलते थे, तो इनके मुह से इतना नूर बाहर आता कि सारा घर रोशन हो जाता। इसीलिए इनको नूरी कहते हैं। यह भी लिखा है कि जगल मे किसी झोपडी मे जब यह इबादत करते थे, तो रात को सारा जगल रोशन हो जाता था और विशेषत इनकी झोपडी पर असीम प्रकाश छा जाता था।

यह अपने ज़माने के मशहूर सूफियो मे हुए है। मगर ऐसा लगता है कि सूफियो के खिलाफ उन दिनो एक आन्दोलन-सा उठ खडा हुआ था। लिखा है कि गुलाम खलील जब सूफियो का दुश्मन हो गया, तो उसने खलीफा से जाकर शिकायत की—"एक अजीब कौम पैदा हो गई है, जो गीत गा-गाकर नाचती है, इशारो से बातें करती है और कुफ्र के कलमात जबान पर लाती है। इनको कत्ल करना चाहिए।" इसपर खलीफा ने बडे-बडे सूफियो को बुलाकर उन्हे कत्ल करने का हुक्म दे दिया।

जल्लाद ने सबसे पहले रकाम नाम के सत को कत्ल करने का इरादा किया, मगर नूरी पहले ही जाकर उसकी जगह पर बैठ गये। उस समय इनका चेहरा प्रसन्नता से कमल की तरह खिला हुआ था। जल्लाद ज़रा सिटपिटाया। आस-पास के लोगो ने कहा, "तुम्हारे कत्ल का हुक्म नही हुआ है। तुम क्यो आ बैठे हो ?"

नूरी बोले, "हमारा धर्म ईसार (त्याग और बलिदान) पर आधारित है। मैं अपनी जान इनके एवज मे देता हू। मेरे नजदीक दुनिया का एक क्षण कयामत के हज़ार साल से अच्छा है, क्योकि यहा खुदा की खिदमत का मौका है।'

खलीफा ने इनकी ये बाते सुनी तो अपना हुक्म रोक लिया और काजी से कहा, "इन लोगो के बारे मे कानून शरा (शरीयत का कानून) क्या कहता है, यह खोजकर बताओ।"

मालूम होता है कि जुनैद और शिबली भी उन लोगों मे सम्मिलित थे, जिनको कत्ल किया जा रहा था। काजी ने नूरी और जुनैद से [illegible] पूछकर, शिबली को कुछ मजनू-सा देखकर उससे पूछा, "बीस दीनार पर क्या ज़कात वाजिब होती है ?"

शिबली बोले—"साढे बीस दीनार।"

ज़कात से अभिप्राय है उस कर से जो धार्मिक दृष्टि से सल्तनत का काम-काज चलाने को देना चाहिए।

बीस दीनार पर साढे बीस दीनार कर! यह निश्चय ही अजीब-सी बात थी। काज़ी ने जब पूछा तो शिबली ने कहा—"हजरत सिद्दीक के पास चालीस हज़ार दीनार थे। वे उन्होने सब दे दिये। अपने पास कुछ न रखा। यह आधा दीनार इसलिए देना चाहिए कि उसने बीस दीनार जमा ही क्यो किये ?" इसपर काजी चुप हो गया। काज़ी तो यह चाहता था कि इनके मुह से कोई ऐसी-वैसी बात निकले, जिसपर अपना फैसला खलीफा के पास भेजे। मगर यह कोई उसकी गिरफ्त मे नही आये।

काजी कुछ लज्जित-सा हो रहा था। इतने मे अबुल हसन नूरी काज़ी से बोले, "सुन, अल्लाह ने ऐसे लोग पैदा किये है, जिन्हे ज़िन्दगी और मौत, कयाम और कमाल उसीके मुशाहद (दर्शन) से हासिल हैं। अगर दमभर उसके मुशाहद से बाज़ रहे तो ज़िन्दा नही रह सकते। ये वे लोग है, जो उसीसे सोते, उसीसे खाते हैं, उसीसे मागते है और उसीसे सुनते और देखते है, उसीके पास मौजूद रहते है। अगर इल्म है तो यह है, जो तूने पूछा वह इल्म नही।"

काज़ी इससे बहुत प्रभावित हुआ। उसने खलीफा से कहा कि अगर ये लोग ज़िन्दीक (अधर्मी) और मुल्हिद (नास्तिक) है, तो मैं फतवा (निर्णय) देता हू कि रूए ज़मीन पर मुल्हिद कही कोई है ही नही।"

काज़ी के इस निर्णय से खलीफा सजग हुआ। वह मन मे पश्चात्ताप करने लगा कि लोगो के कहने मे आकर वह मुस्लिम जगत् के सम्मान्य बुजुर्गों के कत्ल पर आमादा हो गया था। उसने सूफियो की बडी इज्ज़त की और पूछा—"मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हू ?"

सबने यही कहा, "बस, तू यह कर कि हमे दिल से भुला दे।"

इन्ही संत नूरी का एक किस्सा है। इन्होने एक वार एक शख्स को नमाज पढते हुए अपनी दाढी से खेलते देखा। वोले, "अल्लाह की दाढी से अपना हाथ अलग रख।" खलीफा तक यह बात पहुची कि कलमा कुफ्र का है। खलीफा एक वार धोखे मे आ चुका था। उसने नूरी को बुलाकर पूछा, "यह आपने क्यो कहा ?"

वह बोले—"जब वन्दा अल्लाह की मिल्कियत है, तो वन्दे की हर चीज़ अल्लाह की हुई।"

यह सुनकर खलीफा बोले, "अलहम्द लिल्लाह। खुदा ने मुझे आपके कत्ल के गुनाह से बचा लिया।"

एक बार लोगो ने जुनैद से जाकर कहा कि तीन दिन और तीन रात हजरत नूरी को एक पत्थर पर बैठे और अल्लाह-अल्लाह के नारे बुलन्द करते गुजर गये है। न खाते है, न पीते है, न सोते है। अलबत्ता पाचो नमाज़ वक्त पर अदा करते है। उनके मुरीदो ने कहा, "वह होशियार है, फानी नही, क्योकि फानी को नमाज की भी खबर नही रहती।" जुनैद बोले, "वह बज्द मे है। वज्द मे खुदा हिफाजत करता है, ताकि खिदमत से महरूम न रहे।"

जुनैद फिर वहा पहुचे जहा पत्थर पर बैठे नूरी अल्लाह-अल्लाह की रट लगा रहे थे। उनकी हालत देखकर अधिकृत स्वर मे जुनैद बोले, "अगर अल्लाह की रज़ा पसन्द है तो इस काम को बद करो।" उनका मतलब यह था कि ईश्वर की मर्ज़ी चाहनेवाले सूफी ऐसे वाह्य प्रदर्शनो से दूर ही रहना उचित समझते हैं, क्योकि जो चीज़ ख्लक के नज़दीक लाती है वही खालिक से दूर करती है। नूरी को यह वात पसन्द आई। आश्वस्त स्वर मे जुनैद से बोले, "तुम मेरे नेक उस्ताद हो।"

नूरी एक वार शिवली की मजलिस मे पहुचे और बोले, "अल्लाह आलिम-बेअमल मे राजी नही होता। अगर तू आलिम-वाअमल है तब तो वाज कह, वरना वेदी से नीचे उतर आ।" शिवली ने गौर किया तो अपने मे कमी पाई। वह फौरन मच से उतर आये और एकान्त मे जाकर मुद्दत तक साधना करते रहे। फिर लोग जाकर उन्हे खिलवत से ले आये और मच पर बिठाकर वाज़ के लिए मजबूर किया।

अबुल हसन नूरी

इस्फहान का रहनेवाला एक युवक नूरी के दर्शनो को आने लगा तो इस्फहान के बादशाह ने उसे रोका और कहा कि अगर तू वहा न जाय तो मैं तुझे महल, माल और बहुत-सी चीजे दूगा। मगर वह नही माना और नगे पैर उनके दर्शनो के लिए चल दिया। इधर नूरी ने अपने शिष्यो से कहा, "जमीन को बुहारकर साफ कर दो, हमारा एक भक्त दर्शनो के लिए नगे पैर आ रहा है।" इस्फहानी ने आकर प्रेमपूर्वक प्रणाम किया।

नूरी ने इस्फहानी को सारा हाल बताया कि किस तरह उसका आने का इरादा हुआ, किस तरह शाह ने उससे कहा कि वहा न जा, मैं तुझे हजार दीनार का महल मय तमाम सामान के और कनीज (दासी) मय जेवर के दूगा और किस तरह वह जवामरदी के साथ इस पेशकश को ठुकराकर नगे पैरो जियारत को आया। वह शख्स इनकी इस करामात से और अपने सम्मान से बहुत प्रभावित हुआ। फिर नूरी ने कहा, "मुरीद वह है कि तमाम आलम की नियामते उसके सामने रख दी जाय तो भी वह उस ओर नजर न करे।"

एक बार जुनैद नूरी से मिलने आये। नूरी बोले, "तीस साल से मैं इस मुश्किल मे हू कि जब अल्लाह जाहिर होता है तो मैं गुम हो जाता हू। मेरी गीबत है यानी उसका होना मेरा न होना है। मैं बहुत कोशिश करता हू, मगर यही हुक्म होता है—या तो तू रह या मै।"

जुनैद बोले, "तुम इस तरह रहो कि जाहिर और बातिम मे वही नजर आये और तुम गुम हो जाओ।" यह वही अनुभव है, जिसे कबीर ने यो गाया

> जब हरि तब मैं नही, जब मैं हू हरि नाहि।
> प्रेम गली अति साकरी ता मे दो न समाहि॥

नूरी ने एक बार अपनी अवस्था का इस प्रकार वर्णन किया, "चालीस वर्ष से मेरा दिल किसी गुनाह की तरफ माइल न हुआ। मेरी यह हालत उस वक्त हुई जब मैंने अल्लाह को पहचाना।" फिर बोले, "मैंने एक नूरी गैब (आकाश) मे चमकता हुआ देखा। उसकी तरफ मैं हमेशा देखा करता था, यहातक कि वह नूर मै हो गया।"

एक बार इन्होंने अल्लाह से हालत दायमी तलब की। गबी आवाज

आई कि सिर्फ दायम के दायमी पर सब्र मुहाल है ।

जाफर नामी सन्त का कहना है, "एक बार मैंने खुद अपने कान से सुना कि प्रार्थना के समय नूरी कह रहे थे, 'ए अल्लाह, तू दोज़खियो पर अजाव (दड) करेगा, हालाकि वे भी तेरे पैदा किये हुए है । तुझे यह भी कुदरत है कि सिर्फ मुझसे ही दोज़ख को पूरा कर दे और तमाम दोजखियो को जन्नत अदा करे ।' और मैंने रात मे सुना कि कोई कहने वाला कह रहा है कि अबुल हसन नूरी से कह दो, हमने उस शफकत के एवज मे, जो तुमने ख़ल्क के साथ की, तुम्हे बख्श दिया ।"

नूरी ज़िक्र करते थे कि "एक बार मैं तवाफ (परिक्रमा) करता था और यह दोहा पढता था, 'ए अल्लाह, मुझे ऐसी हालत और सिफत अता कर जो बदलती ही नही ।' काबा के अन्दर से आवाज आई, 'ए अबुल हसन, तू हमारी बराबरी करना चाहता है ! यह सिफत खास हमारी है कि हमारी सिफत बदलती नही, लेकिन हम बन्दो को बदलनेवाला रखते हैं, ताकि खूबियत (ईश्वरत्व) और उबूदियत (भक्ति-भाव) ज़ाहिर हो ।'

दो बार नूरी ने न बदलनेवाली दायमी हालत मागने का हौसला किया, मगर दोनो बार वही जवाब मिला ।

शिबली ने इनको एक बार ऐसा ध्यान-मग्न पाया कि बदन के रोगटे भी बेहरकत थे । पूछा, "आपने मराकबा का यह कमाल किससे सीखा ?" नूरी बोले—"बिल्ली से, जो एक बार चूहे के बिल के सामने मुझसे ज्यादा साकिन बैठी थी ।"

एक बार यह नहा रहे थे कि चोर आया और कपडे उठा ले गया । मगर हुआ यह कि चोर के हाथ बेकार हो गये । वह इनके कपडे वापिस ले आया । तब इन्होने दुआ की—"ए अल्लाह, उसने मेरे कपड़े वापस कर दिये, तू भी उसके हाथो को अच्छा कर दे ।" कहते हैं कि यह दुआ करते ही चोर के हाथ अच्छे हो गये । वह खुश होकर और दिल मे एक नसीहत लेकर घर चला गया ।

ऐसी ही एक घटना इनके साथ और भी हुई । किसीने इनसे पूछा, "अल्लाह आपके साथ क्या करता है ?" इन्होने एक विचित्र-सा जवाब दिया । बोले, "जब मैं हमाम मे जाता हू तो मेरे कपडो की निगरानी करता

है।" आश्चर्य से लोगो ने पूछा, "यह कैसे ?" बोले, "एक बार मैं गुस्ल के लिए हमाम मे गया। एक शख्स बाहर से मेरे कपडे उठा ले गया। बाहर आकर देखा तो कपडे न थे। मैंने अल्लाह से कपडे मागे। उसी वक्त वह शख्स आया और मेरे कपडे मुझे देकर कष्ट के लिए क्षमा-याचना करने लगा।"

एक बार बगदाद मे आग लगी। बहुत लोग जल गये। एक अमीर के दो गुलाम भी उस आग मे थे। वह अमीर उन्हे बचाना चाहता था। बोला, "जो कोई इन्हे निकाल लायगा, मैं उसे हज़ार दीनार इनाम मे दूगा।" उसी समय नूरी उधर से गुजर रहे थे। बिसमिल्लाह कहकर यह आग के अन्दर गये और उन गुलामो को निकाल लाये। उनपर आग का ज़रा भी असर न हुआ। उस अमीर ने दो हज़ार दीनार इनके सामने रखे, मगर इन्होने नही लिये। बोले, "ये तू ही ले ले। मुझे इसी न लेने की वजह से अल्लाह ने यह अज़मत दी है। मैंने दुनिया को आखिरत से बदला है।"

कुदसिया के निवासियो ने एक आवाज़ सुनी—"हमारा एक दोस्त भयकर पशुओ से भरे एक जगल मे है, उसे आबादी में ले आओ।" लोगो ने तलाश किया तो इन्ही नूरी को एक कब्र के अन्दर बैठे देखा। आग्रह करके लोग इन्हे अपने साथ ले गये। फिर पूछा, "ऐसे मुकाम पर आप क्यो बैठे थे ?" बोले, "मुझे सफर मे कई दिन खाना नही मिला। मैं एक मुकाम पर पहुचा, जहा खजूर का बाग लगा था। मेरा नफ्स खुश हुआ। उसको सज़ा देने के लिए मैंने खजूर का बाग तर्क करके यहा सकूनत इख्तियार की थी।"

एक बार इन्होने अगारा हाथ मे लेकर मसल लिया। तमाम हाथ स्याह हो गये। इतने मे इनकी दासी ज़ैतूना ने दूध-रोटी लाकर इनके सामने रखी। इन्होने बगैर हाथ धोये खाना शुरू किया। खादिमा ने अपने दिल मे कहा कि यह तो बदतमीजी है। इतने मे शाही सिपाहियो ने आकर उसे गिरफ्तार किया और कहा, "तूने जेरजामा चुराया है। तुझे कोतवाल के पास ले जायेंगे।" उन्होंने उसे मारना शुरू किया तो यह बोले, "इसे न मारो, जेरजामा अभी मिल जाता है।" इतने मे एक आदमी ने आकर जेर-

जामा सिपाहियो को दे दिया और वे चले गये । यह बोले, "देख मेरी बदतमीज़ी तेरे काम आई ।" दासी बडी लज्जित हुई ।

इनके जीवन की एक घटना और है । उस घटना से जो शिक्षा इन्होने दी, वह स्मरणीय है । एक बार जब यह बीमार हुए तो जुनैद इन्हे देखने आये । कुछ फूल और मेवा भी, जो साथ लाये थे, इनकी नजर किये ।

जब जुनैद बीमार पडे तो यह अपने शिष्यो को साथ लेकर उनकी पूछताछ को गये । जब उनके पास पहुचे तो मुरीदो से कहा, "जुनैद की बीमारी मे तुम सब लोग हिस्सा ले लो ।" सबने कहा, "ले लिया ।" तुरन्त ही जुनैद स्वस्थ होगये । यह बोले, "बीमार की पूछताछ को इस तरह जाना चाहिए, फूल और मेवे से क्या होता है ?"

एक बार इन्होने देखा कि एक बूढे को लोग कौडो से मार रहे है । वह शान्त रहा, फिर भी लोग उसे कैदखाने मे ले गये । जेल मे ले जाकर उन्होने उससे पूछा, "बावजूद इस जोफ और कमजोरी के तुमने कैसे सब्र किया ?" उसने कहा, "हिम्मत से सब्र होता है, न कि कुव्वत से ।" पूछा, "सब्र किसे कहते है ?" उसने कहा, "बला पर इस तरह खुश होना चाहिए, जैसे दूसरे बला से निजात पाकर खुश होते हैं ।" इनका कहना है, 'मारफत आग के साथ समुद्र तय करने पर हासिल होती है और मारफत के साथ प्रथम और अन्तिम ज्ञान मिलता है ।'

एक बार अबु हमज़ा कुर्ब (सान्निध्य) का बयान कर रहे थे । यह बोले, "कुर्ब का कुर्ब, जिसमे हम लोग है, बाद का बाद है । अद्वितीय मुशाहिदे-ए खूबियत है । जब बन्दा खुदा को पहचान ले और कुदरत मखलूक को समझाने की हासिल हो, उस वक्त नसीहत करनी चाहिए, वरना इस नसीहत की बला शहरो और बदो मे दवा की तरह फैलती है । वज्द के असली बयान की मुमानियत है और वज्द ऐसा शोला है कि सिर मे भडकता है और शौक से जाहिर होता है । साथ ही कहा है—'वज्द लाइलाज दर्द है ।'

यह कहते; सूफियो की रूह कुदरते बशरी से आज़ाद और आफाते नफ्स से साफ और ख्वाहिश से मुबर्रा होती है । सूफी वह है जिसकी कैद मे कोई चीज न हो और वह किसी चीज़ की क़ैद मे न हो । तसव्वुफ न रस्म है न इल्म, अगर रस्म होता तो मुजाहिदे से, और अगर इल्म होता तो तालीम

से हासिल होता। तसव्वुफ है इखलाकी। 'तखलकवा-वा-इखलाक अल्लाह।' अल्लाह के इखलाक की तरह अपना इखलाख बनाओ, यही तसव्वुफ है। दुनिया की दुश्मनी और अल्लाह की दोस्ती का नाम तसव्वुफ है।

जुनैद इनको अपने ज़माने का सबसे बडा सिद्दीक (सत्यनिष्ठ) मानते थे और इनकी ज़िन्दगी का अन्त इसी सिद्क की मिसाल पेश करते हुए हुआ।

कहते है, कोई नाबिना राह मे अल्लाह-अल्लाह कहता हुआ इनको मिला। यह बोले, "अगर अल्लाह को जानता तो जिन्दा क्यो रहता ?" यह कहते हो इनपर बेहोशी तारी हुई और गश खाकर गिर पडे। जब होश मे आये तो दीवाने की तरह बास के जगल की ओर गये। वहा इनके हाथ-पैर बेतरह जख्मी हो गये, पर खून के जो कतरे निकलते उनसे अल्लाह का नक्श बनता। इसी हालत मे लोग इनको घर लाये और कहा, "ला इला इल्लिल्लाह कहिए।" बोले, "उसीके पास जाता हू।"

: २ :

अबू उसमान हैरी

अबू उसमान हैरी अपने समय के प्रसिद्ध सन्तो मे हुए हैं और खुरासान मे, जहा यह रहते थे, इनकी बडी प्रतिष्ठा थी। इनके तीन गुरु थे। प्रथम याहिया बिन मुआज, दूसरे शाह शुजा करमानी और तीसरे अबु हफस हदाद। उस समय के लोग कहते थे, दुनिया मे तीन मर्दे हक है—नेशापुर मे उसमान हैरी, बगदाद मे जुनैद और मुल्क शाम मे अबु अब्दुल्ला। सन्त अब्दुल्ला बिन मोहम्मद राजी का कहना है कि मैंने बहुत-से सन्तो को देखा, मगर उसमान हैरी को सबसे ज्यादा खुदा-शनास (ईश्वर को जानने वाला) पाया। इनके सम्बन्ध मे एक खास बात यह कही जा सकती है कि जहा औरो को कुफ्र के फतवे और सूली के खतरे से दो-चार होना पडा, वहा इनको कोई बुरा न समझता था। सब लोग इनका इज्ज़त ही करते थे।

'होनहार विरबान के होत चीकने पात' की कहावत इनपर चरितार्थ हुई। बचपन मे जब यह मकतव मे पढते थे, तब चार गुलाम इनकी हाजिरी मे पीछे-पीछे चला करते थे। एक तुर्की, दूसरा रूमी, तीसरा हब्शी, चौथा कश्मीरी। एक बार सोने की दवात हाथ मे लिये, जरबफ्त का साफा सिर पर और निहायत कीमती पोशाक पहने यह बड़े जौक से चले जा रहे थे कि राह मे एक जगह पर इन्होने एक गधे को तकलीफ मे पडा देखा। उसकी पीठ ज़ख्मी थी और कौवे मास नोचकर खा रहे थे। गधे मे उनको उडाने की भी ताकत न थी। इन्हे रहम आया, अपनी कवा उसे उढाकर दस्तार से उसे बाध दिया। शायद गधे के दिल से दुआ निकली। इनपर ऐसा जज्बा तारी हुआ कि यह सीधे याहिया के पास जा पहुचे।

वहा इनके दिल को बडी तसल्ली मिली। यह मा-वाप को छोडकर वही रहने लगे और उनके सत्सग से खूब लाभ उठाया। वही इनके पहले गुरु थे और अनुमान है कि गधे की दुआ ने तो असर किया ही होगा, पर उस गरीब बेकस जानवर पर रहम करके अपनी कबा और दस्तार निसार कर देने की प्रेरणा एक धनिक पुत्र के मन मे जो हुई उसमे इन सत का भी जरूर कुछ-न-कुछ हाथ रहा होगा। वहा रहते समय इन्होंने करमान के सत शाह शुजा की तारीफ सुनी और उनसे जाकर मिले। बहुत दिनो तक उनके पास रहकर इन्होने अपनी अन्तर्साधना को खूब मजबूत किया और फिर उन्हीके साथ नेशापुर जाकर अपने गुरु अबु हफस हदाद के दर्शन किये।

अबु हफस हदाद इनको बडे अच्छे लगे। इनकी आन्तरिक इच्छा थी कि कुछ दिन उनके पास रहकर उनके सत्सग से लाभ उठाया जाय। मगर शाह शुजा के स्वाभिमानी स्वभाव से परिचित होने के कारण इन्होंने अपनी इच्छा को उनपर प्रकट करना उचित न समझा। हदाद इनके दिल की बात समझ गये, इसलिए उन्होने खुद ही इनकी ओर इशारा करके शाह शुजा से कहा—अगर आपको नागवार न हो तो इन्हे यही छोड जाइए, मुझे इनसे दिलवस्तगी (अनुराग) है। हदाद कहते थे—याहिया ने इनको आग मे तो डाल दिया, पर उसे भडकानेवाला चाहिए था।

पहुचे हुए हदाद के 'याहिया बिन मुआज ने इनको आग मे डाल दिया'

इन शब्दो से पूर्वे व्यक्त हुए उस अनुमान की कुछ पुष्टि ही होती है कि उसमान को बचपन मे ही इस ओर इतनी तेजी से खीचनेवाले याहिया ही थे। जैसे शिवाजी मे रामदास खेल रहे थे वैसे ही अमीर बालक उसमान के दिल और हाथो की हरकत मे दूर बैठे याहिया की मानसिक प्रेरणा काम कर रही थी। इनकी जिन्दगी मे याहिया का यह बहुत बडा अनुदान था कि इन्हे इस ओर खीच लाये और फिर शाह शुजा के चरणो मे पहुचा दिया। हदाद इनके आखिरी गुरु थे और उनका यह दावा था कि अब इन्हे कमाल हासिल हो गया।

पर इसके लिए इनको बडी साधनाए करनी पडी होगी। एक बार का उल्लेख तो स्वय उसमान ने किया है। वह कहते है कि जब मैं जवान हुआ तो हजरत अबु हफ्स ने अपने पास से मुझे जुदा कर दिया। लेकिन मुझे उनकी सोहबत से इश्क हो गया था। दूर जाकर उनकी महफिल के सामने एक दीवार मे सूराख किया और सूराख से उनको देखा करता। जब उनको मेरा यह हाल मालूम हुआ तो उन्होंने मुझे अपने पास बुला लिया और अपनी लडकी का ब्याह मेरे साथ कर दिया।

उसमान का ही एक और बयान इनके जीवन पर प्रकाश डालता है। यह कहते थे कि लडकपन से ही मेरा दिल अहले जाहिर से भागता था और मुझसे हर शय की हकीकत पूछा करता था। हमेशा से मेरा ख़याल था कि जिस तरीके पर आमलीन चल रहे है उसके अलावा भी कोई और तरीका होगा और इल्मे जाहिर के अलावा इल्मे बातिन भी होगा। आत्म-तुष्टिसूचक इनका अपना एक सस्मरण यो है "चालीस वर्ष से अल्लाह ने मुझे जिस हाल मे रखा है उससे मैं नाखुश नही हू और अल्लाह ने एक हाल से दूसरा हाल भी मेरा नही बदला, इसके लिए मै तहे दिल से उसका मशकूर हू।'"

इनकी साधना, या यो कहो कि इनकी साधनावस्था का एक स्वरूप यह है कि यह कभी किसीसे नाराज़ नही हुए। एक बार का जिक्र है कि एक शख्स ने इनको दावत दी। जब यह उसके मकान पर गये तो उसने कह दिया, 'जाओ, मेरे यहा खाना नही है।' यह लौटे तो फिर उसने पुकारा और यह आ गये। उसने कहा, 'तुम पेटू हो, मैं खाना नही दूगा।' यह चल

दिये तो उसने फिर पुकारा। यह चले आये तो उसने कहा, "पत्थर है, खा लो।" उसने इस तरह तीस बार बुलाया, सख्त-सुस्त कहा और आखिर मे धक्का देकर निकाल दिया। इस वेअदबी से उसका हाथ बेकार हो गया तब उसे होश आया। तोबा की और इनका मुरीद हुआ। तब उसने पूछा, "यह क्या बात थी, मैंने तोस बार गुस्ताखी की और आप नाराज न हुए ?" कितना सुन्दर जवाब था इनका—"इसमे बात ही क्या हुई ? कुत्ता भी तो यही करता है। जब बुलाओ, चला आयगा, मारकर धकेल दो, तो चला जायगा। यह कोई मतबा नही। साहबे मर्तबा होना बहुत दुश्वार है।"

इनकी साधनावस्था मे हुई एक चमकदार घटना यह है। एक बार बाजार मे कुछ मुरीदो (अनुयायियो) के साथ कही जा रहे थे कि किसी शख्स ने ऊपर से राख फेंक दी और वह सब इनके सिर पर गिरी। मुरीदो को अपने पहुचे हुए निष्कलुष गुरु के इस अपमान पर तैश (क्रोध) आया। मगर यह शान्ति से बोले—'शुक्र करना चाहिए कि जिसका सिर आग के लायक था उसपर राख ही पडी।' अबु उमरु का कहना है कि मैंने तोबा इन्हीके हाथ पर की और वर्षों इनकी खिदमत मे रहा और बहुत-कुछ पाया। फिर मेरा दिल गुनाह की तरफ प्रवृत्त हुआ और सोचा कि इन्हे छोडकर कही और जाकर रहू। मेरे दिल का हाल जानकर यह बोले, "ए अबु उसमान, मेरी सोहबत छोडकर दुश्मनो की सोहबत इख्तियार मत करना। वे तो तेरे गुनाह से खुश होगे और अगर गुनाह करना है तो भी यही रह, जिससे कि मैं तेरी बला को अपने ऊपर उठा लू।" यह बात इन्होने कुछ इस तरह कही कि मैं चेत गया, तोबा की, वही रहा और गुनाहो से बचा रहा।

फेरगाना का एक व्यक्ति हज के इरादे से घर से निकला। राह मे नेशापुर ठहरकर इनके दर्शनो को गया और सलाम किया। इन्होने उसके सलाम का जवाब न दिया और कहा, "मा को नाराज़ करके हज करना अच्छा नही।" वह शख्स वापस अपने घर चला गया और जबतक उसकी मा ज़िन्दा रही, उसकी खिदमत करता रहा। मा के बाद इनकी सेवा मे उपस्थित हुआ। इन्होने बहुत दूर जाकर उसका स्वागत किया और बडे सम्मान से अपने साथ लाये। घर लाकर बकरिया चराने का काम उसके

सुपुर्द किया। वह बहुत दिनो तक इनकी कल्याणकारिणी सगति मे रहा और इनके आदर्श चरित्र और सदुपदेशो से आन्तरिक पूर्णता को प्राप्त हुआ।

ईश्वरीय कृपा का दिग्दर्शन करानेवाली एक घटना का उल्लेख इनके जीवन मे आया है। एक नौजवान नगे सिर चिकारा बजाते हुए जा रहा था। इन्हे देखकर उसने टोपी पहन ली और चिकारे को बगल मे छिपाकर सलाम किया। यह उसे अपने साथ लाये और नहला-धुलाकर खिरका पहनाया। फिर दुआ की—"ए अल्लाह, मैंने अपने इख्तियारी काम किया। अब जो तेरे इख्तियार मे है, कर।" फौरन उसे कमाल हासिल हो गया। यह खुद चकित थे। इतने मे एक सत अबु उसमान मगजरली आये। उनमे बोले, "मैं आज आतिशे रश्क (ईर्ष्या की अग्नि) मे अय्यूद के मिस्ल जल रहा हूँ, इसलिए कि जिस कमाल को हासिल करने की तमन्ना मे मेरी इतनी उम्र हुई, वह अल्लाह ने बगैर तमन्ना के इसे दे दिया।"

उस शख्स ने शराब पी रखी थी। जब उसमान उसके लिए दुआ कर रहे थे तब उसके मुह से बू आ रही थी। ऐसा आदमी और इतनी जल्दी इतनी ऊचाई पर जा पहुचे, इसका रहस्य खोलते हुए उसमान ने अपने हमनाम सन्त से शिक्षा के रूप मे कहा—"मेरा मतलब यह है कि तुम भी वाकिफ हो जाओ कि अल्लाह का फज़ल अमल पर मौकूफ (निर्भर) नही, बल्कि दिल से हासिल होता है।"

उसमान की नसीहत का पहला भाग तो ठीक था, मगर यहा तो न दिल का सवाल था, न अमल था। उसके पास न दिल मे इसकी कोई तमन्ना ही थी, न इसके लिए उसने कोई दुआ ही की, फिर भी यह अनहोनी-सी बात हो गई। सच बात तो यह है कि उनकी इच्छा ही पहला नियम है, अपनी इच्छा की पूर्ति का वह कोई-न-कोई निमित्त खोज लेते हैं। सृष्टि का आरम्भ और उसके सचालन का आरोपण भी प्रकृति और पुरुष, जीव और ईश्वर, प्रकृति, पच-तत्त्व और सत्-रज-तम आदि पर करके स्वय अकर्ता, निर्लिप्त, नि सग, निर्गुण, निर्विकार, सत् के बन्धन से भी परे, कुछ अनिवर्चनीय, अज्ञेय से बने रहते है।

अबुल हसन खिरकानी ने कहा था, "तुम मुझे याद करो, ताकि मैं तुम्हारे लिए अल्लाह को याद करू ।" डाकुओ ने जब काफिला घेर लिया तो एक व्यक्ति को खिरकानी के शब्द स्मरण हो आये। उसने उन्हे याद किया। विशेष धनी होने के कारण डाकू उसे लूटने को उत्सुक थे, पर वह अचानक उनकी नजर से ओझल हो गया। सात बार उसे छुआ सही, पर उसे पा न सके। इधर लोग अल्लाह को याद करते रहे और लूटे गये। "हमने अल्लाह को याद किया और लूटे गये और इसने आपको याद किया और बच गया, इसका क्या कारण है ?" उनके इस प्रश्न का खिरकानी ने उत्तर दिया, "तुम अल्लाह को याद करते हो ऊपरी दिल से और मैं उसे सच्चे दिल से याद करता हू।"

इस तरह दुआ और फिर सच्चे दिल की दुआ ये दो दर्जे हुए। पर उसमान की जो अपनी दुआ के नतीजे पर हैरत हुई, उसका हल इतने से नही होता। उनकी हैरत का सबब यह था कि वह दुआ के शब्दो पर ध्यान नही देते। "मैंने अपना इख्तियारी काम काम किया। अब जो तेरे इख्तियार मे हो, कर।" यह उनकी दुआ थी, जो देखने मे सरल, सीधी-सादी और विलकुल निर्दोष-सी लगती है, पर 'अब जो तेरे इख्तियार मे हो, कर' इन शब्दो से जो ध्वनि निकलती है, इधर उनका ध्यान नही ज़ाता। यह तो एक चुनौती-सी हो गई। उनके इख्तियार मे क्या नही ? अबु उसमान की दुआ पर छोटी-मोटी चीज़ देना दुआ का ही नही, इख्तियार का भी अपमान है। इसलिए क्षण मे उसे वह चीज़ मिल गई, जो उम्रभर की तपस्या से उसे न मिलती।

कुछ ऐसी ही बातो के कारण इनका नाम औढर दानी पडा है। पर मौका पाते ही बच निकलेंगे, किसीकी पकड मे यह आनेवाले नही। उदाहरणार्थ इसी घटना के लिए कोई ऐसी कहानी उठ खडी हो सकती है कि वह नौजवान वस्तुत योग-भ्रष्ट था। बहुत अच्छी साधना करने पर भी उससे कही कोई भूल हो गई थी। इसलिए इस जन्म मे वह इस रूप मे आया। हो सकता है कि यह उसमान की अज्ञात चुनौती भरी दुआ का ही असर हो। हो सकता है कि उस व्यक्ति की पूर्वार्जित पुण्य राशि का ही फल हो। पर असली बात यह है कि उसे यह बताना

चाहते थे कि अल्लाह का फज़्ल अमल पर निर्भर नही। न वह अवसर पर निर्भर है, न अमल पर, न दिल पर, वह उनपर और सिर्फ उन्ही पर निर्भर है।

जो लोग तर्क से इन बातो का प्रमाण चाहते हैं, उनसे कहना यह है कि केवल तर्क ही सबकुछ नही है। श्रद्धा की भी उतनी ही आवश्यकता है। तर्क और श्रद्धा का परस्पर सम्बन्ध है। तर्क वह माली है, जो श्रद्धा के चारो ओर उग आनेवाले झाड-झकडो को आसानी से उखाड फेंकता है और उसे निर्जीव और निष्प्राण होने से बचाता है। श्रद्धा की धारा को निर्मल बनाये रखने के लिए तर्क का सरक्षण आवश्यक है। वहा तर्क का काम अब भी है, पर असली काम के लिए चाहिए निर्भ्रान्त श्रद्धा।

इस पुस्तक की घटनाओ को इतिहास की दृष्टि सेदेखना ठीक न होगा। इसमे वर्णित घटनाए कहातक सच है, इसका निर्णय कितना कठिन होगा, यह इससे पता चल जायगा कि हाल मे ही हुई घटनाओ के सम्बन्ध मे भी इतिहास एकत्र्यत नही हो पाता।

घटनाए सही है या कल्पित, पर हैं ये बडी ही उपयोगी और प्रेरणा-प्रद। इनका उपयोग यह है कि घटित हुई हो या न घटित हुई हो, पर घटित हो सकती है। योग की ये सिद्धिया हैं। ये सन्त, जिनका वर्णन इस ग्र थ मे आया है, अपने-अपने मार्ग के अच्छे योगी थे। योग आत्मा और परमात्मा, जीव और ब्रह्म को मिलाने की कला और विद्या है। और इस क्षेत्र मे इन सतो ने बडी ही कष्टसाध्य तपस्याए करके जो अनुभव प्राप्त किये वे उपेक्षणीय नही, वल्कि मननीय और आचरणीय हैं।

इन विचारो पर श्रद्धापूर्वक मनन करने से लाभ हुआ है और आगे भी होगा। विचारपूर्वक अपनी आत्मा के अनुकूल मार्ग चुनकर उसपर आचरण करने से असम्भव नही कि वैसा ही या उससे भी अधिक लाभ हो, जैसा कि इन सतो को हुआ। कौन जाने कि ऐसी आत्माए और भी हो, जिन्हे ऐसी भगवद्-कृपा का साक्षात्कार हुआ हो। इस युवक के अवलम्बन से भगवान् ने जिस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया वह अवैदिक नही, क्योकि वेद स्वय उसको उद्घोषित करता है—

न अय आत्मा प्रवचनेन लभ्यो

न मेधया न वहुना श्रुतेन
यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्
तस्यैष आत्मा विवृणुते तनू स्वाम् ।

आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द ने महात्मा मुशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) को ब्राह्ममुहूर्त मे, वरेली की सडक पर वायु-सेवन के लिए घूमते हुए, ईश्वर-प्राप्ति-सम्वन्धी उनकी जिज्ञासा के उत्तर मे यही मन्त्र सुनाया था ।

ठीक इसी भाव को उसमान हैरी ने एक वार और भी व्यक्त किया । इनका एक शिष्य, जो दस साल मे इनकी सेवा मे था, अक्सर इनसे कहा करता कि मुझे इसरारे इलाही (ब्रह्म-रहस्य) बताइए । एक बार इन्होने जवाब दिया कि इसरारे इलाही से मै खुद नावाकिफ हू । जिसपर अल्लाह फज़ल (कृपा) करे वही उससे वाकिफ होता है । जो शख्स चाहे कि लोग मेरी ताजीम (सम्मान) करें उसके काफ़िर की तरह मरने का खौफ है । अल्लाह की सोहवत हैब्रत (भय) और अदव के साथ करनी चाहिए । सूफी के कौल पर अमल करनेवाले को नूर हासिल होता है, जो अमल नही करता उसे फायदा नही होता ।

इनकी सूक्तिया—सुन्नत्व के अनुसार चलकर नवी की मोहब्बत पैदा करनी चाहिए । खिदमत करके अल्लाह के औलियो की इज्जत करनी चाहिए । अहले इल्लाम के साथ खदा पेशानी (प्रसन्न चित्त) से मिलना चाहिए ओर जाहिलो के लिए दुआए करना लाजमी है । मुतीए सुन्नत को हिकमत और मुतीए नफ्स या नफ्स की ताबेदारो करनेवाले को वदअत (बुराई) हासिल होती है । नफ्स के ऐबो से वह शख्स वाकिफ होता है जो अपने को हेय ओर नाचीज खयाल करे । आलिम बाअमल, मुरीदे बेतमा (लोभविहीन शिष्य), आरिक कामिल (पूर्णज्ञानी) सबसे अच्छा है ।

इनकी एक सूक्ति की भाषा कुछ अटपटी-सी है, पर गीता के स्थितप्रज्ञ की ओर ध्यान जाते ही वह बिल्कुल स्पष्ट हो उठेगी । यह कहते—"जब तक मना (निषेध), अता (विहित), जिल्लत (अपमान), इज्जत (मान) चारो वराबर हासिल न करे, मर्द कामिल नही होता । वराब्रर हासिल न

करने का अर्थ है उसके लिए एक समान हो जाय। गीता ने इस बात को बार-बार कई जगह बडे ही स्पष्ट शब्दो मे कहा है। जो निन्दा, स्तुति और मान-अपमान को एक-सा समझता है, जो न अच्छे की कामना करता है, न बुरे से द्वेष करता है, वही भक्त, वही ज्ञानी, वही योगी और स्थित-प्रज्ञ है।

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्ट स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥
विहाय कामान्य सर्वान् पुमांश्चरति नि स्पृहः।
निर्ममो निरहकार स शान्तिमधिगच्छति ॥

इन दोनो श्लोको मे गीता मे कामना-विहीन होने की, नि'स्पृह बनने की वात कही है और दूमरे श्लोक के अन्तिम पद मे उसका मार्ग बताया है—ममता-रहित होना, अपना कुछ न समझना, दुनिया की चीजे तो क्या, अपना शरीर, अपना मन, बुद्धि, अहकार—यहातक कि अपनी आत्मा को भी दूसरो से पृथक् न समझना। दीवाली के खिलौनो मे से कोई बच्चा घोडा पसन्द करता है, कोई ऊट। पर बडे लोग उनके उत्साह पर मुस्कराते हैं, क्योकि जानते हैं यह सब शक्कर ही है। दुनिया मे अनेक चीजे है, पर ज्ञानी की दृष्टि मे या तो सव पचतत्त्व की वनी हैं या एक ही के अनेक रूप हैं।

जब इस एकत्व पर, समस्वरूपता पर, ध्यान जाता है तव अनेको प्रकार के रूप देखकर मन मे अनायास ही, स्वाभाविक प्रतिक्रिया-स्वरूप, जो अनन्त तरगे उठती है उनका उठना वन्द हो जाता है और मन अपेक्षा-कृत अधिक शान्ति का अनुभव करता है। पर जैसे वाह्य रूप मे विशाल अनन्तता है वैसे ही अन्तर्लोक भी निस्सीम है। करोडो मील तक फैला हुआ, करोडो ही नक्षत्रो से भरा हुआ यह आकाश चिदाकाश मे ओतप्रोत है। जो अन्तर मे है, वही वाहर है, जो बाहर है, वही अन्तर मे है। पर जो अन्तर मे है वह सभी वाहर नही। अन्तर्लोक कही विशाल है। इसलिए वहा भी उपर्युक्त सयम उपादेय है।

उस्मान हैरी का कहना ठीक ही है—तसव्वुफ का सिर खामोशी है, जो कहा ही नही जा सकता, उसका कहना ही क्या? तसव्वुफ आने पर

खामोशी आती ही है, पर तसव्वुफ को लाने मे खामोशी कुछ मदद नही देती। इन चार चीज़ो से कमाल हासिल होता है—फ़ुक्र, ईस्तगना, तवाजय और मुराकिव आखिरत। इनसे खौफ करनेवाले आखिरत मे राहत पायगे। राहत तर्क करके जिन्दगी मे उठनेवाला फारिग दिल पाता है, खौफ और रजा दोनो इसके फज़ल से हासिल होते हैं। सच्चा खौफ दुनिया मे ज़ाहिर और बातिन (आन्तरिक) से परहेज़ करना है।

जाहिर और बातिन से परहेज़ बाह्य और अन्तर्लोक मे सयम से काम लेने ही की ओर सकेत करता है। खौफ मुकरिब है। जो अल्लाह का खौफ हमेशा अपने दिल मे बनाये रखता है, वह उसका खयाल भी दिल मे बनाये रखता है। इससे भाव-सान्निध्य तो हुआ ही। कहा है—साबिर वह है कि जो मुसीबत की बरदाश्त का अभ्यस्त होजाय। आम लोग खाने पर और खास अताए-बातिनी पर शुक्र करते हैं। खुदा पर भरोसा करना तवक्कुल है। जबतक तमाम चीज़ो को अपने से अच्छा न जाने, नफ्स की बुराई मालूम नही हो सकती।

कहा है—हर शख्स को मरतबे के मुआफिक अल्लाह का सरूर (आनन्द) हासिल होता है। खौफ से मोहब्बत पैदा होती है। मुहब्बत सिवा महबूब के सबको भुला देती है। ग फलत से वहशत हासिल होती है। तफवीजे-मुकदमा रजा है और रज़ा अल्लाह का बडा दरवाज़ा है। यह भी अच्छी सूक्ति है—जुद्द। हराम चीजो मे फर्ज मुबाह मे सुन्नत और हलाल मे कुबति है। *सयादत की अलामत यह है कि तू* फरमाबरदारी कर और शकावत की अलामत यह है कि गुनाह किये जाय और बख्शीश की उम्मीद रखे।

और कहा है—नफ्स की, फरमाबरदारी करना गोया कैदखाने मे बसर करना है। सब्र करना ताअत पर, ताकि ताअत फौत न हो, और सब्र करना मौसियत (पाप) से, ताकि नजात हासिल हो। खुदा की इज्जत से शरीफ हो, ताकि तुझे कभी ख्वारी हासिल न हो। सिवा खुदा के किसीसे न डरो और न उम्मीद रखो। खौफ तुझे वासिल बहफ करेगा और नफ्स तुझे खुदा से जुदा करना चाहता है। किसीको हकीर समझना लाइलाज मर्ज़ है। माल और इज्जत तलब करना, कबूले-खल्क

की तमा करना असल अदावत की है। इखलास यह है कि जो जुबान से कहे, दिल से तसदीक करे। खल्क को तर्क करके खालिक की तरफ देखना इखलास है।

अन्त समय आया देखकर इनके पुत्र वेदना के आवेग को रोक न सके और रो पडे। इतना ही नही, उन्होने अपने कपडे भी फाड डाले। वह शान्ति से वोले—मुखालिफत सुन्नत न करो। यह अलामत निफाक की है। अरवी की एक सूक्ति सुनाकर कहा—हज़रत रसूल ने कहा है, हर वर्तन से वही टपकता है जो उसमे होता है। इन्हे अफसोस था कि ऐसे मौके पर इनके पुत्र की आत्मा से जो टपक रहा था वह न रज़ा (प्रभु-निर्भरता) का अश था, न इखलास (शुद्ध ईश्वर-प्रेम) का, वह तो निफाक (ईश्वर-विरोध) की निशानी थी। अपने प्रभावशाली शब्दो से पुत्र को प्रभावित देखकर वह महाशान्ति मे लीन हो गये।

: ३ :

अबु मुहम्मद जाफ़र सादिक़

जाफर सादिक की जीवनी को फरीदउद्दीन अत्तार ने अपनी महत्त्व-पूर्ण पुस्तक 'तज़किर-तुल-औलिया' मे पहला स्थान इस शुभ कामना से प्रेरित होकर दिया है कि इतने वडे बुजुर्ग और पाक तीनत हस्ती के ज़िक्र के साथ पुस्तक प्रारभ करने से वरकत होगी। उनकी यह शुभ कामना फलीभूत भी हुई, क्योकि पुस्तक को पर्याप्त प्रसिद्धि मिली। न जाने कितने लोगो ने उसे पढकर उससे अपने आध्यात्मिक जीवन को ऊचा उठाने की प्रेरणा प्राप्त की होगी। ईश्वर के मार्ग मे अपनेको एकदम फना कर देनेवालो की झाकी इस पुस्तक मे मिलती है।

सिपाही युद्ध-क्षेत्र मे अपनेको होम करके विजय प्राप्त करता है। तव वह जो अपने घर मे घुसे आन्तरिक नैसर्गिक शत्रुओ को जीतने की महत्त्वाकाक्षा लेकर उठा है, जो अपने चारो ओर छाये हुए अनाचार को

विनष्ट करके स्वर्ग-जय करने चला है, जो स्वर्ग की सात्त्विक विलासिता को भी बहुत पीछे छोडकर अपवर्ग या मुक्ति को प्राप्त करने की महत्त्वाकाक्षा अपने दिल में रखता है और जो शरीर, मन और इन्द्रियो को निरस्त करने के साथ ही अपनी अन्तिम सूक्ष्मतम अहता, अपनी आत्म-सत्ता को भी विलीन करके ब्रह्मलीन होने का दावा करता है, वह क्या उत्सर्ग-भावना और शौर्य मे किसी भी योद्धा से कम हो सकता है ?

योद्धा जानता है कि भूल या प्रमाद से उसकी जान को खतरा हो सकता है, इसलिए अपनी सारी शक्ति, अपनी सारी बुद्धि, अपनी सारी सतर्कता और कुशलता लेकर वह अपने दुश्मन के सामने खडा होता है। सच्चा सिपाही सदा अपने जीवन को हथेली पर लिये घूमता है। उसे अपने जीवन से मोह नही होता, न उसे जीवन के सम्बन्ध रखनेवाली किन्ही वस्तुओ से ही ऐसा मोह होता है कि वे उसके मार्ग मे बाधक बनकर खडी हो सकें। वह जान रहते लडने को, तिल-तिल करके कटने को तैयार रहता है। ठीक वैसे ही सत तिल-तिल करके स्वय अपनेको जलाता है। यह अवश्य है कि सिपाही चाहे जिसे प्रेम करे, शर्त यही है कि समय पर सशस्त्र होकर सम्पूर्ण सामर्थ्य-सहित मैदान मे आ डटे। पर सत को तो सदा-सर्वदा, प्रतिक्षण, मैदान मे ही खडा रहना होता है, उसे (भगवान् के सिवा) किसी और से प्रेम करने की फुर्सत ही कहा ?

सच पूछो तो आज सत का जीवन साधारण सिपाही के जीवन से भी अधिक सस्ता-सा हो रहा है। इसीलिए धर्म पर लोगो की श्रद्धा नही, वह एक उपहास की-सी चीज बनकर रह गया है। संत-जीवन यहा कठिन और असम्भव-सा लगता है। यदि कोई ससार से प्रेम करके ईश्वर की ओर चलता है, तो कोई आश्चर्य नही कि ऐसे व्यक्ति को प्राणान्त तक पीडा का-सा अनुभव हो, क्योकि वह ससार मे फसे अपने प्राणो को, मोह-कर्दम मे लिप्त अपने मन को, ससारी चीज़ो से हटाकर ईश्वर की ओर चलना चाहता है। होना तो यह चाहिए कि आनद के स्रोत, अनत माधुर्य के उद्गम और सरस शान्तिमय सजीवन के सागर भगवान् के चरणो की ओर जानेवाले को आनद, माधुर्य, शान्ति अनायास ही प्राप्य हो। पर यह तभी सम्भव है जब ऐसे सस्कार सारे ससार में, प्राय सभी

समाजो में, प्रचलित हों कि यह जीवन एक पवित्र तीर्थ-यात्रा है।

आनद के इस अभियान मे जब आयु ठहरती नही, क्षण-प्रतिक्षण अग्रसर होती चलती है, तब मन मिट्टी के ढेले की तरह घुल-घुलकर गिर पडने के बजाय क्यो न प्रसन्न-सलिला स्रोतस्विनी की भाति कल-कल करता हुआ आगे बढता चले ? बधा हुआ पानी जैसे उतना निर्मल नही होता वैसे ही मोह-मग्न मन भी विशुद्ध नही रहता। बालक जब अपने घर मे होते हैं तो खेल की चीज़ो मे बहुत ज्यादा अनुरक्त होते है, पर वे जब यात्रा मे होते हैं तब पडाव पर ठहरने पर ही खेलते हैं और उनकी अन्तरात्मा मे इतनी सस्कारिता रहती है कि जब चलने का समय आता है तब माता-पिता की आवाज़ सुनते ही सब-कुछ वही छोड-छाडकर आनद से किलकते हुए दौडे चले आते हैं। ठीक इसी तरह मानव-मन ऐसा सस्कारबद्ध होना चाहिए कि अविरल, अविश्रात किन्तु सुन्दर और आनद-मय आध्यात्मिक यात्रा पर चलता चला जाय, सासारिक उलझनो मे न केवल पडे ही नही, बल्कि उनसे आसक्ति-विहीन होता हुआ अपने लक्ष्य पर निरन्तर सानद बढता जाय।

सन्त सादिक को किसी सन्त मित्र ने अच्छी-सी पोशाक पहने देखा तो उपालम्भ देते हुए कहा, फकीरो को ऐसी पोशाक नही पहननी चाहिए। सन्त ने मित्र का हाथ अपनी आस्तीन के अन्दर खीचा। अन्दर इतना सख्त टाट का लिबास था कि उसका हाथ छिल-सा गया। तब प्रेमयुक्त शात स्वर मे उन्होने कहा—ऊपर का लिबास दुनिया के लिए और अन्दर का फकीरी लिबास खुदा के लिए है। मतलब यह कि ससार के सभी व्यव-हार यथोचित रीति से करते हुए मन का अपना आतरिक लिबास वैसा ही फकीराना, मस्ताना, मोहमाया-रहित, परमानन्दमय, ईश्वर-भक्ति से ओत-प्रोत, निर्द्वंद्व, विनिर्मुक्त हो। आकाश मे प्रसन्न-मथर गति से जाते हुए बादल, शरीर को छूकर आनद की सिहरन पैदा करके चला जाने-वाला शीतल पवन, कलकल करता हुआ नदी का जल-प्रवाह, रात्रि की अनन्त प्रशान्तता मे हँसता हुआ प्यारा-प्यारा चाद और उदार दानी की भांति प्रकाश को बिखेरने की उतावली से भरा यह सूर्य सभी मस्त हैं, क्योंकि वे मोह-मग्न नही।

दाऊद ताई नाम के सन्त (जिनका उल्लेख पहले भाग मे कुछ विस्तार से आया है) एक बार सत सादिक के दर्शनो को आये और निवेदन किया कि आप रसूल की सन्तान है, मुझे कुछ उपदेश दीजिए, मेरा दिल स्याह हो गया है। सन्त सादिक ने कहा—"तुम खुद बुजुर्ग और मुत्तकी हो, पवित्र-आत्मा और अनुभवी हो, तुम्हे नसीहत की ज़रूरत नही।" दाऊद ताई बोले, "आप रसूल अल्लाह की औलाद मे से हैं और अल्लाह ने रसूल की औलाद को फजीलत (श्रेष्ठता) बख्शी है।" सादिक ने कहा, "मैं तो इस अमल से डरता हूं कि क़यामत मे कही मेरे बुजुर्ग मेरा हाथ पकडकर यह सवाल न कर बैठे कि क्यो तूने मेरा अनुकरण नही किया, क्यो मेरे उपदेशो के अनुसार अपना आचरण नही बनाया ? निश्चय ही वहा यह न पूछा जायगा कि तुम किसके बेटे हो, वल्कि यह कि तुम्हारे काम कैसे हैं। नस्व नही कस्व, जन्म नही कर्म, पूछा जायगा।' दाऊद बोले, "या अल्लाह ! जब ऐसे बुजुर्ग को इतनी दहशत है तब भला मेरा क्या हाल होगा ?"

इमाम अबु हनीफा से एक वार सन्त जाफर सादिक ने पूछा—अक्लमन्दी की क्या अलामत है ? इमाम ने कहा—जो नेकी और बदी मे तमीज़ करे। सादिक ने कहा—यह तो जानवर भी कर सकते हैं और करते हैं, क्योकि जो उनकी खिदमत करते हैं उनको नही काटते और जो उन्हे कष्ट पहुचाते है, उन्हे काटते हैं। तब अबु हनीफा ने पूछा—आपकी दृष्टि मे अक़्लमद कौन है ? सन्त सादिक बोले—"जो दो खैर और दो शर मे तमीज कर सके। यानी दो खैर (अच्छी) बातो मे से ज्यादा अच्छी वात को जान सके और दो शर (बुरी बातो) मे से ज्यादा बुरी बात कौन-सी है, इसे पहचानकर जो ज़्यादा अच्छी बात हो, उसे ग्रहण करे और जब ऐसा अवसर आये कि दो बुरी बातो मे से एक के बिना गति ही न हो, जैसाकि दुनिया मे अवसर होता है, तब जो ज़्यादा बुरी बात है, उससे दूर रहे और जो बात कम नुकसान पहुचानेवाली है, उसका सहारा लेकर बड़ी बुराई से बचे।"

किसीने सत सादिक से कहा कि फजलो-कमाल जाहिरी और बातिनी (आतरिक) आपमे मौजूद है, मगर आपमे तकब्बुर (अहकार) है। सत

ने जवाव दिया कि "मैं मुतकव्विर (अभिमानी) नही हू; लेकिन मेरा खालिक ऐसा किब्रिया, ऐसा महान् और दयालु है कि जव मैंने ग़रूर और किब्र को छोडा तो उसकी किब्रियाई मेरे किब्र की जगह दाखिल हुई। अपने किब्र पर तकब्बुर करना अच्छा नही है, मगर उसकी किब्रियाई पर किब्र करना दुरुस्त है।" सत सादिक ने यह वात वडी अच्छी कही। इससे उन्हे अपने प्रभु के प्रेम पर जो सात्त्विक अभिमान था उसका प्रेमपूर्ण दिग्दर्शन होता है। पर यह वह स्थल है जहा औपनिपदिक ऋपि की यह प्रसिद्ध चेतावनी स्मरण हो आती है—"क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया।"[1] यह असभव है और अनुचित भी है कि प्रभु की कृपा हो और मन आनद और अभिमान से भर न जाय, पर सदा सतर्क सत ही इतने सावधान और सक्षम हो सकते हैं कि यह ध्यान रखें कि यह सरल स्वाभिमान समय जाते-जाते वरदान की जगह कही अभिशाप न बन जाय।

सत सादिक की एक अच्छी-सी सूक्ति है—अल्लाह अपने वन्दे मे अघेरी रात मे स्याह पत्थर पर चीटी के चलने से ज्यादा पोशीदा है और वह सात्त्विक आनद कव अभिमान का रूप धारण कर लेता है, यह पता लगाना भी सरल नही। इसलिए इस सम्वन्ध मे काफी सतर्कता की आवश्यकता है। स्वाभाविक आनन्द और अभिमान मे अन्तर मालूम करने की एक कसौटी तो यह हो सकती है कि आनन्द तो आत्मतुष्टि अर्थात् अपने मे मस्त रहने तक की ही प्राय. सीमित रहता है, पर जव यह इच्छा होती है कि दूसरे लोग हमारी इस आनन्दमयी अवस्था को जाने, इसके लिए साधुवाद दे, तव समझ लेना चाहिए कि मनोवृत्ति अभिमान के द्वार मे प्रवेश की तैयारी कर रही है। एक सूक्ति यह है—जिस गुनाह से पहले इसान को खौफ हो और वाद मे तोवा करे वह कुर्वे-इलाही (ईश-सान्निध्य) हासिल करता है; और जिस इवादत के शुरू मे 'मैं' और आखिर मे खुद-वीती हो वह खुदा से दूर करती है। उनकी एक और सूक्ति यह है—जो इवादत पर नाज करे वह गुनहगार है और जो गुनाह पर शर्मिन्दा हो वह मुतीअ (तावेदार) है।

1. तलवार की धार पै धावनो है।

लोगों ने पूछा कि दरवेश साबिर (सतुष्ट साधु) और तवंगर शाकिर (कृतज्ञ धनिक) में किसको ज्यादा फजीलत है—इन दो मे कौन ज्यादा अच्छा है? इसपर सत सादिक ने कहा—इन दोनो मे दरवेश साबिर (सतुष्ट साधु) अफज़ल है, क्योकि तवगर शाकिर (कृतज्ञ धनी) ईश्वर की कृपा के लिए कृतज्ञ भले ही हो, पर उसे हमेशा अपने धन का खयाल बना रहता है और सब्र करनेवाले दरवेश का दिल अल्लाह के खयाल मे ही मसरूफ (तल्लीन) रहता है। वह कहते, "मोमिन उसको कहते हैं जो नफ्स-अम्मारा का मुकाबला करे। आरिफ वह है जो अपने मालिक की इताअत मे सरगर्म रहे है। साहवे-करामत वह है जो अपनी जात के लिए नफ्स-अम्मारा से जग करे और जो खुदा के लिए नफ्स-अम्मारा से जग करता है वह खुदा को पाता है। इश्के-इलाही (ईश्वर-भक्ति) न अच्छा है, न बुरा। मुझको राजे-हकीकी (आध्यात्मिक रहस्य) उस वक्त मालूम हुआ जब मैं खुद दीवाना हो गया।"

उन्होने कहा है, "मकबूलो के औसाफ मे से इलहाम है और इलहाम का वेअसल होना, दलीलो से साबित करना अलामत वेदीनो की है।" इस का भाव यह है कि जो ईश्वर की कृपा पर निर्भर करते हैं उनका एक, गुण कहो या लक्षण, यह है कि उनपर इलहाम नाजिर होता है—उनके अतस्तल मे ईश्वरादेश की प्रेरणा होती है, और जो लोग तर्क और बुद्धि के आधार पर दैवी प्रेरणा को निराधार सिद्ध करने का यत्न करते हैं वे वस्तुत: अपने बेदीन होने की ही घोषणा करते है। इस सम्बन्ध मे एक मत श्रद्धा का है और एक मत हो सकता है तर्क का। जो श्रद्धा-विरहित हो, तर्क का आश्रय लेकर चले, उन्हे यदि कोई बेदीन कहे तो इसमे शायद कोई बडा अन्याय न होगा, क्योकि उन्होने दीन का मार्ग स्वीकार ही नही किया—वे चल रहे है केवल बौद्धिक तर्क के आधार पर। पर जिसने अपनेको सम्पूर्णत भगवत्-अर्पण कर दिया है, जिसे दुनिया की किसी और चीज़ से वास्ता ही नही और जिसकी अनन्य प्रेम-भेंट को ईश्वर ने स्वीकार कर लिया, उससे ईश्वर बात न करेंगे तो और किससे करेंगे?

उन्होंने यह भी कहा—इन्सान की नेकवख्ती की यह निशानी है कि उसका दुश्मन अक्लमद हो। उनका कहना था कि पाच शख्सो की सोहबत

से वचना चाहिए—एक, झूठ बोलनेवाला, क्योकि उसकी सोहवत धोखे मे डालती है। दूसरे, अहमक, इसलिए कि वह फायदा पहुचाना चाहे तो भी नुकसान ही होगा। तीसरे, लालची व कंजूस, क्योकि उसकी सगत करने से अच्छा समय नष्ट होता है। चौथा डरपोक, क्योकि वह जरूरत के वक्त जुदा हो जाता है। पाचवा झूठा, क्योकि वह एक निवाले के लालच मे जुदा हो जायगा, बल्कि इससे कम पर भी आफत मे डाल देगा।

उनका कहना था—अल्लाह ने तुम्हारे लिए दुनिया मे ही जन्नत (स्वर्ग) और दोज़ख (नरक) मुहैया कर दिया है। आराम जन्नत और तकलीफ दोज़ख है। बहिश्त (स्वर्ग) उसके लिए है जो अपना काम अल्लाह के सुपुर्द कर दे। दोज़ख उसके लिए है जो अपना काम नफ्स-अम्मारा को सौपे। (भाव यह है कि ईश्वरार्पित बुद्धि स्वर्ग ले जाती है और नफ्स की गुलामी दोज़ख मे डालती है।)

एक वार उन्होने शिक्षा के लिए व्यावहारिक शैली का अनुसरण किया। एक व्यक्ति ने आकर कहा कि मुझे ईश्वर के दर्शन करा दीजिए। सन्त ने कहा—क्या तुम्हें मालूम नही कि मूसा को कहा गया था 'लनतरानी, तू मुझे नही देख सकता ? वह आदमी बोला—जानता हू, लेकिन यह मिल्लते-मुहम्मदी है, जहा एक शख्स कहता है कि मेरे दिल ने मेरे परवरदिगार को देखा और दूसरा कहता है कि मैं ऐसे रब (ईश्वर) की इबादत (उपासना) करूगा जिसको न देखू। उसकी ऐसी दर्पोक्ति सुनकर सन्त ने लोगो से कहा कि इसके हाथ-पैर बाधकर दजला नदी मे डाल दो। जब वह डाला गया तो पानी ने उसको ऊपर उछाल दिया। वह फरियाद करने लगा, उन्होने कुछ ध्यान न दिया बल्कि पानी से कहा कि इसको अन्दर छिपा लो। कई बार वह उछला और डूबा। जब जीवन से निराश हो गया तो कहने लगा—या अल्लाह, फरियाद है ! आखिर सन्त ने लोगो से कहकर उसे बाहर निकलवाया। जब उसके होश दुरुस्त हुए तब उससे पूछा कि क्या तूने अल्लाह को देखा ? वह बोला—जबतक मैं दूसरो को पुकारता रहा तबतक मैं परदे मे रहा, पर सब ओर से निराश होकर जब मैंने अल्लाह से फ़रियाद की तो मेरे दिल मे एक सूराख-सा खुला। सादिक ने कहा—जबतक तूने दूसरो को पुकारा, तू झूठा था,

तो बू भी नही है और अपने ही विचारो में डूबे हुए हैं। ज़ाहिर तो लोग एक-दूसरे के साथ मुहब्बत का इज़हार करते हैं, मगर उनके दिलो मे बिच्छू भरे हुए हैं।

ऊचे दर्जे के सन्तो का जीवन उस ज़माने मे ख़तरे से खाली नही था। ख़लीफा मसूर ने अपने वज़ीर को हुक्म दिया कि सादिक को बुलाओ, मैं उन्हें कत्ल करूगा। वज़ीर ने कहा कि जिसने यादे-इलाही मे दुनिया तर्क करके गोशानशीनी इख्तियार की हो, उसे कत्ल करना ठीक नही। पर खलीफा ने झुझलाकर कहा, "मैं हुक्म देता हू, उसपर अमल करो।" वज़ीर उन्हे बुलाने गया और ख़लीफा ने गुलामो से कहा कि सादिक के आने पर जब मैं ताज सिर से उतारू तो तुम लोग फौरन उसको कत्ल कर देना। पर सन्त सादिक जब दरबार मे आये तो ख़लीफा पर कुछ ऐसा रौब ग़ालिब हुआ कि वह एकदम उनके स्वागत के लिए उठा और उन्हे सिंहासन पर बिठाकर बडी नम्रता से कहने लगा, "कहिये, मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हू?" सन्त ने गम्भीर स्वर मे कहा—"मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नही, मैं सिर्फ यही चाहता हू कि फिर तू कभी मुझे अपने पास न बुलाये।"

सन्त ने ख़लीफा को समझाया कि इस तरह दरबार मे बुलाकर यादे-इलाही मे खलल डालना ठीक नही। ख़लीफा ने सच्चे जी से विश्वास दिलाया कि अब कभी ऐसी गुस्ताखी न होगी और बडे सम्मान से उन्हे विदा किया। मगर लिखा है—ख़लीफा पर कुछ ऐसी हैबतारी (आतक) हुई कि वह बडी देर तक बेहोश पडा रहा, यहातक कि उसके लिए कई मातमी नमाज़े भी पढी गईं। खलीफा की इस विचित्र अवस्था पर स्वभावतः ही गुलामो को बडा आश्चर्य हुआ और जब होश आया तब वज़ीर ने पूछा, "यह क्या माजरा था? आप बेहोश क्यो हो गये?" ख़लीफा ने कहा कि "जिस वक्त सादिक सामने आये तो मैंने देखा कि एक बडा अज़दहा उनके साथ है, जिसने अपने दोनो होठो के बीच चबूतरे को ले लिया था और मुझसे कहता था कि अगर तूने इनके साथ कोई भी गुस्ताखी की तो मैं तुझे मय चबूतरे के निगल जाऊंगा। यही कारण था कि मैंने उनसे विनम्र भाव से क्षमा-याचना की।"

दारी तो और भी ज़ोर पकडती गई। जब लोगो ने फिर आकर शिकायत की, तो लाचार यह फिर उसे समझाने चले। मगर इन्हे बडा आश्चर्य हुआ, जब रास्ते मे गैबी (अदृश्य) आवाज यह कहती हुई सुनाई दी—"मेरे दोस्त के दर पै आज़ार न हो।" जब उस जवान ने इन्हे देखा, तो कहा—"अच्छा, आप फिर आये हैं?" मालिक बोले—"मैं तुम्हे एक बात सुनाने आया हू।" और इन्हे जो गैबी आवाज सुनाई पडी थी, वह उसे सुना दी।

इस बात का उस नौजवान पर कुछ जादू का-सा असर हुआ। वह बोला, "अगर यह बात है, तो मैं अपना सारा माल राहे-खुदा मे लुटाये देता हू।" यह कहकर उसने सचमुच सारा माल-असबाब खैरात करके चुप-चाप जगल की राह ली, कुछ इस तरह कि सिवा खुद मालिक-बिन-दीनार के फिर कभी उसे किसीने नही देखा। मालिक ने उसे एक बार मक्का मे बहुत ही दीन-दुर्बल दशा मे देखा। वह कह रहा था, "अल्लाह ने मुझे अपना दोस्त कहा है। मैं दिलोजान से उसपर फिदा हू। मैं तौबा करता हू, कभी उसकी नाफरमानी (अवज्ञा) न करूगा। हमेशा उसका हुक्म बजाऊगा।"

ऐसे ही शात ईश्वरीय हस्तक्षेप से एक बार मालिक दुर्दशाग्रस्त होने से बच गये। मालिक की जिहाद मे शरीक होने की प्रबल इच्छा थी। पर जब-जब ऐसा अवसर आता, उन्हे बुखार (ज्वर) आ जाता। एक बार उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब जिहाद मे ज़रूर शरीक होऊगा, मगर उनके पुराने दोस्त ने उन्हे फिर रोक लिया। बुखार आ जाने से वह न जा सके। पर इस बार उनके दिल मे गहरी शिकायत उठ खडी हुई। तब उन्होंने स्वप्न देखा, कोई कह रहा है—"ऐ मालिक, अगर तू जिहाद मे जाता तो गिरफ्तार होता और दुश्मन सुअर का गोश्त खिलाकर तुझे बेदीन बनाते। यह तप तो तेरे लिए एक उम्दा तोहफा है।" मालिक जागे तो शुक्र भेजा।

एक बार मालिक का एक दहरिये के साथ शास्त्रार्थ छिड गया। देर तक बहस हुई। दोनो अपनेको सत्य पर स्थित बताते। आखिर लोगो ने यह फैसला किया कि आग में दोनो शख्स हाथ डालें, जिसका

हाथ न जले उसीको हक पर माना जाय । दोनो ही अपने सिद्धान्त पर इतने दृढ थे कि आग मगाई गई। दोनो ने उसमे अपने हाथ डाले, मगर हाथ किसीका न जला, उल्टे आग बुझ गई । लोगो ने कहा—मालूम होता है दोनो ही हक (सत्य) पर है। दु:खित मन से मालिक ने प्रार्थना की—"मैंने सत्रह साल तेरी इबादत की और तूने मुझे दहरिये के बराबर कर दिया !" गैबी आवाज़ आई—"यह तुम्हारे हाथ की बरकत थी कि उसका हाथ भी न जला ।"

उस ज़माने के मुस्लिम फकीर दुनिया को हिकारत (घृणा) की नज़र से देखने पर भी दुनियादारो की नज़रो मे मुअज़्ज़िज़ (प्रतिष्ठित) समझे जाते थे । यहातक कि अमीरज़ादिया और शहज़ादिया उनके साथ विवाह-बधन मे बधने के लिए उत्सुक रहती । ऐसी ही एक फकीर-दोस्त खूबसूरत लडकी ने, जो अपने धनिक पिता की इकलौती बेटी थी, पिता के स्वर्गवास पर विशाल पैतृक धनराशि की स्वामिनी बनने पर सन्त मालिक से शादी करनी चाही और सन्त साबित बनानी के द्वारा पैगाम भेजा कि अगर वह खिदमत कबूल कर ले, तो इबादते-इलाही और दीनी मामलो मे मुझे उनसे बडी मदद मिलेगी ।

कहते हैं, सन्त साबित बनानी, लडकी का यह पैगाम लेकर बाकायदा खुदापरस्त विरक्त सन्त मालिक की खिदमत मे हाज़िर हुए और उस लडकी की दिली आरजू उनसे बयान की । मालिक ने जो उत्तर दिया वैसा उत्तर देनेवाला आज की इस दुनिया मे शायद ढूढने पर भी मुश्किल से मिलेगा । विशाल सम्पत्ति, सुन्दर-सुशील कन्या, ईश्वराराधन और ब्रह्म-ज्ञान की एकान्तिक अभिरुचि, किन्तु शान्त स्वर मे मालिक ने सदेश-वाहक मित्र से कहा, "मैं दुनिया तर्क (छोड) कर चुका हूं । स्त्री भी दुनिया में ही शामिल है । फिर मैं उसे क्योकर कबूल कर सकता हू ? मैं अपने कौल से फिरना नही चाहता ।"

मगर वह बाल-ब्रह्मचारी थे, ऐसा अनुमान करना ठीक न होगा । उनके विवाह का तो उल्लेख नही आया है, मगर उनकी एक लड़की थी, ऐसा उल्लेख उनकी कुछ पृष्ठो की जीवनी मे आता है । सभवत उनका विवाह हुआ था और उसीसे यह लड़की उत्पन्न हुई, पर स्त्री का देहान्त

हो जाने पर अथवा उसके जीवनकाल मे ही उन्हे विरक्ति हुई और उन्होंने दुनिया तर्क करने का निश्चय किया। यह उल्लेख मिलता है कि वह रात को आराम नही करते थे। एक दिन उनकी लडकी ने कहा कि कुछ देर आराम भी कर लिया करें तो अच्छा है। इसपर मालिक ने कहा कि "ऐ बेटी, मैं गजब-इलाही (ईश्वरीय कोप) से डरता हू।" और यह भी कि "मैं डरता हू, ऐसा न हो कि दौलते-सआदत (बुलन्दी का वक्त) आये और मुझे सोता पाये।" ऐसी गहरी तापसिकता के साथ ही उनमे ऊचे दर्जे की विनम्रता भी थी। कहते, "मैं खुदा की दी हुई नेमत खाता हू और इताात (खिदमत) शैतान की करता हू।" एक बार यह भी कहा, "अगर कोई मस्जिद के दरवाज़े पर पुकारे कि सबमे बदतर कौन है तो मुझसे ज्यादा बदतर कोई न होगा।"

फरीदुद्दीन अत्तार ने लिखा है कि जब अब्दुल्ला-बिन-मालिक ने यह बात सुनी तो कहा कि मालिक-बिन-दीनार की श्रेष्ठता इस विनम्रोक्ति से साफ ज़ाहिर है। यह अब्दुल्ला-बिन-मालिक क्या इन्ही सन्त मालिक के पुत्र थे ? नाम से तो ऐसा ही लगता है, पर अत्तार ने ऐसा कोई सकेत नही किया जिससे निश्चयपूर्वक समझा जा सके कि वह उन्ही-के पुत्र थे, हालाकि उनकी एक लडकी होने की घोषणा तो पीछे की है। इसलिए सभवत सत अब्दुल्ला-बिन-मालिक नाम का सादृश्य होते हुए भी मालिक नाम के किसी दूसरे ही सज्जन के पुत्र थे।

मालिक-बिन-दीनार की अपनेको अत्यन्त तुच्छ और अकिंचन समझने की जो वृत्ति थी उसका एक और उदाहरण उनकी जीवनी मे मिलता है। किसी स्त्री ने एक बार नाराज़ होकर उन्हे मक्कार कहा, इसपर वह बोले, "बीस वर्ष से मुझे किसीने मेरा नाम लेकर नही पुकारा, लेकिन शाबाश है तुझे कि तूने खूब जाना कि मैं कौन हू।" आगे उन्होने यह भी कहा, "जबसे मैं मखलूक आदत से वाकिफ हुआ, मुझे इस बात की परवा नही कि कोई मुझे अच्छा कहे या बुरा, क्योकि मैंने हर तारीफ या हिजो (निंदा) करनेवाले को हद से गुज़रनेवाला पाया है।"

बरसो हो जाने पर भी वह खटाई या मिठाई न खाते। उनका यह दस्तूर था कि बाज़ार से सूखी रोटी ले आते और उसीको खाकर गुज़र

अरब एक विशाल रेगिस्तान है। पानी की कमी के कारण वहा हरियाली, अन्न, फलो और फूलो का बाहुल्य नही। अतएव वहा के मानव का भोजन विवशत पशु-जीवन पर आधारित था।

भौगोलिक और प्राकृतिक कारणो से अरब मे सामिषता कुछ अनिवार्य-सी थी, इसीलिए वहा निरामिषता पर इतना जोर नही दिया जाता। इस्लाम अरब से ही दूसरे देशो मे फैला, इसलिए धार्मिक ज्ञान के साथ ही वहा के मुसलमानो के आचार-विचार भी दूसरी जगह पहुचे। परिणामतः सामिषता इस्लामी दुनिया मे व्यापक और बद्धमूल-सी हो गई। फिर कुर्बानी की भावना ने भी इसे पोषण दिया, यद्यपि सच्ची कुर्बानी वही है जो इब्राहीम के द्वारा व्यक्त हुई—अपनी सबसे प्यारी चीज़ को ईश्वरार्पित करना। ईश्वर की बनाई प्रजा को मारकर ईश्वर को प्रसन्न करने की क्रिया सात्त्विक मन को कम ही भायेगी। ससार मे सात्त्विकता और सौम्यता के लिए निरामिषता उपयोगी है।

सन्त मालिक की विनम्र सात्त्विकता ने एक यहूदी को कैसा मोम-सा बना दिया, यह एक मजेदार कहानी है। सन्त ने रहने के लिए एक मकान किराये पर लिया। पडौस मे एक यहूदी था। उसने एक परनाला (मोरी) बनाकर मल-मूत्र उस कमरे के सामने फेकना शुरू किया, जिसमे मालिक रहते थे। शान्त-मन सन्त अपनी जुबान पर शिकायत का एक हर्फ न लाये। जब-जब गन्दगी आकर गिरती, वह उठते और उसे साफ कर डालते। कहते हैं, एक ज़माने तक यह खेल चला। आखिर एक दिन यहूदी आया और अनजान बनकर पूछा—"मेरे परनाले से आपको तकलीफ तो नही होती?" सन्त बोले—"जो गन्दगी गिरती है, उसे मैं झाडकर धो डालता हू।" यहूदी बोला—"आप इतनी तकलीफ क्यो करते हैं? क्यो इतना गम खाते हैं?" सन्त मालिक ने गम्भीर स्वर मे कहा—"अल्लाह का हुक्म है, जो गुस्से को ज़ब्त करते और लोगो का कसूर माफ करते है, उनको सवाब (पुण्य-लाभ) होता है।" यहूदी सन्त के धीरज और उनके द्वारा ईश्वरादेश के अनुपालन को स्वय अपनी आख से एक मुद्दत तक देख चुका था, इसलिए उसने प्रभावित होकर कहा, "निस्सन्देह, आपका दीन बहुत अच्छा है जिसमे दुश्मनो की दी हुई तकलीफ पर सब्र करना अच्छा बताया है।"

अपरिग्रह अर्थात् आवश्यकता से अधिक किसी चीज़ का सग्रह न करना, कम-से-कम चीजो से काम चलाना सभी धर्मों मे श्लाघ्य माना गया है और आधुनिक साम्यवाद भी पुकार-पुकारकर उसीकी घोषणा कर रहा है। पर मानव अपने लोभ पर अबतक विजय न पा सका।

आज दुनिया मे इतने धर्मों के रहते हुए, इतने प्रचारको और इतने वैज्ञानिक प्रसाधनो के होते हुए भी चारो ओर लोभ की आग-सी लगी हुई है। इसका मुख्य कारण है जीवन का एकागीपन। जीवन की दो प्रवृत्तिया हैं—एक बाह्य और दूसरी आन्तरिक। बाह्य वृत्ति तो नैसर्गिक ही है, जितनी भी इन्द्रिया हैं वे बाह्य की ओर ही ले जानेवाली हैं। इसलिए स्वभावत मनुष्य बाह्य की ओर ही अधिकाशत प्रवृत्त होता है। जब सभी घर को छोडकर बाहर सडक पर आ खडे हो, तो भीड का बढना और सघर्ष का उत्पन्न होना कुछ अनिवार्य-सा ही है। अन्तर्मुखी प्रवृत्ति अधिक उत्कृष्ट, अधिक आनन्दमय है, पर उसके लिए साधना की आवश्यकता है। आज का राज्य और समाज ऐसे आयोजन से विमुख है।

कहते हैं, सन्त मालिक फकीर होने से,पहले बहुत मालदार और खूब-सूरत थे और दमिश्क मे रहा करते थे, पर फकीर होने पर एकदम 'हल्के-फुल्के' हो गये। एक बार यह नाव मे सवार हुए। जब नाव मझधार मे पहुची तो मल्लाह ने किराया मागा। यह हलके-फुल्के ठहरे, इनके पास देने को कुछ था नही। मल्लाह ने इन्हे शरारती समझकर खूब मारा, यहा-तक कि ये बेहोश हो गये। जब होश मे आये तब मल्लाह इन्हे बुरा-भला कहने लगा और बोला—"किराया न दोगे तो हम तुम्हे दरिया मे डाल देंगे।" तभी कुछ मछलिया मुह मे दीनार लिये पानी पर दिखाई दी और नाव की ओर आई। सन्त ने एक मछली से दीनार लेकर मल्लाह को दे दिया। यह हाल देखकर मल्लाह बडा चकित और लज्जित हुआ और क्षमा-याचना करते हुए इनके चरणो मे गिर पडा। मालूम होता है कि सन्त को यह अवस्था कुछ असह्य-सी प्रतीत हुई। यह अनाहूत अचानक सम्मान और घोलकर पी जाने के लिए समुत्सुक-सी मुसाफिरों की नजरें इन्हे कुछ परे-शानी मे डालनेवाली-सी लगी। शायद इसीलिए यह किश्ती से दरिया की सतह पर उतर आगे और पानी पर ही चलते हुए नज़रो से गायब हो

कहा, "मैंने तौरेत मे पढा है कि अल्लाह ताला ने फरमाया है, 'ऐ सद्दीको, तुम मेरे जिक्र से दुनिया मे आराम के साथ जिन्दगी बसर करो, क्योकि मेरा जिक्र दुनिया मे एक बडी नियामत है और आखिरत मे इस जिक्र के एवज़ बडा सवाब है।' "

इनका कहना था—"लोगो को इख्तियार है, चाहे मुझे अच्छा कहे या बुरा, मैं कयामत मे उनसे बदला न लूगा।" और यह भी कि, "जिससे कयामत मे कोई फायदा नही, उसकी सोहबत इख्तियार करना फिजूल है। अहले-दुनिया की दोस्ती बाज़ारी फालूदे की तरह है, जो ज़ाहिर मे खुशरग और बातिन मे बदमज़ा होता है। दुनिया से बचो, इसलिए कि इसने आलिमो को अपना गुलाम बनाया है। जो शख्स लोगो से फिजूल बातें ज्यादा और यादे-इलाही कम करता है उसका इल्म थोडा, दिल अधा और उम्र बे-बर्बाद है। मेरे नज़दीक सबसे अच्छा अमल इखलास है, अर्थात् सच्चे दिल से ईश्वर से प्रेम करना और दुनिया मे सच्चाई के साथ रहना।"

कहते—'मैंने यह लिखा देखा है कि अल्लाह ने उम्मते-मुहमदी को दो चीजें ऐसी अता फर्माई हैं जो जिब्राइल और मकाइल को नही दी।" एक यह फर्माया कि, "तुम मुझे याद करो, मैं तुम्हे याद करूगा," और दूसरे यह कि "जवाब दूगा जब तुम मुझे पुकारोगे और तुम्हारी दुआ कबूल करूगा।" और, "अल्लाह ने मूसा पर वही भेजी कि लोहे की नालें और डडा तैयार करो, जमीन पर चलो और नई ज़ाहिर होनेवाली चीज़ो और इब्रतभरी अशिया को तलाश करो और हमारी नेमत और हिकमत को देखो, यहातक कि नाले घिसते-घिसते घिस जाय और असा टूट जाय।"

इनकी तौबा का—विरक्त होने का—किस्सा यो लिखा है . यह दमिश्क की जामा मस्जिद मे जाकर खूब नमाज़े पढते। अमीर तो थे ही, अमीरो-जैसी ख्वाहिश दिल मे हुई कि कुछ ऐसा काम करना चाहिए कि लोग मुझे इस मस्जिद का मुतवल्ली (व्यवस्थापक) बना दें। बस, इन्होने नमाज़ो पर नमाज़ें पढना शुरू किया। जो आता, इन्हे नमाज़ पढते देखता। इस प्रकार पूरा एक साल बीत गया। एक दिन मस्जिद से बाहर

निकले तो आवाज़ आई—"ए मालिक, तू तौबा क्यो नही करता ?" इन्हें अपनी फरेबी इबादत पर अफसोस हुआ। अपने दिल से मक्कारी निकाल दी और उस रात सरल भाव से प्रेमपूर्वक आराधना करते रहे।

दूसरे दिन सुबह जब यह नमाज़ से फ़ारिग हुए, तो देखा कि बहुत-से आदमी बाअदब बाहर खडे हैं। वे लोग देर से इस इतज़ार मे खडे थे कि नमाज़ पूरी हो तो अपनी बात कहे। मस्जिद का इन्तज़ाम ठीक न था। ऐसा अच्छा नमाजी कही ढूढने से भी न मिलेगा। तब क्यो न मस्जिद का सारा इन्तज़ाम इन्ही बुज़ुर्ग को सौंप दिया जाय ? यही मशविरा करके वे आये थे और उन्होने सन्त मालिक से मुतवल्ली बनने की दरख़ास्त की। चकित-चित्त मालिक सोच रहे थे कि पूरे एक साल तक जिसके लिए रियाकारी से भरी नमाज पढी और कुछ न हुआ, उसीकी पेशकश एक रात की सिद्‌कदिली की नमाज़ के बाद हो रही है। इन्होनें निश्चय किया कि अब मैं इसे कबूल न करूगा और मस्जिद से बाहर चले आये।

यही से इनको विरक्ति हुई और यही इन्हे सत्य की ज्योति के प्रथम दर्शन हुए और प्रेम का रस लग जाने से बडी तल्लीनता से ईश्वराराधन मे मग्न हो गये और समय पाकर, जैसाकि पीछे देखा जा चुका है, एक बहुत ही ऊचे दर्जे के सत हुए।

अन्तिम समय किसीने इनसे वसीयत चाही तो बोले, "तकदीरे-इलाही पर राजी रह, वही तेरे लिए ऐसे सामान मुहैया करता है, जो अजीब आख़िरत से बचानेवाले होते हैं।" देहान्त के पश्चात् किसीने स्वप्न मे इन्हे देखा और पूछा कि कैसी गुज़री ? तो जवाब दिया कि "मैं गुनहगार था, मगर अल्लाह ने उस नेकगुमानी की वजह से बख़्श दिया, जो मैं अल्लाह के साथ रखता था।"

एक और बुजुर्ग ने स्वप्न देखा कि फरिश्ते मालिक-बिन-दीनार और मुहम्मद वासय को जन्नत की तरफ ले जा रहे है। उन्होने दिल मे खयाल किया कि देखे इन दोनो मे से पहले जन्नत मे किसको दाखिल किया जाता है। उन्होने देखा कि मालिक-बिन-दीनार पहले जन्नत मे दाख़िल हुए और उनके पश्चात् मुहम्मद वासय। वह बुजुर्ग बोले, "मुहम्मद वासय ख़ालिक

मे ज़्यादा आलिम और कामिल थे।" फरिश्तो ने जवाब दिया, "तुम सच कहते हो, लेकिन दुनिया मे मुहम्मद वासय के पास पहनने को दो लिबास थे और मालिक के पास सिर्फ एक था। इस सब्र की अधिकता के कारण मालिक जन्नत मे पहले दाखिल किये गए।"

जीवनी के अन्त मे सन्त का स्वर्ग-प्रवेश अथवा सन्त विशेप से सबधित स्वर्गस्थ, इसी दृश्य की हल्की-सी झलक अत्तार के महान् ग्रन्थ की एक अनिवार्य-सी विशेपता है। विज्ञान के दूरगामी व्यापक उत्कर्मों को अभी तक स्वर्ग या नरक-जैसी कोई चीज़ मिली नही, तब क्या यह सब केवल अवहेलनीय मिथ्यात्व ही है? कुछ लोगो की मान्यता तो ऐसी है कि स्वर्ग और नरक तो इस दुनिया मे ही हैं। सुख का नाम स्वर्ग है और दु ख का नाम है नरक। स्मरण रहे कि कही ऐसा वर्णन नही कि कोई साक्षात् स्वर्ग देखकर आया हो। स्वर्ग के जो भी वर्णन है, वे स्वप्न तक ही सीमित हैं। सत्य के अन्वेपी को इस प्रश्न का उत्तर आध्यात्मिक मनो-विज्ञान ही सतोषजनक रीति से दे सकता है।

: ५ :

मुहम्मद वासय

सन्त मुहम्मद वासय की एक सूक्ति कुछ विचित्र, असाधारण और अनूठी-सी लगी। इसलिए नही कि उसमे कोई बहुत बडी ऊचाई है, बल्कि इसलिए कि वह बहुत ही सरल और स्वाभाविक है। उस सूक्ति मे निहित सत्य की सरलता और स्वाभाविकता ने ही सच पूछो तो सन्तो की दृष्टि मे उन्हे प्राय उपेक्षणीय और अवहेलनीय-सा बनाया।

उनकी वह सूक्ति यह है— 'अल्लाह को सज़ावार है कि ऐसे शख्स को साहबे-नसीब और मुअज्जिज करे जो सिवा अल्लाह के दूसरे की तरफ मुतवज्जह न होता हो और खुदा पर किसीको इख्तियार न करता हो।" कैसी सीधी और सब की समझ मे आने लायक बात है। यह भली

और सीधी-सी वात खुदा के मसीहो की समझ मे आ गई होती और दुनिया को तरतीब देनेवाले फरिश्तो को इसी सद्मन्त्र के अनुसार व्यवहार करने की प्रेरणा दी गई होती, तो यह दुनिया खुदा के लिए गाली-सी बनकर खडी हुई न दीखती।

दुनिया के आध्यात्मिक पहलवानो का दिल तो प्रेम और प्रशसा से प्रेरित होकर उछलता है बाकेपन से भरी हुई ऐमी दर्पोक्तियो पर कि जहा सन्त प्रेम की मस्ती मे आकर यह कहते सुने जाते हैं कि बलाओ के लिए ऐसा उत्सुक रहता हू जैमे कि लोगो को बादशाहत की चाह होती है। कितने शानदार ढग से सन्त ने अपनी अनन्यता की अभिव्यक्ति हृदय के रक्त से अभिषिक्त इस रगीन उच्छ्वास मे की है, और कौन है वह खुशामद-पसन्द बादशाह, जिसे ऐसी मीठी अफीम रास न कर ले ? पर परिणाम !

परिणाम यह हुआ कि यह सिद्धात बन गया, भक्त वही है जो भूखा रहे, नगा रहे, हठपूर्वक कडाके की बर्फीली सर्दी और चिलचिलाती धूप सहन करे, चाहे प्राकृतिक प्रभावो के कारण उसका स्वास्थ्य और मस्तिष्क विकृत ही क्यो न हो जाय। इस फिलसुफे की तह मे तर्क यह है कि दुनिया खराब है। इसलिए दुनिया की सभी चीज़ो से भक्त को भूत की तरह भागना चाहिए। इस अकाट्य-से समझे जानेवाले तथ्य को वज़न देने के लिए स्वर्ग और नरक की कल्पना की सृष्टि हुई और उसने कल की आशा पर आज की चीजो का त्याग करने मे बहुतो को बडी मदद दी।

पर यह दुनिया इतनी बुरी क्यो ? और यदि बुरी है तो अच्छी क्यो न बने ? किसी अच्छे चित्रकार का चित्र, किसी ऊचे शिल्पकार की प्रस्तर-मूर्ति, किसी कुशल कवि की कविता, किसी सिद्ध सगीतज्ञ की रागिनी यदि ठीक न उतरे तो यह उसके लिए लज्जा का कारण है। तब वह जो कल्प-कल्पात से सृष्टि-रचना का अभ्यस्त है, जिससे अच्छा कोई निर्माता हो सकता ही नही, उसकी बनाई हुई दुनिया इतनी बुरी क्यो कि उसके सपर्क मे आते ही किसी भले आदमी को छूत लग जाय, जिससे एकदम दूर रहने मे ही कल्याण माना जाय ? एक बात और, इस बात को भी क्यो भुलाया कि भले हटे नही कि दुनिया बुरो के पल्ले बंधी ?

दुनिया को शैतान की रम्ज़गाह न बनाकर यदि उसे भगवान् का लीला-निकेतन बनाना है, तो उसकी बनावट मे आवश्यक परिवर्तन करके, तमोगुण की बहुलता को हटाकर उसे शात, सतोगुण-प्रधान-स्वरूप देकर (जैसा कि सन्त मुहम्मद वासय ने सुझाया है और जैसा कि अफलातून के दार्शनिक राज्य के प्रस्ताव से व्यक्त होता है) ससार का सचालन ईश्वर-भक्त, सच्चरित्र, नि.स्पृह, सुबुद्ध और कल्याणचेता सन्तो के हाथो मे ही देना चाहिए और ससार से प्रेम करना ईश्वर से प्रेम करने का ही एक प्रकार होना चाहिए।

सन्त मुहम्मद वासय इतने बडे सन्तोषी थे कि सूखी रोटी पानी मे भिगोकर खाया करते और कहा करते थे कि सूखी रोटी पर सन्तोष करनेवाला दुनिया का मोहताज नही होता। प्रार्थना मे वह कहते—"ऐ अल्लाह ! तू मुझको अपने दोस्तो की तरह से भूखा और नगा रखता है, लेकिन मैं नही जानता कि यह मर्तबा (दर्जा) तूने मुझे क्यो अता किया है।" कभी ऐसा भी होता कि जब बहुत भूखे होते तो सन्त हसन बस्लो के घर जाकर वहा जो कुछ मिलता, खा लेते।

वह कहते थे—"बहुत अच्छा है वह शख्स जो सुबह भूखा उठे और रात को भूखा सो रहे, पर भूख की हालत मे भी यादे-इलाही फरामोश न करे।" यादे-इलाही फरामोश न करे (भगवत-स्मरण न भूले), यह तो निहायत मौजू है, पर यादे-इलाही फरामोश नही होनी चाहिए, न भूख की हालत मे और न सपन्न स्थिति मे। खाना ही क्यो, दुनिया की सभी चीजे ऐसी क्यो न हो जो अनायास ही हरिभजन और भगवद्भक्ति की ओर ले जाय, जैसे गडरिये शाम को अपनी भेडो को घर की ओर ले जाते हैं ?

किसी व्यक्ति ने सन्त से नसीहत चाही तो कहा—"तू दुनिया मे लालच को छोड, जुह्द (सयम) इख्तियार कर और तमाम मखलूक को मोहताज जान, यानी किसीसे अपनी हाजत बयान न कर। अगर तू इन बातो की पाबदी करे तो नि.स्पृह हो जायगा, और यह वसीयत ऐसी है कि इसपर अमल करनेवाला दीन और दुनिया दोनो की बादशाहत पाता है।"

एक दिन सन्त मालिक-बिन-दीनार से बोले कि "दिरम और दीनार की अपेक्षा जुबान पर निगाह रखना ज्यादा मुश्किल है।"

एक बार कातिबा-बिन-मुस्लिम मिलने आये, तो इन्हे ऊनी कपड़ो मे देखकर पूछा, "इस वक्त ऊन क्यो पहन रखा है?" पहले इन्होंने कुछ जवाब न दिया, पर जब फिर यही सवाल किया गया तो बोले—"मैं पवित्रता का वर्णन करना चाहता हू, लेकिन इसलिए नही करता कि कही उसमे तारीफ या दरवेशी की कैफियत बयान करने की वजह से यह न समझा जाय कि मैं अल्लाह की शिकायत करता हू और यह उनकी नाराज़गी का बाइस हो।"

लिखा है कि एक बार उन्होंने अपने बेटे को बहुत ही हर्षोन्मत्त घूमते देखा तो बोले—"भला यह तो बता, तुझे किस अमर पर नाज़ है जो तू इस कदर इतरा रहा है? सुन, तेरी मा वह है जिसे मैंने दो सौ दिरम मे ख़रीदा और तेरा बाप (अर्थात् स्वय मुहम्मद वासय) बन्दगाने-इलाही मे सबसे बदतर है, फिर तुझे किस बात का फख्र है?" मालूम नही, बेटे पर क्या बीती, पर अपनेको गाली देकर दूसरे को डाटने का यह तरीका कम ही देखने को मिलता है।

सन्तो की-सी विनम्रता और कोरी विनम्रता ही नही, बल्कि खौफे-खुदा मे उनके दिल की जो हालत थी उसका नक्शा-सा खीचकर दिखा देनेवाली उनकी वह सूक्ति है, जिसकी अभिव्यक्ति किसीके प्रश्न पूछने पर उन्होंने की थी। सत से किसीने पूछा कि आप किस तरह हैं, तो बोले—"वह क्या बताये, जिसकी उम्र कम और गुनाह ज्यादा होते जाते है।"

लोगो ने पूछा, 'आप खुदा को पहचानते हैं?" तो थोडी देर ख़ामोश रहकर बोले—"जिसने ख़ुदा को पहचाना उसका कलाम गुम हुआ और हैरत (विस्मय) उसको लाहक हुई।" वह कहते थे कि "खादिक (सत्यवादी) उस वक्त तक पूरा ख़ादिक नही जबतक कि खौफ और रज़ा (आशा) उसके लिए बराबर न हो जाय।"

सन्त वासय के बारे मे बताया गया है कि वह अपने मित्र मालिक-बिन-दीनार के साथ ही स्वर्ग मे दाखिल हुए। मालिक पहले पहुचे, क्योंकि उन्होंने अपने लिए सिर्फ एक ही लिबास रखा था, वासय उनके पीछे पहुचे, क्योंकि उनके पास इल्म ज्यादा मगर लिबास दो थे।

: ६ :

अबु हाजम मक्की

अबु हाजम की जीवनी को लगभग डेढ पृष्ठ मे ही अत्तार ने अपनी पुस्तक मे समाप्त कर दिया है। निश्चय ही यह जीवनी 'तजकिरउल-औलिया' मे सकलित की गई जीवनियो मे सबसे छोटी तो नही, क्योकि सबसे छोटी जीवनी अबु उम्र इब्राहीम जजाजी की है, जो केवल आठ पंक्तियो मे पूरी कर दी गई है, पर यह छोटी जीवनियो मे से एक है और अत्तार का कहना है कि सत हाजम का वर्णन इतिहास की किताबो मे सविस्तर आया है, इस पुस्तक मे तो केवल प्रसादस्वरूप ही उनकी जीवनी की कुछ बातो का उल्लेख है।

अबु हाजम के बारे मे लिखा है कि वह निष्कपट और सयमी थे। मुजाहिदे (तपस्या) और मुशाहिदे (दर्शन) में वह बेमिसाल थे। बहुत से शेखों और दरवेशो के वह गुरु थे। कलाम उनका हरदिल-अजीज (सर्वप्रिय) था और आयु उनकी काफी लबी हुई। अबु उस्मान मक्की ने उनकी बहुत तारीफ की है और कहते हैं कि बहुत-से सहाबा के उन्हे दर्शन हुए, जिनमे से उम्र बिन-मालिक और अबु हरीरा का नाम विशेष रूप से अत्तार ने उल्लेखनीय समझा। सहाबा से जीवनी-लेखक का अभिप्राय उन लोगो से है जो रसूल के प्रेमी और साथी थे।

हशाम बिन अब्दुल मालिक ने एक बार उनसे पूछा कि "सल्तनत मे कौन-सी वह चीज है जिसकी वजह से नजात (मुक्ति) हासिल हो?" इसके उत्तर मे सत अबु हाजम ने कहा—'हलाल मुकाम से दीनार हासिल करना और हलाल काम मे सर्फ करना।" हशाम ने कहा—"यह कौन कर सकता है?" तो बोले—"जो बहिश्त का ख्वाहा (इच्छुक) दोजख (नरक) से तरसा (भयभीत) और रजाए-इलाही (ईश्वरेच्छा) का तालिब हो, वह कर सकता है।" शुद्ध कमाई और शुद्ध जीवन पर उन्होने

के बाहुल्य मे नरक मे होड करने की इच्छा रखनेवाली यह दुनिया अपने इस भीषण दु स्वप्न से जाग उठे और नरक बनने की प्रवृत्ति छोडकर, हो सके तो स्वर्ग से भी अच्छी बने ? कुछ सत ऐमा प्रयोग करके देखें, अपनी तपस्या इसमे लगायें । किसी मुहल्ले या शहर से भी इस शुभकामना का अभियान प्रारभ किया जा सकता है ।

बात जब चल ही पडी है तो यह कह देने मे कोई आपत्ति न होनी चाहिए कि यह असम्भव नही कि किसी एक ही व्यक्ति की शुभकामना से संसार मे यह स्वर्गीय परिवर्तन आ सके । यदि वह कामना भगवान् की मंगलमयी शुभेच्छा से मेल खा जाय तब तो किसी कठिनाई की कल्पना करना भी कठिन है, और सम्भवत होगा भी किसी दिन ऐसा ही कि सीधे-सादे सत के दिल से दुआ निकलकर ईश्वर की इच्छा से टकरायेगी और उसकी कृपा से वर्षा हो उठेगी । पर इसके लिए अच्छा यह है कि सतो के अतिरिक्त और लोग भी इस शुभकामना-यज्ञ मे सम्मिलित हो—खासकर निर्दोप बच्चे ।

और यह ठीक ही है । आखिर यह मन है और किस काम के लिए ? सभी जानते हैं कि मन एक ऐमा यत्र है जो रात-दिन काम करता रहता है; कभी खामोश नही बैठता । तब प्रश्न यह है, वह करता क्या है ? वह सोचता क्या है ? उसमे जो विचार उठते है वे कैसे हैं ? वे अच्छे हैं या बुरे ? कल्याणकर है या अकल्याणकार ? यदि मन मे अकल्याणकारी विचार उठते हैं तो वे अकल्याण ही करेगे, इसलिए व्यक्ति को और समष्टि को अच्छा करना है तो बस एक काम करो—यह देखो कि मन मे जो विचार उठें, सदा अच्छे ही हो ।

अपने मन मे जो विचार उठे अच्छे हो, यह सम्भव कैसे हो ? और फिर दूसरे के मन मे जो विचार उठे वे भी अच्छे हो, इसके लिए भला कोई क्या कर सकता है ? समाज मे जो बहुत-सी व्यर्थ की पोथिया पढ़ने-पढ़ाने की प्रथा प्रचलित है, वह बद होनी चाहिए । धर्म के जो आधारभूत सिद्धात हैं, और जो प्राय सभीकी दृष्टि से एक-से सम्मान्य हैं, सभीकी नस-नस में व्याप्त हैं, वे लोरियो और जन्मघुट्टी के साथ ही मन में और लहू मे प्रविष्ट हो । माता-पिता बच्चे के शरीर का जितना ध्यान रखते हैं

मेरे वास्ते है मैं उससे किनना ही भागू मगर वह मेरे पास जरूर आयेगी,; और जो चीज़ मेरे वास्ते नही है, मैं उसके लिए कितना ही यत्न क्यों न करू फिर भी प्राप्त नही होगी । यह नियतिवाद का सिद्धान्त है जिसे प्राय सभी जानते हैं, पर इससे मन को जो शाति मिलनी चाहिए, वह कम ही लोगो को मिलती दीखती है । ज्ञानी पुरुषार्थवाद को इसका विरोध करने की आवश्यकता नही, क्योकि नियति मे पुरुषार्थ स्वय ही निहित है ।

नियति पुरुपार्थ का निपेध नही करती । पुरुपार्थ निश्चय ही अच्छी चीज़ है । उसके विना कोई काम हो भी तो नही सकता । वस्तुत. नियति और पुरुपार्थ भगवान् के दो हाथ है । ये भगवान् के हाथ मे दो औज़ार है, जिनके द्वारा वह ससार का संचालन कर रहे हैं । नियति मे निवृत्ति की भावना प्रधान है और पुरुषार्थ रजोगुण-प्रधान प्रवृत्ति का परिस्फुरण है । यो तो निवृत्ति भी गहरी प्रवृत्ति है, वस अतर इतना है कि वह अन्दर की ओर जाती है । नियति पुरुषार्थ को कर्तव्य-कर्म से नही रोकती । फलैपणा-त्याग की वात कहकर व्यर्थता और अशाति से उसे बचाती है ।

सत अवु हाज़म की एक भली-सी सूक्ति यह है—"अगर मैं दुआ से महरूम रहूं तो मुझपर कवूल न होने की दुश्वारी से ज्यादा दुश्वार है । दुआ करना आवश्यक है, इसकी इतनी परवा नही कि वह कबूल होती है या नही ।" पीछे ससार को अच्छा बनाने के सवध मे जो विस्तार से विचार आया है उसके साथ सत की इस सूक्ति का मेल खूब बैठता है । वालक-वृद्ध, युवक और युवती, सभी नर-नारी दुआ करने मे लग जाय, इसकी परवा न करे कि फल मिलता है या नही । इसका एक फल यह होगा कि दुआ की मेंहदी से लोगो के मन रगकर अच्छे हो जायगे ।

मानव-मानस व्यापक स्तर पर सच्चे जी से दुआ करने मे लग जाय तो समय पर उसका समुचित प्रतिफल तो होगा ही, क्योकि इतने विशाल जनसमूह के हृदय से निकली हुई शुभकामना भगवान् को द्रवीभूत किये विना नही रह सकती । पर उसका तात्कालिक, अनिवार्य, अत्यन्त कल्याण-कारी और सुमधुर प्रतिफल यह होगा कि लोक-कल्याण की कामना करते-करते, दुआ की मेंहदी वाटते-वाटते लोगो के मन अपने-आप अनायास ही अच्छे हो जायगे, क्योकि सतत कल्याण-कामना से भावित होते-होते वे

की घोषणा सत अबु हाज़म ने एक छोटे-से वाक्य मे बडी खूबसूरती से की है। किसीने उनसे पूछा—"आपका क्या हाल है ?" बोले—"खुदा की खुशनूदी और खल्क से वेनियाजी।" भाव यह है कि मैं दुनिया से वेपरवा होकर खुदा की खु्शनूदी (प्रसन्नता) का खयाल रखता हू।

अत्तार ने इस सुदर सूक्ति की टीका करते हुए कहा है कि यह ज़रूरी है कि खुदा से राजी होनेवाले खल्क से बेनियाज़ होगे। इस सबध मे एक घटना का भी उल्लेख किया है, जिससे प्रकट होता है कि दुनिया की चीज़ो की तो बात ही क्या, अपने शरीर के प्रति भी वे कितने विरक्त और उदासीन थे। एक बार कही जा रहे थे। मार्ग मे गोश्त की दूकान आई। नज़र गई तो दूकानदार बोला—बहुत उम्दा गोश्त है, ले लीजिए। बोले—मेरे पास दाम नही है। वह बोला—मैं आपको मुह्लत देता हू, जब आपके पास हो तब दे दीजिए। सत ने रहस्यभरी भाषा मे कहा—मैं पहले अपने नफ्स को मोहलत के लिए राज़ी कर लू। दूकान-दार बोला—इसी वजह से आप इतने कमज़ोर हो गये है। अत पर दृष्टि रखने वाले सत अबु हाज़म ने शान्त स्वर मे उतर दिया—क़ब्र के कीडे-मकोडो के वास्ते यही काफी है। अपने शरीर के प्रति उदासीन होते हुए भी सासारिक कर्त्तव्यो के प्रति वह कितने जागरूक थे, इसका उदाहरण भी अत्तार ने इसी स्थल पर दिया है। निम्नलिखित घटना बगदाद मे सत के निवासस्थल पर ही घटित हुई।

एक बुज़ुर्ग हज को जाते हुए बगदाद पहुचे, तो सत अबु हाज़म से मिलने आये। सत सो रहे थे। वह थोडी देर खडे रहे। जब आख खुली, अबु हाजम ने प्रणाम करके कहा—"मैंने अभी-अभी एक स्वप्न देखा है। रसूल ने तुम्हें पैगाम दिया है, वह यह है कि तुम अपनी मा के हकूक की निगहदाश्त करो। तुम्हारे लिए हज करने से उनके हकूक की निगहदाश्त, उनकी सेवा, ज्यादा अच्छी है।" उन बुजुर्ग को यह बात ठीक जची। वह हज का इरादा छोडकर वापस घर लौट गये और वडे प्रेम से माता की सेवा मे लग गये।

हैं और मैं वह काम करता हूं, जो अल्लाह को पसद है।" इसी तरह हबीब ने कहा—"आप कागज स्याह करते हैं और मैं दिल सफेद करता हूं।" ये दोनो घटनाएं इतनी ज्यादा एक-सी है कि किसीके भी मन मे यह कल्पना उठ सकती है कि किसी एक से सबद्ध घटनाए लोकमत ने दूसरे के साथ भी कही-न-कही जोड दी हैं।

उनके जीवन की वह प्रमुख घटना रोमाचकारी है जो उनकी विरक्ति का कारण हुई। किसी तपोनिष्ठ सद्वृत्तिपूर्ण सुदर स्त्री को उन्होने देखा तो मन मोहित हो गया और वासना जाग उठी। उस सती स्त्री को जब यह सूचना भेजी गई तो उसने अपनी दासी से यह पुछवाया कि मेरे किस अग पर आप मोहित हुए है? जवाब मिला—आखो पर। उस स्त्री ने अपनी आखें निकालकर दासी के हाथ भेज दी। साथ ही, सत अतबा को यह सीधी-सी मार्मिक बात भी कहला भेजी कि जो चीज आपको पसद है, वह अपने पास ही रखिए।

इस घटना ने मोहबद्ध अतबा का मोह भग किया। उन्हे अल्लाह का खयाल आया। दिल खौफ से भर गया। वही तौबा की, अर्थात् क्षमा मागी और निश्चय किया कि ऐसी भूल, ऐसी मूर्खता फिर कभी न होगी।

हसन बसरी अपने जमाने के प्रसिद्ध सत थे। यह उनकी सेवा मे पहुचे। उनसे उपदेश ग्रहण करके इन्होंने अपने जीवन को बडे सवेग से आध्यात्मिक साधना मे लगाया। चोट खाया हुआ दिल जो संभला तो ऐसा सभला कि गुरु से भी एक कदम आगे बढ गया।

शायद इन्होने सोचा कि भोजन का प्रभाव मन पर पडता है, इसलिए हर किसीके घर का भोजन न करके अपनी कमाई से पैदा किया हुआ शुद्ध अन्न ही ग्रहण करना चाहिए, ताकि साधना मे किसी प्रकार का व्याघात न आये और तौबा टूटे नही। सभवत इसीलिए यह खुद खेती करते। स्वय जौ बोते और जब पक जाते तो उन्हे काटकर उनका आटा पीसकर पानी मे भिगो देते और उसकी टिकिया बनाकर धूप में सुखा लेते और रोज एक टिकिया खाकर भजन मे लीन रहते।

इनकी माता ने प्रेमवश इनसे कहा—"ऐ अतबा, इतनी सख्ती ठीक नही, अपने साथ कुछ नर्मी से पेश आओ।" यह बोले—"मा, मैं चाहता हू

कि कयामत में मेरे साथ नर्मी की जाय, क्योंकि वह हमेशा के लिए फायदेमद होगी। यह दुनिया तो चदरोजा है, यहा सख्ती और तकलीफ उठाने से कयामत मे नर्मी और राहत रहेगी।"

लोगो ने सत अब्दुल वाहिद जैद से पूछा, 'क्या आप दुनिया मे किसी ऐसे शख्स को जानते है जो अपने हाल के सिवा दूसरो मे मशगूल न हो ?" तो उन्होने कहा—"हा, मैं जानता हूं। ज़रा ठहरो, वह यहा आते ही होगे।" इतने मे सत अतबा वहा आ पहुंचे। सत जैद ने कहा—"यही वह शख्स है।" लोगो ने इनसे पूछा, राह मे आपने किस-किसको देखा ? सत अतबा ने कहा—"मैंने किसीको नही देखा ?" यद्यपि वह बाज़ार के रास्ते से वहा गये थे।

लिखा है कि सर्दी के दिनो मे लोगो ने इन्हे एक मैदान मे देखा। उस समय यह एक इकहरा कपडा पहने हुए थे और कपडे से पसीना टपक रहा था। लोगो ने पूछा—"ऐसी सर्दी मे यह पसीना कैसा ?" बोले—"एक ज़माना हुआ जब कुछ मेहमान मेरे यहा आये थे। उन्होने पडौसी की दीवार से मिट्टी लेकर अपने हाथ धोये थे। उस दिन से जब मैं यहा आता हू उस लज्जा की वजह से मेरे शरीर से पसीना बहने लगता है हालाकि मकान-मालिक ने उस मिट्टी के लिए मुझे माफ़ भी कर दिया था।"

कहते हैं कि एक बार यह निरन्तर कई रात बिल्कुल नही सोये और कहते रहे—"ऐ अल्लाह, तू मुझपर अजाब (दण्ड) कर या माफ कर। दोनो हालतो मे तुझे दोस्त रखता हू।" लिखा है कि एक दिन यह तहखाने मे थे। एक शख्स आया और कहने लगा, "लोग आपके बारे मे मुझसे पूछते हैं। कोई चमत्कार दिखाइए कि मैं भी देखू।" बोले, "क्या मागता है ?" उसने कहा—ताज़ा खजूर दीजिए। इन्होने एक थैली, जो ताजे खजूरो से भरी थी उसे दे दी, हालाकि वह मौसम खजूरो का न था।

एक बार मुस्लिम-जगत् की एक सत-शिरोमणि देवी राबिआ के घर सत मुहम्मद समाक और सत जू-उल-नू-मिसरी बैठे हुए थे। अचानक नया लिबास पहने सत अतबा बिन अल गुलाम आये और इन सतो की जमी हुई गोष्ठी के सामने बडी शान से अकडकर चलने लगे। सत समाक बोले—"यह कौन चाल है ?" सत अतबा ने कहा—"मैं क्यो न इस तरह

चलू ? आखिर मैं गुलामे-जब्बार हू।" यह कहा और गिर पडे। लोगो ने उठकर देखा, प्राण-पखेरू उड गया था।

इन सत के जीवन का प्रारभ भी अजीब था और अत भी विचित्र ही रहा। इनका स्वर्ग पहुचना भी अनोखापन लिये हुए है। इनसे कोई गलती हो गई थी—काम की नही, नज़र की। उसके दडस्वरूप खुदा ने फरिश्तो को हुक्म दिया कि दोज़ख के ऊपर से इन्हें बहिश्त ले जाओ। जब दोज़ख के ऊपर से जा रहे थे, तो एक साप ने काटा जिससे आधा मुह काला हो गया। साप ने यह भी कहा कि गलती छोटी ही थी, वरना ज़्यादा दण्ड देता।

स्वर्ग-गमन की इस घटना की सूचना भी मृत्युलोक के लोगो को उसी प्रचलित सूत्र स्वप्न के द्वारा पहुची। सत-जगत् मे स्वप्नादेश की यह सस्था बडे काम की मालूम पडती है। सत के लम्बे जीवन से जो शिक्षा नही मिल सकती, वह इस स्वप्नादेश के द्वारा मिलती रही है। जीवन को ऊचा उठानेवाले धर्मतत्त्वो का एक नवीन मूल्याकन अत्यत सजीव रूप से समय-समय पर लोगो के सामने आता रहा है।

: ८ :

अबु अली शफ़ीक़

अबु अली शफीक बलख के रहनेवाले बडे ही तपस्वी, सतोषी और ईश्वर-भक्त सत थे। सत हातम असम (जिनका उल्लेख प्रथम भाग मे आ चुका है) अबु अली के गुरु थे और इल्मे-तरीकत (ज्ञान) इन्होने इब्राहीम बिन अदहम से हासिल किया। जीवनी-लेखक का कहना है कि यह महान् विद्वान् थे और अनेक प्रकार की आध्यात्मिक विद्याओ के सबध मे इन्होने अनेक रचनाए की हैं।

अबु अली कहते थे कि मैंने एक हज़ार सात सौ उस्तादो से शरीयत और तरीकत (अध्यात्म) के इल्म हासिल किये, मगर वस्तुत अल्लाह की

रज़ामन्दी मुझे इन चार चीजो मे मालूम हुई—(१) रोज़ी से मुतमैयन रहना, अर्थात् भोजन की चिंता न करना, (२) इखलास करना, अर्थात् दिल साफ रखना और सच्चे दिल से ईश्वर से प्रेम करना; (३) शैतान को दुश्मन जानना, यानी उससे होशियार रहना कि कही मन पर कब्ज़ा न कर लें; और (४) और तोबए-आख़िरत जमा करना, अर्थात् अच्छे काम, अच्छे विचार और दान-दया से आगम को सुधारना।

भोजन के संबंध में ईश्वर पर विश्वास करके सदा निश्चित रहना, मालूम पडता है, इनके जीवन का मूलमन्त्र था। पर इसके सबंध मे एक और व्यक्ति ने इनके दिल पर करारी चोट की। उसका इन्होने कुछ बुरा न माना, उल्टे अत्यत कृतज्ञतापूर्वक इन्होने उसकी दूरदृष्टि और समझदारी की प्रशंसा की। इससे वह टीका करने वाला व्यक्ति इतना अधिक और इतने आश्चर्यजनक रूप से प्रभावित हुआ कि बिना कहे ही मुसलमान होने को राज़ी हो गया।

उस व्यक्ति ने अबु अली से कहा था—"आप खुदापरस्ती का दावा करते है और यह भी कहते है कि मैंने अल्लाह पर तवक्कुल किया है, अर्थात् भोजन की चिंता अपने पर न रखकर भगवान् पर ही छोडी हुई है। इससे तो यह ज़ाहिर होता है कि आप खुदापरस्ती नही बल्कि रोज़ी-परस्ती करते है।" टीका कड़वी थी और तथ्यपूर्ण। वह उच्च तत्त्व की ओर सकेत कर रहा था कि तवक्कुल को सामने रखना बुद्धि को शरीर से आबद्ध रखना है और इबादत को रोज़ी का ज़रिया बना देना है।

जिस व्यक्ति ने यह बात कही थी उसे काफिर लिखा गया है, पर उस ज्ञानी काफिर के कथन का अभिप्राय सभवत यह था कि ईश्वर का प्रेम तो ईश्वर के प्रेम के लिए ही होना चाहिए। उससे किसी चीज की कामना करना दुनिया की रोज़ी की तलब रखना, मन को दुनिया से बाधकर रखना है जो आत्मा की ऊची उडान मे बाधक होता है। रोज़ी के लिए भागते फिरने की अपेक्षा निश्चय ही तवक्कुल बहुत अच्छा है, पर जहाँ दुनिया निरस्त हो जाती है वहा जिसे पहुचना है उसके लिए तवक्कुल नीचे की ओर खीचनेवाली जजीर का काम देता है।

सत अबु अली उस 'काफिर' की इस ज्ञानपूर्ण टीका को सुनकर बहुत

प्रभावित हुए और अपने साथियो से बोले—"यह बडी नसीहत है, इसे लिख लो।" अब उस टीकाकार के प्रभावित होने की बारी आई। सभवत इस अनुकूल प्रतिक्रिया की उसने कल्पना न की थी, इसीलिए सत के मुख से निकली इस अप्रत्याशित प्रशसा को सुनकर वह बोला—"आप बडे बुजुर्ग हैं। आपका दीन सच्चा है, क्योकि इसमे सत्य की प्रतिष्ठा है। अगर यह बात न होती, तो जिसे काफिर समझते है उसके कौल को उपदेशप्रद मानकर मुरीदो से न लिखवाते।"

रसूल की एक बहुत ही सुन्दर सूक्ति का उल्लेख करके अबु अली बोले —"मुसलमानो का कायदा है कि अगर सच्चा मोती कीचड मे भी पडा दीखता है, तो उसे उठाकर धोते हैं और अपने पास रखते हैं।"

लिखा है कि उस व्यक्ति ने, मालूम नही वह किस मज़हब को माननेवाला था, सत अबु अली से मुसलमान बना लेने की प्रार्थना की और इन्होने उने मुसलमान बना लिया।

इसी स्थल पर अत्तार ने लिखा है कि एक बार समरकद मे वाज़ (उपदेश) करते हुए अबु अली ने कौम की तरफ रुख करके कहा—"अगर तुम मुर्दा हो तो कब्रिस्तान मे जाओ, अगर नासमझ लडके हो, तो मकतब मे जाओ, अगर पागल हो, तो पागलखाने मे जाओ, अगर काफिर हो तो कुफ्रिस्तान मे जाओ, और अगर मुसलमान हो तो इस्लाम का सीधा रास्ता इख्तियार करो।" इस्लाम का अर्थ है ईश्वर के हाथो मे अपनेको सपूर्ण रूप मे अर्पित कर देना और मुसलमान वह हुआ जो ईश्वर-अर्पित बुद्धि से जगत मे विचरे।

किसी व्यक्ति ने इनसे हज के लिए जाने का अपना विचार व्यक्त किया तो पूछा—"तोशए-सफर (पाथेय) तेरे पास क्या है ?" वह बोला—"चार चीज़े मेरे साथ हैं (१) मैं अपनेको सबसे ज्यादा रोजी के करीब देखता हू, (२) समझता हू कि कोई मेरी रोज़ी कम नही कर सकता ; (३) अल्लाह हर जगह मेरे साथ है, और (४) अल्लाह मेरे अच्छे-बुरे हाल को जानता है।" सत अबु अली ने खुश होकर कहा—"इससे बडा कोई तोशा नही हो सकता। तू हज करने जा। अल्लाह तुझे हज मुबारिक करे।"

किसी अमीर ने सत अबु अली से कहा—"आप मेहनत-मज़दूरी करके

खाते हैं, इसलिए लोग आपको जलील जानते है। आप मुझसे धन लेकर उसे खर्च करें।" इसपर बोले—"अगर पाच बातो का मुझे अदेशा न होता तो ज़रूर तुझसे ले लेता। एक यह कि तेरा खज़ाना कम हो जायगा, दूसरे, शायद मेरे यहा से चोर ले जाय; तीसरे, शायद देकर तुझे अफसोस हो, चौथे, मुमकिन है कि देने के बाद तू मुझमे कोई ऐब देखकर माल वापस लेना चाहे, पाचवें, तू न रहे तो फिर मैं मुफलिस हो जाऊगा।"

एक वृद्ध पुरुष ने इनके पास आकर कहा कि अब मैं अपने गुनाहो से तौबा करना चाहता हू। सत बोले—"तू बहुत देर मे आया है।" उस वृद्ध ने कहा—अपने विचार से तो मैं बहुत जल्दी तौबा करने आया हू, क्योनज़अ (मृत्यु के समय की बेहोशी) के वक्त तौबा करनेवाले को समझना चाहिए कि उसने जल्दी तौबा की। सत बोले—"वाकई तेरा यह कौल बहुत सही है। अच्छा काम जल्दी-से-जल्दी करना अच्छा, पर देर हो जाय तो उसे न करना ठीक नही।"

हज जाते समय जब यह बगदाद पहुचे तो मुस्लिम जगत् के प्रसिद्ध खलीफा हारू रशीद ने इन्हे बुलाया और इनका सम्मान करके कुछ उपदेश की याचना की। बोले—"आगाह होजा कि अल्लाह ने तुझे चार मशहूर खलीफाओ का नायक बनाया है। वह तुझसे सिद्क (सत्यनिष्ठा), अदल (न्याय), हया (लज्जा) और इल्म के बारे मे पूछेगा।" (अर्थात् ईश्वर के दरबार मे पूछा जायगा कि तूने सत्य और न्याय का अपने सार्वजनिक और वैयक्तिक जीवन मे कैसा व्यवहार किया और तेरा शील और ज्ञान कैसा था ?)

खलीफा ने कहा—कुछ और कहिए। बोले—"अल्लाह ने तुझे माल, ताज़ियाना (कोडा) और तलवार इसलिए अता किये हैं कि हाजतमद को माल दे और जो लोग अहकामे-शरीयत (शास्त्रीय विधान) पर अमल न करें उन्हे कोडा दिखाकर राहे-रास्त पर ला और जिसने खून किया हो, तलवार से उस खून का बदला ले।" अर्थात् दीन-दुर्बल लोगो को धन देकर उनका पोषण कर, अधर्मियो को दड देकर प्रजा की रक्षा कर और उनको अच्छे रास्ते पर चला। ऐसा करेगा तो तू कयामत मे दोज़खियों का पेशवा (अग्रणी) होगा।

खलीफा हारूं रशीद ने कहा—कुछ और कहिए। बोले—"खलीफा मिस्ल चश्मे के और उसके मातहत हाकिम मिस्ल नहरो के है। तू हक के के साथ हुकूमत कर, ताकि हाकिम भी तुझे देखकर वैसा ही करें, क्योकि नहरें चश्मे के मातहत होती है।"

हारू रशीद ने फिर कहा—कुछ और कहिए। बोले—"अगर तू रेगिस्तान मे प्यासा हो और कोई शख्स आधी सल्तनत के एवज़ मे तुझे पानी दे तो लेगा ?" खलीफा ने कहा—"ज़रूर लूगा। बोले—"अगर वह पानी पीकर तेरा पेशाब बद हो जाय और सख्त तकलीफ मे हो और कोई तबीब (चिकित्सक) बाकी सल्तनत के एवज़ तेरा इलाज करने को कहे तो तू क्या करेगा ?" खलीफा बोला—"वह आधी सल्तनत भी दे दूगा। बोले—"उस सल्तनत पर क्या फख्र जो एक घूट पानी पर बिके और फिर इलाज मे बाकी भी जाय ?"

खलीफा हारू रशीद की इतिहास, साहित्य और लोकमत मे काफी प्रसिद्धि है। वह निश्चय ही एक अच्छे, भले और नर्म दिल के आदमी थे। सत फज़ील के पास भी वह उपदेश लेने गये थे, जिन्होने कहा था कि तेरी सल्तनत मे कोई बुढिया अगर गरीबी के कारण भूखी सो रही होगी तो कयामत मे तेरा दामन पकडकर इसाफ की तालिब होगी।" ऐसी बाते सुन-सुनकर वह रोये और रोते-रोते बेहोश हो गये थे। अबु अली की बातो ने भी उन्हे पिघला दिया और फिर बडे सम्मान से उन्होने सत को विदा किया।

सत अबु अली जब मक्का पहुचे तो ख़याल आया कि ख़ुदा के घर मे रोज़ी तलाश करना ठीक नही। वही इब्राहीम बिन अहमद से मुलाकात हुई। इन्होने उनसे पूछा—"आप रोज़ी कैसे हासिल करते हैं ?" इब्राहीम बोले—"अगर कुछ मिल जाता है तो शुक्र, वर्ना सब्र करता हू।" इन्होने इनसे पूछा—"आप कैसे हासिल करते है ?" तो यह बोले—"जब कुछ मिल जाता है तो खैरात, वर्ना शुक्र करता हू।" बात के महत्त्व से प्रभावित होकर इब्राहीम बोले—"वाकई आप बडे बुज़ुर्ग हैं।"

स्मरण रहे यह वही इब्राहीम थे जो निहावन्द के अमीर थे और जिनकी आत्मा को जगाने के लिए दो बार खिज्र उनके पास पहुचे थे। एक बार

ऊट तलाश करते हुए छत पर और दूसरी बार महल को सराय साबित करने के लिए। मक्का मे रहकर जगल से लकडिया लाते, उन्हें बेचकर खैरात करते और रोजी चलाते। दुआ करने पर खूबसूरत जवान लड़का (जो ममता का मारा अपने पिता को खोजने आया था) तडपकर मर गया था।[1]

ऐसे इब्राहीम को एक ऊची बात कहकर जिन्होने चमत्कृत किया उन संत अबु अली की आखे खोलने को खुदा ने उन्हींकी मजलिस मे एक श्रोता को खडा कर दिया। हज से वापस आकर बगदाद मे जब वाज़ कह रहे थे तो बोले—"जब मैंने सफर शुरू किया तो मेरी जेब मे थोडी चादी थी और वह अबतक उसी तरह जेब मे पडी हुई है।" एक श्रोता ने उठकर कहा—"जब जेब मे चांदी डाली तब क्या खुदा न था, या आपको खुदा पर तवक्कुल न था?" इसपर अबु अली बड़े लज्जित हुए और चुपचाप वेदी से नीचे उतर आये।

अबु अली के शिष्य हातम असम का कहना है कि एक बार मैं इनके साथ जिहाद मे शरीक था। लडाई सख्त हो रही थी। दोनो फौजो के दर्म्यान यह गुदडी ओढकर सोते रहे, मगर इनको कोई चोट न आई। लिखा है कि एक बार किसीने फौजकशी की। यह बैठे फूल सूघ रहे थे। अपनी योगशक्ति से बैठे-बैठे ही इन्होने दुश्मनो को हरा दिया। किसीने कहा—"बाहर दुश्मनो की फौज है और आप फूल सूघ रहे है!" बोले—"कोई बाहर आकर तो देखे।" देखा तो फौज भाग गई थी।

एक बार संत ने स्वप्न देखा कि कोई कहता है—"खुदा पर तवक्कुल करनेवाले की शुद्ध जीविका होती है, वह सुखी रहता है और इबादत मे शका पैदा नही होती।' यह कहते—"मुसीबत मे वावैला करनेवाला दरअसल खुदा से लडनेवाला है। असल इबादत खौफ, उम्मीद और मुहब्बते-इलाही है। ईश्वर का भय, कृपा की आशा और ईश्वर-प्रेम जब हो तभी भजन मे मन लगता है।"

---

१ इब्राहीम की कथाओं का विवरण 'सूफी संत-चरित' के प्रथम भाग मे विस्तार से है।

भय का लक्षण यह है कि जो बुरे काम हैं उनसे मनुष्य दूर रहे । आशा का चिह्न यह है कि सत्कर्म और भजन मे मन खूब लगे । और प्रेम का प्रमाण यह है कि भगवान् मे गहरी आसक्ति हो और ससार से विरक्ति तथा मन अविरल रूप से ईश्वर की ओर चले। इवादत के इन्होने दस हिस्से बताये हैं—नौ हिस्से ससार से भागना और एक हिस्सा खामोश रहना है। साथ ही, इनका कहना था—जिसमे अमन, खौफ और इज्तरार नही वह दोजख मे जायगा। अमन से अभिप्राय है शांति, अहिसा, सर्वभूत-हित के लिए कल्याण-कामना। खौफ से अभिप्राय है बुरे और काम-क्रोध लोभ, मोह आदि बुरी भावनाओ को तिलाजलि देना। और इज्तरार से अभिप्राय है तडप। शास्त्रीय भाषा मे कहे तो सवेग; 'तीव्र सवेगानाम् आसन्न' यह योग का सूत्र है। उक्त दो बाते भी हो तो सवेग बढ जाता है।

यह कहते—"खाइफ यानी डरनेवाला उसे कहते हैं जो अपने ऐमाल (आचरण) को काबिले-कबूल न समझे और हमेशा अल्लाह से डरे।" इन का कहना है—"तीन बातो से इसान मारा जाता है—(१) तौबा (क्षमा-याचना) की उम्मीद पर गुनाह करना, (२) ज़िदगी की उम्मीद पर तौबा न करना, और (३) रहमत (भगवत्-कृपा) की उम्मीद पर बगैर तोबा के रहना।" कहते—"अल्लाह आबिदो (उपासको) को मरने के बाद ज़िदा करता है और गुनहगारो को जिदगी मे ही मुर्दा बनाता है।"

इनकी सूक्ति है—"तीन चीजे फुक्र से मिलती है. (१) फरागते दिल, (२) आसानिये-हिसाव और (३) आरामे-नफस्त। और तीन चीज़ें तवगरी यानी अमीरी से मिलती हैं (१) रजे-तन, (२) शोगले-दिल और (३) सख्तिए-हिसाव।" भाव यह है कि जो फुक्र की राह पकडता है उसका मन प्रसन्न होता है, उसे हिसाव देने की विशेष चिंता नही और वृत्ति शान्त होती है।

कहते—"मौत आकर नही पलटती, इसलिए हर वक्त उसके लिए मुस्तैद रहना ज़रूरी है।" एक अच्छी-सी बात इन्होने यह कही है—जिस किसीको तू कोई चीज़ देता है, अगर उस चीज़ से ज्यादा जिसे

दी है उसे अजीज रखता है तो तू आखिरत का, वरना दुनिया का, दोस्त है।" कहते—"मैं तमाम चीजो से ज्यादा मेहमान को अजीज रखता हू, क्योकि मेहमानवाजी की जजा (सुपरिणाम) अल्लाह ही जानता है।"

इनकी एक मार्मिक सूक्ति यह है—"नेमत की वजह से तगी मे पड़नेवाला अगर उस तगी को फरागत न समझे तो उसे गमे-दुनिया और गमे-आखिरत दोनो होते है। और जिसने उसे फरागत खयाल किया उसे दुनिया और आखिरत दोनो मे खुशी हासिल होती है।" यह कहते—"मर्दे-हक वह है जो लोगो के वादे से ज्यादा खुदा के वादे पर विश्वास करे और कोई चीज नष्ट हो जाय तो गनीमत समझे।"

सत अबु अली का कहना है कि मैंने सात सौ आलिमो से दर्याफ्त किया कि खिरदमद, अक्लमद, दौलतमद, दाना (बुद्धिमान्) दरवेश और बखील (कजूस) किस-किसको कहते हैं ? सबने जवाब दिया—अक्लमद वह है जो दुनिया को दोस्त न रखे। दौलतमद वह है जो किस्मत अज़ल पर राजी हो। दाना वह है जिसे दुनिया फरेब न दे सके। बखील वह है जो माल को प्राणो से ज्यादा अजीज रखे और किसीको न दे।

यह सत क्यो बने, इसकी भी कहानी है। व्यापार के लिए तुर्किस्तान गये। वहा एक प्रतिष्ठित मन्दिर मे किसीको प्रेम से पूजा करते देखा तो बोले—"तू सजीव और सर्वशक्तिमान् ईश्वर को छोडकर जड अशक्त मूर्ति को पूज रहा है, तुझे शर्म नही आती ?" छूटते ही वह बोला—"तुम्हे शर्म नही आती जो जगह-जगह तिजारत के लिए घूमते हो ? क्या तुम्हारा खुदा तुम्हे घर पर रोजी नही दे सकता ?" लगनेवाली बात थी, दिल मे लग गई। तुरत घर वापस लौट पडे।

राह मे एक शख्स ने पूछा—क्या करते हो ? कहा—सौदागरी। वह बोला—जो किस्मत मे होगा वह घर-बैठे भी मिल सकता है। मालूम होता है, आपको ईश्वर पर भरोसा नही ? चोट खाये हुए दिल मे यह बात और घर कर गई।

घर पहुचे तो पडौसी को सरदार ने पकडकर मारा। उसका कुत्ता खो गया था। इन्होने पडौसी को छुडा दिया। सरदार से कहा—तीन दिन बाद तेरा कुत्ता मिल जायगा। तीन दिन बाद जो आदमी उस सरदार के

कुत्ते को लेकर इनके पास आया, इन्होने उसे सरदार के पास भेज दिया और खुद दुनिया से एकदम विरक्त हो गये।

हातम असम एक प्रसिद्ध सत हुए हैं। वह इनके शिष्य थे। उन्होने जब वसीयत चाही तो सत अबु अली ने कहा—"जबतक अपनी बात का माकूले जवाब न सोच लो, खल्क से न कहो। और खास यह कि जब तक बात न कहने की कूबत मुह मे बाकी रहे, किसीसे बात न करो।"

९
सफ़ियान री

नमाज़ का वक्त था। लोग नमाज़ पढ रहे थे। नमाज़ पढते-पढते खलीफा ने, जैसाकि अक्सर लोगो की आदत होती है, अपनी दाढी पर हाथ फेरा। सफियान सूरी को यह बात मर्यादा के विरुद्ध प्रतीत हुई। बोल पडे—यह नमाज़ नमाज़ नही है। ऐसी नमाज़ कयामत के दिन गेंद की तरह तेरे मुह पर फेककर मारी जायगी।

खलीफा आखिर खलीफा था और तुनुकमिज़ाज भी था। उसने सफियान सूरी को झिडककर कहा—चुप रह! लेकिन सफियान सूरी चुप रहनेवाले न थे। बोले—सच बात कहता हूं, चुप कैसे रहूं?

खलीफा का गुस्सा भडका और गुस्से की हालत मे उसने हुक्म दिया कि इन्हे सूली दे दी जाय, ताकि आइन्दा कोई ऐसी बात ज़ुबान से न कहे।

दूसरे दिन जो वक्त सूली का था उस वक्त एक दूसरे दरवेश की जाघ पर सिर रखे और सत सफियान बिन एनिया की गोद मे पाव फैलाये आखें बद किये लेटे थे। उन दोनो सतो को जब सूली की बात मालूम हुई तो सोचा कि इन्हें सावधान कर दे। सफियान सूरी ने आख खोली और बोले—मुझे सूली का खौफ नही है। मगर हक बात कहने से बाज़ न आऊगा। फिर कहा—ऐ अल्लाह! खलीफा मुझे बेजुर्म सजा दे रहा

है। इसका उसको एवज़ दे। कहते है कि उस वक्त खलीफा दरबार मे बैठा हुआ था। अचानक धडाका हुआ और खलीफा अपने वज़ीरो के साथ, जो वहा बैठे थे, ज़मीन मे धस गया। उन दोनो बुज़ुर्गो ने कहा, इस कदर जूद-असर (फौरन पूरी होनेवाली) हमने किसीकी दुआ नही देखी। संत सफियान सूरी का कहना था कि मैंने हक बात ज़ाहिर करने की कोशिश की थी, इसलिए अल्लाह ने मेरी दुआ फौरन कबूल कर ली।

यह खलीफा कौन था, यह मालूम नही। ग्रथकार ने उसका नाम देना उचित नही समझा। मगर गुस्से की हालत मे हुक्म देने की बात पर हज़रत अली की एक कहानी याद आती है। किसीको वह दण्ड-स्वरूप मारने जा रहे थे। उसे ज़मीन पर पटककर मारने के लिए जैसे ही खज़र निकाला कि उस आदमी ने मुह पर थूक दिया। कुछ लोग खडे देख रहे थे। उन्होने दिल मे सोचा, इस शख्स ने बडी बेअदबी की है, देखें अब अली क्या करते हैं। मगर अली ने इसके सिवा कुछ नही किया। उठे और खज़र म्यान मे रख अपना मुह पोछ लिया। इतने मे वह आदमी उठा और चल दिया। अली ने कुछ न कहा। लोगो को बडा आश्चर्य हुआ। पूछा तो कहा—मैं इसाफ के लिए उसे मार रहा था। जब उसने थूका तो नफ्स ने कहा, देख इसने कितनी बेइज्जती की, इसे फौरन कत्ल कर। पर मैंने फैसला किया है कि ज़ाती रज और गुस्से की हालत मे उसको मारना इसाफ न होगा, बल्कि शैतान की फर्माबरदारी होगी।

इसाफ से जातियत को अलग रखने का यह एक आदर्श उदाहरण है। ईश्वरभक्ति और धर्मवृत्ति ने अली को और ऊचा उठाया। लडाई मे उनके टखने मे तीर घुस गया। सख्त तकलीफ थी। वह सिजदे मे थे तब ज़र्राह ने तीर निकाला और मरहम-पट्टी की। उन्हें पता भी न चला।

बात सफियान सूरी की हो रही थी। कहते है, उस खलीफा के बाद जो दूसरा खलीफा हुआ वह सफियान का बड़ा भक्त था। एक बार जब यह बीमार पडे तो उसने एक मशहूर हकीम को इलाज के लिए इनके पास

भेजा। हकीम आतिशपरस्त (अग्निपूजक) था। जब उसने इनका कारूरा (पेशाब) देखा तो कहने लगा कि खौफे-इलाही से इनका जिगर टुकड़े-टुकडे हो गया है और वही टुकडे रेजे-रेजे होकर वाहर आ रहे हैं। इतने पर भी इन्हे जिन्दा देख वह बहुत प्रभावित हुआ और मुसलमान बन गया।

खलीफ़ा ने जब यह माजरा सुना तो निहायत खुशमिजाजी से कहा—मैंने तो अपनी समझ मे एक हकीम को बीमार के पास भेजा था, मगर अव मालूम हुआ कि दरअसल बीमार हकीम के पास गया था।

सफियान जामा मस्जिद के हुजरे मे रहते थे, मगर इतनी परहेज़-गारी वरतते थे कि जव वहा वादशाह की भेजी हुई खुशबू जलाई जाती तो मस्जि द से वाहर निकल आते, ताकि उसकी वू उनके दिमाग मे न आये और यह उसमे हिस्सा लेनेवाले न वनें।

कहते हैं कि सफियान सूरी की कमर जवानी मे ही कुछ झुक-सी गई थी। इसका कारण पूछा गया तो पहले तो कुछ उत्तर न दिया, मगर जव लोगो ने वार-वार इसरार किया तो कहा—"मेरे उस्ताद ने मरते वक्त मुझसे कहा था कि पचास वर्ष मैंने इवादत और खल्क को इदायत की, मगर इस वक्त मुझे हुक्म हो रहा है कि तू हमारी दरगाह के लायक नही है।" इस वात को सुनकर मुझपर इस कदर खौफे-इलाही गालिव हुआ कि मेरी कमर झुक गई।

इनकी जो कमर झुक गई थी उस संबध मे ऐसा भी कहा जाता है कि इनके तीन उस्ताद वडे आविद (उपासक) और जाहिद थे, मगर मरने से पहले एक यहूदी वन गया, दूसरा निसारी और तीसरा आतिशपरस्त और इसी हालत मे उनका अन्त हुआ। इस वात का इनको सदमा तो हुआ ही, पर दिल मे यह खौफ तारी हुआ कि जब ऐसे जाहिदो और आविदो का ईमान सावित न रहा तो भला मैं किस गिनती मे हू! यह अल्लाह से दुआ करते कि "ऐ अल्लाह, मेरा ईमान सावित रहे!"

लिखा है कि एक शख्स ने अशर्फियो से भरी दो थैलिया इनके पास भेजी और कहला भेजा कि "आपसे और मेरे पिता से मित्रता थी, अव उनका देहान्त हो गया, उनकी शुद्ध कमाई मे से ये थैलिया आपकी सेवा

में भेज रहा हूं, कृपया इन्हें स्वीकार करें और जिस राह में चाहें खर्च करें। मगर सुफियान ने वे थैलियां वापस कर दीं और कहला भेजा —"तुम्हारे पिता से जो मेरी दोस्ती थी, वह दीन के लिए थी, दुनिया के लिए नहीं।"

उनके पुत्र ने कहा—"मैं गरीब और बाल-बच्चोंवाला आदमी हूं, अगर ये थैलियां वापस न करके मुझे दे देते तो मेरा काम चल जाता।" वह बोले, "मैं दीन की दोस्ती को दुनिया के एवज बेचना नहीं चाहता। अगर यह तुम्हें दे दूं तो, मना नहीं रहता।" ग्रन्थकार ने यह नहीं लिखा कि उसके आगे क्या हुआ, किन्तु अनुमान यही है कि पुत्र बेचारा मन मसोसकर रह गया होगा।

सफियान तो इनका नाम था, मगर साथ मे सूरी का जो लकब लगा है उसकी एक कहानी है। औरो के नाम के साथ तो प्राय उनके पिता का नाम रहता है। मगर इनका यह सूरी नाम इनकी एक समय की अनजान वेअदबी की वजह से गैवी तौर पर इन्हे मिला। लिखा है कि एक बार यह मस्जिद मे दाखिल होते वक्त अपना बाया पैर (सभवत अन्यमनस्कता के कारण) पहले बढा बैठे थे। तभी आकाशवाणी हुई—"या सूरी, यह वेअदवी मस्जिद मे अच्छी नही।" कहते है, उमी दिन से यह सूरी मशहूर हो गए। यह भी लिखा है कि इस गैबी आवाज़ के सुनते ही इन पर खौफे-खुदा इस कदर छाया कि वेहोश होकर गिर पडे और जब होश आया तो अपने मुह पर कई थप्पड लगाये और कहा कि मुझे वेअदबी की सज़ा मिल गई, मेरा नाम इन्सानो से काट दिया गया।

आकाशवाणी के द्वारा सूरी कहकर यह एक बार और पुकारे एव चेताये गए। लिखा है कि कही जा रहे थे। किसीके खेत मे पाव पड गया तो आवाज़ आई—"ऐ सूर! देखकर कदम रख!" ग्रथकार अत्तार ने इस स्थल पर सात्विक भावावेश मे लिखा है कि जिसपर ईश्वर की ऐसी कृपा हो कि एक कदम रखने पर चेतावनी दी जाय, उसके बातिन (आन्तरिक) का क्या हाल होगा? निश्चय ही वह ईश्वर की प्रेमल ज्योति से परिपूर्ण होगा।

एक बार प्रसिद्ध सत इब्राहीम बिन अदहम ने इन्हे हदीस सुनने के लिए बुला भेजा। सूचना पाते ही यह उनके यहा पहुचे। इब्राहीम बोले—"कोई काम न था, मुझे तो सिर्फ आपके खुल्क (शिष्टाचार) की आज़माइश करनी थी। आपका इखलाक जाहिर हो गया। इधर तो सतो के के प्रति शिष्टता और उधर इबादते-इलाही मे इतने मसरूफ रहते कि तीस साल तक मुतवातिर रात को दमभर भी नही सोये।

कहते थे कि मैंने जो कौल पैगम्बरे-खुदा का सुना उसपर पूरे तौर पर अमल किया। इसी सिलसिले मे कहते थे कि हदीस यानी रसूल की उपदेशात्मक व्यवहार-नीति का दिग्दर्शन करानेवाली सूक्तियो को जो जानते है उन्हे ज़कात देनी चाहिए। लोगो ने पूछा, "उसकी ज़कात क्या है?" बोले—"दो सौ हदीसो मे से पाच हदीसो पर जरूर अमल करें।"

यह बडी अच्छी सलाह है, क्योकि लोग ज्ञान को अपने अदर कोठे की तरह भर लेते हैं।

एक बार यह किसी अमीर के महल की तरफ से गुजरे। जो व्यक्ति साथ मे था वह उस महल को देखने लगा। इन्होने उसे मना किया और कहा, "अमीर लोग मकान बनाने मे इतना अधिक खर्च करते है कि उसका देखने वाला भी गुनहगार होता है। अक्सर ऐसे काम इसी लोभ से किये जाते है कि लोग देखकर तारीफ करे। जिस काम मे शरीक होना ठीक न हो, उससे असबद्ध और दूर ही रहना चाहिए।"

जो शाही खुशबू और शाही महल से दूर भागता है यह अपनी तपस्या देकर क्या खरीदता है, यह बात भी सुनने लायक है। किसी व्यक्ति का हज फौत हो गया, अर्थात् उसकी यात्रा मे बाधा आ पडी, तो वह दिली दर्द से कराह उठा। यह उसके पास जाकर बोले—"मैंने चार हज किये है। मैं उनका सवाब (फल) तुझे देता हू, अगर तू उसके बदले मे अभी तूने जो आह की है उसका सवाब मुझे दे दे।' जो यात्रा भग हो जाने के दुख से आह भर रहा हो उसे एक प्रसिद्ध पहुचा हुआ सत एक आह के एवज मे अपनी चार तीर्थ-यात्राओ का पुण्यफल, अपनी तपस्या भेट करे, इससे अच्छा सौदा भला और क्या होगा ? वह राजी हो गया। रात को सत ने स्वप्न देखा कि कोई कह रहा है—"ऐ सफियान, तुमने एक आह को लेकर जो नफा (लाभ) हासिल किया है उसे काबा मे रहनेवाले सभी लोगो को तकसीम कर दो तो सब मालदार हो जाय।"

एक बार यह खाना खा रहे थे। पास मे एक कुत्ता खडा था। उसे भी खाने को दिया। लोगो ने कहा—"आप अपने बाल-बच्चो के साथ खाना क्यो नही खाते ?" तो बोले—"वे इबादत मे खलल डालते हैं, जबकि यह कुत्ता मेरी निगहबानी करता है और मैं निश्चिन्त होकर अल्लाह की इबादत किया करता हू।" अपने शिष्यो से कहते—"खाना मजेदार या बदमजा हलक तक ही है, इसलिए जो मिले उसे ही खाओ।"

कहते हैं कि यह फकीरों की इतनी ताजीम (इज्जत) करते थे जितनी दुनियादार लोग बादशाहो की करते हैं। एक बार यह रोते हुए हज को जा रहे थे। लोगो ने समझा, शायद गुनाहो के खौफ से रोते है। पूछा

तो बोले—"मै इसलिए रोता हू कि मालूम नही, मेरा ईमान सिद्क दिल से है या नही। गुनाहो की वजह से मैं नही रोता, क्योकि गुनाह तो उसकी रहमत के मुकाबले मे एक जर्रे के बराबर भी नही।"

इनकी कुछ सूक्तियां यहा दी जाती है। यह कहते थे, "अल्लाह आरिफ (ज्ञानी) को मारफत (ब्रह्मज्ञान), आबिद (उपासक) को कुर्बत (सान्निध्य) और हुकमा को हिकमत अता करता है।" रोने की दस किस्मे बताते—"नौ रिया से, यानी मक्कारी से, लोगो को और अपने को धोखा देने के लिए और एक अल्लाह के खौफ से।" और कहते, "अगर साल-भर मे एक भी आसू अल्लाह के खौफ से निकले, तो जिदगी-भर ऐसे रोने से अच्छा है जो खुदा के खौफ से न हो।"

यह भी कहते—"अगर किसी मजमे मे कहा जाय कि जिसे शाम तक जिदगी का यकीन हो वह सामने आये, तो कोई नही आयेगा, मगर अफसोस यह है कि अगर तमाम आलम से कहा जाय कि जिसने तोशए-आखिरत (पारलौकिक पाथेय, अर्थात् पुण्य) मुहैया कर लिया है वह सामने आये, तो भी कोई न आयेगा।" कहते—"अमल से ज्यादा, किये हुए अमल पर परहेज करना मुश्किल है। जब कोई नेक अमल करता है तो फरिश्ते नेक ऐमाल (सत्कर्म) मे लिखते हैं, लेकिन जब वह फख्र (अभिमान) से उसका जिक्र करता है तो रिया (पाखड) मे लिखते हैं।"

ऊपर की इसी बात को और भी स्पष्ट करते हुए यह कहते—"जुह्द (इद्रिय-निग्रह) की अलामत यह है कि दुनिया मे नेक काम करके उसपर फख्र न करे और जुह्द का बयान करनेवाले जाहिद (सयमी) नही।" अमल पर परहेज से इनका मतलब यही है कि जो काम किया है वह बहुत अच्छा है, ऐसा न तो अपने दिल मे ही खयाल आने दे और न दूसरो से ही गर्वपूर्वक उसका उल्लेख करे। अपनेको या मित्रो को अच्छे कामो के लिए उत्साहित करना जरूर अधर्म न होगा।

"अमीर और बादशाह से ज्यादा मिलनेवाला पाखडी उपासक है। जुह्द अपनी जरूरतो को एकदम कम करने मे, दिल को दुनिया से अलग रखने और आशाओ के विस्तार को कम करने मे है।" यह बताकर कहा,—"अल्लाह का गुनाह करने से ज्यादा बुरा खल्क का गुनाह है।" इसी बात

को किसी सत ने यो कहा है कि "कोई दूसरा बडा गुनाह भले ही करो, पर गीबत (पर-निंदा) न करो। अल्लाह तो गुनाह माफ कर देगा, पर खल्क अपना गुनाह माफ न करेगी।"

कहते—"दुनिया मे गोशानशीनी (एकान्तवास) इख्तियार करने वाले नजात (मुक्ति) पाते है।" किसीने पूछा, "अगर आदमी गोशा-नशीन हो जाय तो बसर-औकात (जीविकोपार्जन) कैसे करे ?" तो बोले, 'खुदा से डरनेवाला बसर औकात की फिक्र नही करता। लोगो की नजरों से गायब रहनेवाला अच्छा है। बुजुर्ग लिबासे-अजमत (बड-प्पन) को इस्तेमाल नही करते और दुनियावी जिल्लत को पसद करते है। असली चीज तो ईश्वर की प्रसन्नता है।"

इनकी एक मजेदार सूक्ति है—"कि अहले दुनिया का जागने से सोना अच्छा है, इसलिए कि सोने की हालत मे दुनिया से अलग रहकर गीबत से बचते हैं।" कहते—"वह बादशाह अच्छा है जो जाहिदो की सोहबत इख्तियार करे, वह जाहिद बुरा है जो बादशाह से मिलने की चेष्टा करे। बादशाह अगर जाहिद से आकर मिलता है तो उसका और प्रजा दोनो का भला होता है। मगर जाहिद का काम है कि अपने दिल को दुनिया से बचाये।"

यह भी कहते—"पहली इबादत गोशानशीनी (एकातवास) है। फिर तलबेइल्म (जिज्ञासा), फिर इल्म पर अमल। फिर इल्म का प्रचार। दुनिया को जिस्म की जरूरत के मुताबिक और आखिरत को जानोदिल की जरूरत के मुताबिक हासिल करना चाहिए।" अपने लिए कहते, "मैंने सिवा खुदा के दोस्तो के किसीका सत्कार नही किया। अपने को दूसरो से श्रेष्ठ जाननेवाले मे (अहंकार) है। विनम्रता ही आत्मा का भूषण है।"

"वह हराम माल से खैरात और सिद्क (दान) देनेवाले मिस्ल उस शख्स के है जो नापाक कपडे को पानी की बजाय खून से धोये। नेक आदत अल्लाह के गुस्से को ठडा करती है। पहले यकीन वे हैं जो तकलीफ को रास्त (उचित) समझे और अल्लाह की नाशुक्री न करें। हम उसे दोस्त रखते है जो हमे मारता है और हमारा माल लेता है।" यह सूक्ति

ईसा की याद दिलाती है।

लोगो ने पूछा, "यकीन क्या है ?" तो बोले—"वह दिल का एक कौल है। जब यकीन कामिल इन्सान को होता है तो मारफत हासिल होती है। यकीन की निशानी यह है कि जो मुसीबतें और मुश्किलें आयें उन्हे ईश्वर की ओर से आयी जानकर उनका स्वागत करे।" कहते—"चार बातें बुरी हैं—(१) लोगो को निन्दित और लाछित करना, (२) मुसलमान के उरूज (उन्नति) पर हसद (ईर्ष्या) करना, (३) हराम माल जमा करना और (४) कर्तव्य-विस्मरण तथा ईश्वर के वचनो मे अश्रद्धा करना।"

ये चारो बातें इन्होने अपने शिष्य हातम को बताई थी और कहा था,—"लोगो की निन्दा आदि मे व्यस्त होने से मन ईश्वर की ओर से हट जाता है। भक्त के प्रति मन मे ईर्ष्या आने देने से ईश्वर की अप्रसन्नता मिलती है, भक्त की उन्नति से ईश्वर की अनुकपा के प्रति उल्लास और कृतज्ञता का जो भाव होना चाहिए, वह नष्ट हो जाता है। हराम माल से आखिरत फरामोश हो जाती है और चौथी बुराई से कुफ्र होता है।"

"जिस घरवाले गोश्त खाते है, अल्लाह उन्हे दुश्मन समझता है।" यह रसूल की एक सूक्ति है। लोगो ने पूछा—इसका क्या अर्थ है ? सत सफियान सूरी बोले—"गोश्त से मुराद गीबत है। मुसलमानो की गीबत (पीठ-पीछे निंदा) ऐसी है जैसे मुसलमान मुर्दे का गोश्त खाना। और गीबत करनेवालो को अल्लाह दुश्मन रखता है।"

सत सफियान का कोई शिष्य जब सफर को जाने लगता तो उससे कहते कि अगर मौत को देखो तो लेते आना। पर जब इनकी मौत का वक्त बहुत नजदीक आया तो रोकर कहने लगे—"मौत की तमन्ना करता था, पर अब मालूम हुआ कि मौत बहुत सख्त है। लाठी टेकते हुए दुनिया मे सफर करना आसान है, मगर 'अल्कदूम अली अल्लाह शदीद' अर्थात् अल्लाह के सामने जाना कठिन है।"

बसरा मे जब यह बीमार हुए तो सख्त तकलीफ थी, मगर हाकिम बसरा ने जिन आदमियो को इनकी तलाश के लिए भेजा, उन्होने देखा कि सख्त बीमारी की हालत मे भी वह ईश्वर-भजन से गाफ़िल न हुए और साथ

ही वजू का पूरा-पूरा ध्यान रखते। लोगो ने कहा, आप घडी-घडी वज़ू न करे। बोले—"मैं चाहता हू कि जब रूह निकले तो मैं बावजू रहू, नाजस (अपवित्र) नही। नापाक और नाजस अल्लाह के सामने जाने के लायक नही।"

जब मृत्यु का समय निकट आया तो सत अब्दुल्ला मेहदी से कहा कि मुह को ज़मीन पर रख दो। मुह को जमीन पर रखकर वह बाहर खबर करने आये तो देखा कि बहुत-से लोग जमा हो गए है। पूछा, आप लोगो को खबर कैसे हुई, तो लोगो ने कहा, "हमे ख्वाब मे हुक्म हुआ कि सफियान सूरी के ज़नाजे पर हाजिर होओ।" लोग अन्दर आये तो देखा हालत गिरती जाती है।

लोग चिंतित खडे थे, जब इन्होने एक थैली निकालकर दी। यह थैली इनके तकिये के नीचे रखी हुई थी और उसमे हज़ार दीनार थे। आदेश दिया कि इन्हे खैरात कर दो। लोगो ने हुक्म तो माना, पर उनके दिल मे खयाल आया कि यह तमाम उम्र दूसरो को तो माल जमा करने को मना करते रहे और ख़ुद इतने दीनार जमा किये। सफियान उनके दिल की बात समझ गए और बोले—"इन दीनारो से मैंने अपने दीन की हिफा-जत की थी। इनकी वजह से शैतान की शकाओ से मैं बचा रहा।"

बात को और भी साफ करते हुए बोले—"अक्सर शैतान आकर कहता कि तू किसीसे कुछ लेता तो है नही, बता, खायेगा क्या? कभी कहता, तेरी तहजीज और तकफीन (मृतक सस्कार) का कहा से इतजाम होगा? मैं इन्ही दीनारो की तरफ इशारा करके निश्चित हो जाता। अगर ये दीनार न होते तो शैतान रह-रहकर दिल मे ऐसी ही शकाएं पैदा करता रहता और इबादत मे खलल पडता।"

दीनार इनके पास आये कहा से, इसकी भी एक कहानी है। बुखारा मे कोई शख्स लावारिस मरा। वह सभवत इनका कोई दूर का रिश्तेदार था। शरीयत की रूह से उसके माल के यह हकदार थे। इसलिए बुखारा के काज़ी ने इनको खबर भेजकर बुलाया। उस समय इनकी आयु सिर्फ अठा-रह वर्ष की थी। जब यह पहुचे तो शहर के लोगो ने इनका स्वागत किया और अमानत इन्हे सौंप दी।

उस नई उम्र मे भी अचानक और अप्रत्याशित रूप से मिली सपत्ति को इन्होने उडाया नही, सुरक्षित रखा और वही रकम मरते वक्त इन्होने खैरात कर दी। कहते है कि जिस रात को इनका देहान्त हुआ, लोगो ने एक गैबी आवाज़ सुनी, 'मात-उल-वरय', अर्थात् 'परहेजगारी मर गई!' यह परहेजगार तो थे, पर प्राणि-जगत् के प्रति इनके दिल मे वडी करुणा थी। अन्त समय इसका भी एक प्रमाण मिला।

कहते है कि एक चिडिया पिंजरे मे वद तडप रही थी। इन्होने दया करके उसको खोल दिया। वह इनमे वहुत हिल गई। अक्सर आती और इन्हे इवादत करते देखती। जव लोग जनाजा लेकर चले तो वह चिडिया रोती-चीखती जनाजे के ऊपर चली। जब सफियान सूरी को दफन कर दिया गया तो वह चिडिया तडपकर कब्र पर रोया करती। यहा तक कि कब्र से आवाज आती। लोगो ने सुना, कोई कह रहा है, "अल्लाह ने सफियान को वख्श दिया, उस शफकत की वजह से जो वह मखलूक (ससार) पर करते थे।"

लोग इस घटना से और भी द्रवीभूत होकर रोये। किसीने जव इन्हे स्वप्न मे देखा तो पूछा, 'कब्र की तनहाई मे क्योकर सब्र किया?' तो वोले—"अल्लाह ने मेरी कब्र को वहिश्त का एक सब्ज़ा-ज़ार (हरा-भरा घास का मैदान) बना दिया।' किसी और ने स्वप्न मे देखा कि वहिश्त मे एक दरख्त से दूसरे पर उड रहे हैं। पूछा—यह मरतवा कैसे मिला ? तो वोले—'परहेज़गारी (सयम—इद्रिय-निग्रह) से।"

१०

फ़तह मूसली

किसीने वुजुर्ग से कहा कि फतह मूसली के पास कुछ इल्म नही है। उस वुजुर्ग ने जवाव दिया—"फतह मूसली तारकुल-दुनिया हैं, ससार-त्यागी, विरक्त पुरुष है, इससे अधिक और क्या इल्म हो सकता है ?"

बात बडी सच्ची और सीधी है, पर कह नही सकते कि सुनने वालो का इससे पूरा-पूरा सतोष होगा कि नही। खासकर उनका, जो अनुभव से नही बल्कि पढकर या सुनकर इल्म हासिल करते हैं।

पढे-लिखे इल्म में और सच्चे इल्म मे, जिसे अयनुल-यकीन कह सकते हैं, क्या अन्तर है, यह बात एकदम स्पष्ट हो उठती है। उस व्यावहारिक उत्तर से जो सत फतह मूसली ने कुछ व्यक्तियो के एक प्रश्न पूछने पर दिया। लोगो ने उनसे सिद्क की तारीफ पूछी। और कोई होता तो एक लम्बी तकरीर के साथ बताता कि सिद्क किसे कहते है, उसके क्या लक्षण हैं, उसके कितने दर्जे हैं, मगर फतह को इतनी दर्दसरी के लिए फुर्सत कहा ?

पास लुहार की भट्टी दहक रही थी। इन्होने उसमे हाथ डालकर एक दहकता हुआ लोहे का टुकडा निकालकर हाथ पर रखा और कहा—"सिद्क इसका नाम है।" कितना सीधा, कितना सच्चा और कितना सक्षिप्त था यह उत्तर ! तुम्हे ईश्वर मे विश्वास है। वह सबमे है। सब कुछ ईश्वर ही है। वह प्रेमस्वरूप है। और यह आग ! इसमे भी वही है। यह प्रेमस्वरूप है। फतह ने यह प्रत्यक्ष दिखा दिया।

सरी सक्ती मुस्लिम जगत् के बहुत बडे सत जुनैद के मामा थे और उनके गुरु भी। वह फतह मूसली से मिलने के लिए घर से निकले। रात बहुत गुजर गई थी। सिपाहियो ने चोर समझकर पकड लिया। चोरी की सज़ा थी प्राण-दड। सवेरे दूसरे चोरो के साथ उन्हे प्राण-दण्ड सुना दिया गया। कत्लगाह मे बारी-बारी से चोरो को कत्ल किया जा रहा था, जब इनकी बारी आई, जल्लाद रुक गया। लोगो ने देखा कि जल्लाद मारने के लिए हाथ उठा चुका है, मगर वार नही करता। पूछा, क्यो तू इन्हे कत्ल नही करता ? जल्लाद बोला—"एक वयोवृद्ध सौम्य सत मेरे सामने खड़े हुए मना कर रहे हैं।" जो बुजुर्ग जल्लाद को दिखाई दे रहे थे वह फतह मूसली ही थे। लोगो ने सरी सक्ती को रिहा कर दिया और वह उन सबके साथ सत मूसली के यहा आये।

ऊपर के ये दो नमूने हैं इनकी पहुच के। यह कि फतह इस ऊचाई पर कैसे पहुचे, इसका जिक्र भी आया है। इनकी सवेगमयी साधना का एक

उदाहरण इनकी छोटी-सो जीवनी मे यो आया है ' एक रोज यह रो रहे थे और आखो से आँसू नही, खून वह रहा था। किसी ने देखा तो पूछ बैठे, "आप इतना क्यो रोया करते है?" वही छोटा-सा उत्तर था—"गुनाहो के खौफ से।"

इन्होने एक बार मे एक स्वप्न देखा। स्वप्न मे देखा हज़रत अली को। मूसली भला ऐसे मौके को कब हाथ से जाने देते। प्रार्थना की कि कुछ उपदेश दीजिए। अली ने एक बडी ही अच्छी-सी बात कही—'सबाव (पुण्य) की गरज़ से अमीर आदमी का दरवेश की तवाज़य (सत्कार) करना अच्छा है और इससे भी ज्यादा अच्छा है कि दरवेश अमीर से दूर रहे।"

पीछे भी किसी सत ने उपदेश देते हुए कहा है कि बादशाहो और अमीरो के लिए यह अच्छा है कि वे दरवेशो की सेवा करें, मगर दरवेशो का हित इसीमे है कि वे यथासभव उनसे दूर रहे। राजा सत के सान्निध्य और उसकी सेवा से ज्ञान प्राप्त करेगा और पुण्य भी, पर सत के लिए राजा और अमीर का साहचर्य, जबतक कि वे स्वभाव से ही ज्ञानी और वैरागी न हो, नीचे ही खीचनेवाला है।

यह हो सकता है कि कुछ सत अपनी साधना से इतने सुसस्कृत हो गये हो कि उन पर किसीका अकल्याणकारी प्रभाव न पडे, किन्तु अधिकाश लोग प्रकृति से प्रभाव से ऊचे नही उठ सकते। उनके मन के जो सस्कार अभी निर्मूल नही हुए हैं, ऐसी सगति से और दृढ ही होते है। इसलिए आत्मरक्षा की दृष्टि से दूर ही रहना अच्छा। कहा तो यहा तक है कि वे अमीरो से नफरत करें।

मानना होगा कि नफरत अच्छी चीज़ नही है, मगर कच्चे दिलवालो के लिए नफरत ढाल का काम देती है। वैभव मे शक्ति है, चमक है, तभी तो सारी दुनिया उसकी ओर खिची चली जाती है। जो ज्ञानी और विरक्त हैं, जो उसे अच्छा नही समझते, वे भी फिसलते और गिरते देखे जाते है। ऐसे बेग़ैरत दुश्मन से बचने के लिए, जो कही भी जाकर हमला करने से नही चूकता, अपने किले मे ही रहना ठीक है।

नफरत उस किले की दीवारें है, उनसे असग उस किले के बन्द फाटक है। बिना नफरत के वैराग्य टिकता भी कम है। सगदोष ही वे

द्वार हैं जहा से घुसकर वैराग्य पर मर्मान्तिक हमला होता है। मित्र बनाकर कितने ही किले तोडे गये हैं। वैराग्य की रक्षा है अनुराग मे। भगवान् से जितना ही गहरा अनुराग होगा, वैराग्य उतना ही सुरक्षित होगा। जिसका मन तृप्त है वह बाहर क्यो दौडेगा ?

व्यवहार-कुशलता का भी एक उदाहरण इन सत की जीवनी मे देखने को मिलता है। एक व्यक्ति पचास दिरम भेट करने के लिए लाया। आदमी समझदार था। जानता था कि ऐसे लेगे नही। उसने रसूल की एक सूक्ति को आगे रखकर कहा—"हदीस मे लिखा है कि जिसको बेमागे मिले वह कबूल न करे तो उसने गोया नियामते-इलाही से इन्कार किया।" कौडी दूर की लाया था।

जो तवक्कुल पर रहते हैं, किसी से कुछ मागते नही, ईश्वर के सहारे ही जिन्होने अपने को एकदम छोड रखा है, उनकी जीवन-रक्षा के लिए ही यह हदीस है। आखिर भगवान किसी-न-किसी को निमित्त बनाकर ही तो भक्त का योगक्षेम वहन करेगे। सदा-सर्वदा स्वय ही तो सामने आकर खडे नही हो सकते। भगवान् कभी किसी मनुष्य से, कभी पशु-पक्षी से, अपना काम लेते है।

अपने कुछ अवज्ञाकारी शिष्यो से खिन्न होकर जब ये वन मे चले गये तो, कहते है, वहा एक हाथी ने इनकी बडे प्रेम से सेवा की। जगल से केले आदि फल तोड लाता, घडे मे कही से पानी भर लाता और लिखा है कि कही से आग लाकर नहाने के लिए घडे के पानी को गरम भी कर देता। इस पुस्तक मे भी एक भेड मुँह मे रोटी लेकर सत को देने आई है। सत भूखे थे, फिर भी उन्होने भेड की लाई हुई रोटी न ली—यह समझकर कि रोटी, जो भेड मुह मे उठाकर लाई है, किसी की सपत्ति होगी। जब आसमान से आवाज़ आई, कि 'ले लो, खुदा ने तुम्हारे लिए भेजी है', तब सत ने वह रोटी ली। ऐसे ही अवसरो की ओर वह हदीस निर्देश करती है। फतह मूसली को उस आदमी की बात माकूल मालूम हुई। उन्होने एक दीनार लेकर बाकी उसी आदमी को वापस कर दिये।

सत फतह मूसली का कहना है कि मैंने तीस अब्दाल से मुलाकात की, सबने यही नसीहत की कि खल्क से दूर रहो और कम खाओ। और

कहा कि जिस तरह बीमार आदमी का खाना अगर बिला वजह् बन्द कर दिया जाय तो वह मर जाता है, वैसे ही अगर दिल को हिकमत और इल्म और नसीहत और सतो का सत्सग न मिले तो वह मर जाता है। बोले, 'मैंने एक साहब से पूछा, अल्लाह् का रास्ता किधर है ? वह बोला, "जहा ढूंढो, वहीं मौजूद है।"

यह कहते हैं—"आरिफ अर्थात् ब्रह्मज्ञानी जो बात कहते है वह अल्लाह् की तरफ से होती है, जो अमल करते हैं वह अल्लाह् की तरफ से होता है, और सिवा अल्लाह् के किसी से वे तालिब नही होते।" कहते, "जो बन्दा अल्लाह् के लिए नफ्स का मुकाबिला करता है अल्लाह् उसे दोस्त रखता है।" और कहा—"अल्लाह् का तालिब दुनिया तलब नही करता। यह सच है, जब तक और चीज़ो की तलब है तब तक समझो, उसकी तलब दिल मे पैदा हुई ही नहीं।

लिखा है कि सत फतहमूसली की गिनती अपने ज़माने के बडे बुज़ुर्गों मे थी। वह यादे-इलाही मे मसरूफ रहते और दुनिया से नफरत करते थे। उनका स्वर्गवास होने पर किसी ने उन्हे स्वप्न मे देखा तो पूछा, "अल्लाह ने आपके साथ क्या मामला किया ?" बोले—"अल्लाह् ने बख्श दिया और कहा कि चूंकि तू गुनाहो की वजह से रोया करता था, इसलिए हमने फरिश्तो को हुक्म दे रखा था कि तेरा कोई गुनाह न लिखे।"

इस स्वप्न के द्वारा दुनिया को जो सदेश दिया गया है उसमे रूहानियत का एक नया ही ढग नज़र आता है। जो दुनिया से दूर सदा यादे-इलाही मे मग्न हो, उससे कोई बुरा काम तो क्या ही होगा। ऐसे किसी गुनाह की उसमे कुदरत ही कहा रह जाती है। फिर भी भूल से जो छोटी-मोटी गलतिया हो जाती है उनके लिए कोई रोये और ख़ून-आसू बहाये तो क्या उस गुनाह का गुनाहपन बाकी रह जाता है ?

भले ही न रह जाय, पर कार्रवाई करने वाले तो अपनी कानूनी कार्रवाई करेंगे ही। यथोचित खानापूरी न करे तो अपने कर्तव्य से च्युत हो। इसलिए निश्चय ही यह नई विशेषता और एक बडी बात थी कि फ़रिश्तो का हुक्म दिया कि वे सत मूसली का कोई गुनाह दर्ज न करे।

अपने किये पापो को अपने ही हाथो मिटा डालने का शुभ सकेत यहा दृष्टिगोचर होता है ।

: ११ :

मारूफ़ करख़ी

मारूफ करख़ी के माता-पिता तरसा थे । जब इन्हें पढने के लिए मर्कतब मे भेजा गया तो मुअल्लम अर्थात् पढानेवाले ने कहा, "कहो—सालिस सुल्स"—यानी ख़ुदा तीन हैं । इन्होने उत्तर मे कहा—"अल्लाह उल अहद ।" अल्लाह एक है। मुअ॑ल्लम ने फिर ख़ुदा तीन हैं ऐसा कहने को कहा और जब इन्होने न कहा तो इन्हे ख़ूब मारा । यह भाग गये, मगर 'सालिस सुल्स' न कहा । भागकर यह घर न गये, क्योकि माता-पिता यह सुनकर नाराज़ होते । यह सत अली बिन मूसा के पास पहुचे और मुसलमान हो गए । माता-पिता को जब मालूम हुआ कि यह शहर छोडकर भाग गये हैं, तो पुत्र-प्रेम से प्रेरित होकर अपने मन मे कहा—काश, यह घर आ जाए फिर जिस दीन मे रहना चाहे रहे । कुछ दिन बाद यह घर वापस आये तो माता-पिता भी इनके मुसलमान होने की बात सुनकर मुसलमान हो गये ।

लिखा है कि एक बार यह कुरान और मुसल्ला मस्जिद मे छोडकर किसी काम से दरिया पर गये । मस्जिद मे एक बुढिया आई और दोनो चीज़ें उठाकर चल दी । राह मे मिली तो इन्होने पूछा—"क्या आपका कोई लडका है ?" वह बोली—"नही ।" इन्होने कहा—"अच्छा, तो यह कुरान मुझे दे दीजिए और मुसल्ला मैंने आपको बख्श दिया । बुढिया ने लज्जित होकर दोनो ही चीज़ें इन्हे दे दी ।

कुछ लोगो के साथ एक बार यह कही जा रहे थे । राह मे देखा कि एक मडली नाचने-गाने और खाने-पीने मे मस्त है । साथियो ने कहा कि इन्हे कोई ऐसी बददुआ दीजिए कि ये तबाह हो जाए और दूसरे इनको

वजह से तबाह न हो। हाथ उठाकर इन्होने दुआ की—"या अल्लाह जैसे तूने इनको इस ऐश मे रखा है, उसी तरह वह अच्छा और ऊचे दर्जे का ऐश भी इन्हे अता कर ?"

साथियो को इस दुआ पर आश्चर्य हुआ। पर उन मस्तो की नजर जव इन सत पर पडी तो वे शराव और कबाव फेंककर श्रद्धापूर्वक इनकी सेवा मे उपस्थित हुए और इनसे दीक्षा ली। इनके सदुपदेश से प्रभावित होकर अपने बुरे कामो को छोड देने का निश्चय घोषित किया। सत ने भी साथियो से कहा—"जो गुड दीने ही मरे, क्यो विष दीजे ताहि ?"

जुनैद के मामा सत सरी सक्ती का कहना है कि ईद के दिन मैंने इनको खजूर वीनते देखा। सबव पूछा तो बोले—"यह लडका रो रहा है। आज ईद के दिन और लडको ने नये कपडे पहने, इनके पास नये कपडे नही हैं। ये खजूर इसलिए वीन रहा हू कि इन्हें बेचकर इसे नया लिवास ले दू। ईद का दिन है और वच्चे का दिल।' प्रभावित हुए सरी सक्ती वोले—"यह काम मेरे जिम्मे रहा, आप यह तकलीफ न उठायें।" लडके को साथ ले जाकर उसकी मर्जी के मुताविक नये कपडे दिला दिये। यह सब अच्छा ही हुआ और सरी सक्ती को इसका फल भी मिला। सत सरी सक्ती का कहना है कि इसके सिले मे मुझे वह नूर अता हुआ कि मेरी हालत ही और हो गई।

मारूफ करखी के मामा शहर के हाकिम थे। एक वार मामा ने जगल मे देखा कि एक कुत्ता इनके पास वैठा है और यह एक निवाला खुद खाते हैं और एक कुत्ते को खिलाते हैं। मामा बोले—"ए मारूफ, तुम्हे शर्म नही आती कि कुत्ते को खिला रहे हो ? इन्होंने कहा—मैं शर्म की वजह से ही, इस कुत्ते को खिला रहा हू।" यह कहकर आसमान की ओर देखा।

कही से एक पक्षी उडकर आया और नीचे आकर वैठ गया, लेकिन उसने आख और मुह को अपने पैरो से छिपा लिया है। तब मारूफ करखी ने अपने मामा से कहा—"देखा आपने ? जो शख्स अल्लाह से शर्म करता है उससे हर चीज शर्म करती है।" अल्लाह का लिहाज करके ही यह कुत्ते के साथ भाईचारा बरत रहे थे। आखिर कुत्ता किसका वनाया हुआ है ?

लिखा है, एक वार इनका वजू गडवड होगया। इन्होने तयम्मुम किया। तयम्मुम अनुमानत. उस सफाई को कहते हैं जो जल के अभाव मे रेत आदि से की जाती है। लोगो ने पूछा—दजला (नदी) करीव है, आपने तयम्मुम क्यो किया ? वोले—"मुझे उम्मीद नही कि वहा पहुचने तक मैं ज़िदा रहूगा।" कैसी दिल हिलानेवाली मगर सच्ची वात थी !

जीवन के प्रति इनके मन मे जहा इतनी गहरी आस्था थी वहा ईश्वर के प्रति इनकी प्रेमातुरता और निश्चयात्मकता भी असाधारण थी। सरी सक्ती से इन्होने एक वार कहा कि "अगर तुम्हे कुछ मागना हो तो कहना—ऐ अल्लाह, वहक मारूफ करखी, मुझको यह चीज अता कर। जरूर दुआ कवूल होगी।" अवुल हसन खिलकानी ने भी कुछ ऐसी ही वात कही थी और सच निकली।

एक वार का ज़िक्र है कि मारूफ करखी वहुत खुश होकर कुछ खा रहे थे। लोगो ने पूछा—"ऐसी क्या चीज़ आप खा रहे हैं, जो इस कदर खुश हैं ?" वोले—मैं अल्लाह का मेहमान हू, जो वह देता है वही खाता हू और इसीलिए खुश हू।" कहते थे—"तमाम चीज़े खुदा से मागो और खुदा पर तवक्कुल करो, ताकि खल्क तुम्हे नुकसान न पहुचा सके।"

नफ्स से सत मारूफ करखी कहा करते थे कि मुझे खलासी दे, ताकि तुझे रिहाई हासिल हो। इनकी सूक्ति है कि "जो हर हाल मे अल्लाह को याद करता है वह अल्लाह का दोस्त है और जिसको अल्लाह दोस्त वनाता है उस पर खैर का दरवाज़ा खोल देता है और शर का दरवाज़ा वन्द करता है।" वेहूदा गुफ्तगू करना, इनके अनुसार, गुमराही की निशानी है।

यह कहते—"ख्वावे-गफलत से होशियार रहना हकीकते-वफा की निशानी है। अच्छे ऐमाल के वगैर वहिश्त का तालिब होना और सुन्नत के नियमो का पालन किये बिना शफकत की उम्मीद करना गुनाह है। खुदा के अहकाम की नाफरमानी करके रहमत की उम्मीद करना नादानी है।" और, "ज़ाहिरा आशिक को फायदा नही होता।"

इनकी कुछ सूक्तियां ये हैं—"ख..क से नाउम्मीद होकर हर चीज़

खालिक से मागनी चाहिए। शर और वदी की तरफ से आख बन्द कर लो। मदह् (प्रशसा) और हिजो (निन्दा) खल्क की न करो, अर्थात् दुनिया के लोगो की न तो निन्दा ही करो और न प्रशसा। क्यो ये दोनो ही व्यर्थ की वार्तें हैं और उससे भी वुरी बात यह है कि ये वृत्ति दुनिया की ओर ले जाती हैं।"

इनकी यह सूक्ति जितनी ही सरल उतनी ही सच्ची है ! दुनिया की मुहब्वत तर्क करनेवाला अल्लाह की मुहब्बत का मज़ा पाता है और यह मुहब्वत उसी के फज़ल (कृपा) से मिलती है। आरिफ यानी ब्रह्मज्ञानी सरापा-नेमत है, उसे माल और दौलत की ज़रूरत नही। कोई भी काम करते समय, यहा तक कि कोई विचार करते समय भी, यह ख़याल रखो कि अल्लाह देखता है।

इनका कौल है कि इन तीन चीज़ो मे जवामर्दी है—(१) वफाए-बे-ख़िलाफ, (२) सताइशे-वेजूग और (३) अताए-बेसवाल। पहली बात का भाव यह है कि जिसके साथ मित्रता की जाय उसके प्रति हमेशा वफादार रहे। दूसरी बात का आशय है कि गुण की प्रशसा हमेशा करनी चाहिए। यह नही कि किसी ने अहसान किया तो उसके गीत गाने लगे। इतना ही नही, यदि ऐसा मौका आ पडे कि जो अच्छा गुणवान् आदमी है, उसके द्वारा, आने या अनजाने अपना कोई अहित भी हो जाय तब भी उसके गुणो की तारीफ करने से न चूके। तीसरी बात का अर्थ यह है, देने की खूबी यह है कि हाजतमन्द सवाल करे, उससे पहले ही उसकी इच्छा पूरी कर दी जाय, ताकि उसे मागने की नदामत न उठानी पडे।

कहते—"अल्लाह जिसकी गिरफ्त करता है उसे मुतीए-नफ़्स कर देता है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि जब वृत्ति नपस के अनुकूल चले, निम्नता औरशारीरिकता की ओर जाने लगे, तो समझना चाहिए कि ईश्वर अप्रसन्न है और वह दड दे नही रहा है तो दड के मार्ग पर ला पटका है, जिससे हटने मे ही कल्याण है।

इनकी सूक्ति है—"हकायत का एतबार करना, दकायत का वयान करना और खल्क से नाउम्मीद होना तसव्वुफ है।" इसका अभिप्राय यह है कि ईश्वर के वचन पर विश्वास करना, धर्म और ज्ञान के जो गहन तत्त्व

कह रहे हैं, 'उस भिश्ती की दुआ की वजह से अल्लाह ने बख्श दिया।'

: १२ :

इमाम अहमद हम्बल

संत इमाम अहमद, साहबे-रियाजत, मुत्तकी और परहेजगार थे। यह अपने खालिक के जितने अधिक प्यारे थे, ऐसा लगता है, खलकत के एक हिस्से को उतने ही खारे लगते थे। इनका जीवन उपन्यास की तरह रोचक है। उसमे घटनाओ का वैचित्र्य और वैशिष्ट्य है, ज्ञान की ऊची उडानें हैं प्रार्थना की तात्कालिक स्वीकृति से आनन्दोन्नयन और श्रद्धाभिवर्धन दृष्टिगोचर होता है और इनकी अन्तिम यात्रा ने जो अदभुत काम कर दिखाया, वह पूरी एक फौज के लिए भी सरल नही।

इनके जीवन की एक दुखमय किन्तु चमत्कारोत्पादक घटना का वर्णन संत सूरी सक्ती ने किया है। कहते है कि बगदाद के कुछ लोग इनके सख्त खिलाफ थे। वे हमेशा इन पर तानाज़नी करते रहते थे। खलीफा भी उनका पक्ष लेकर इनके खिलाफ हो गया। ऐसा मालूम होता है, उन दिनो मुसलमानो मे एक जमात कुरान को मखलूक मानती थी और दूसरी गैरमखलूक। यह समस्या वैसी ही थी जैसी यह कि वेद पौरुषेय है या अपौरुषेय।

अहमद हबल उन लोगो मे थे जो कुरान को वेद की ही तरह गैर-मखलूक अर्थात् अपौरुषेय मानते थे। विरोधी दल ने निश्चय किया कि इनसे कुरान को मखलूक कहलाकर छोड़ेंगे, चाहे इसके लिए इनके साथ जबरदस्ती ही क्यो न करनी पडे। फलत. खलीफा के दरबार मे ले जाकर इन्हे शिकजे मे जकडकर पूछा गया—"कहो, कुरान मखलूक है या नही?" 'नही' मुह से निकलते ही इनपर मार पडनी शुरू हो गई। कहते हैं कि हजार कोडे मारे गए, पर यह अपने विचार से विचलित न हुए।

जब इनपर कोडे पड़ रहे थे तब इनका इजारबन्द (पैजामे का

नाडा) खुल गया। लेकिन तभी दो हाथ गैब से जाहिर हुए और इजार-बन्द को बांधकर गायब हो गए। मारने वालो ने यह करिश्मा जब अपनी आंखो से देखा तो उन्हें होश आया और उन्हे फौरन रिहा कर दिया। लेकिन इस बहादुरी से भी बडी बहादुरी यह थी कि जब लोगो ने पूछा कि 'चोट' पहुँचाने वाली कौम के लिए आप क्या कहते हैं ? तो बोले—"मुझे झूठा समझकर खुदा के लिए उन्होने मारा, मैं उनसे कयामत में भी बदले का तालिब न होऊगा।"

संत बशर हाफी को यह बहुत मानते थे। जब कोई शरीयत की बात पूछने आता तो यह उसे बता देते, लेकिन तरीकत का मसला अगर कोई पूछने आता तो कहते कि बशर हाफी से दरयाफ़्त करो। यही बशर हाफ़ी कहते कि इमाम अहमद हंबल मुझसे अच्छे हैं, क्योकि मैं फकत अपने ही लिए अकले-हलाल (शुद्ध अन्न) हासिल करता हूं जबकि वह संबधित व्यक्तियो के लिए भी अकले-हलाल हासिल करते हैं। और इस हलाल रोजी के बारे मे यह कितने सावधान रहते थे, यह बात नीचे की घटना से स्पष्ट हो जायगी।

इनके एक पुत्र थे। उनका नाम सालह था। उनके आचार-विचार बड़े ही अच्छे थे और उनकी वृत्ति भी धार्मिक थी। किसी समय वह इस्फ़-हान के काजी थे। इमाम अहमद के नौकर ने सालह के बावर्चीखाने से खमीर लाकर रोटी बनायी और इनके सामने परोस दी। संत ने पूछा, "आज रोटी इतनी फूली क्यो ? नौकर ने सब बात बता दी। बोले—'वह काजी रह चुका है, उसके यहां से लाये हुए खमीर से लाकर रोटी बनाई इसलिए खाने के काबिल नहीं। कोई मांगनेवाला आये तो कह देना 'आटा हंबल का और खमीर सालह का है, चाहो तो रोटी ले लो।'"

अहमद हंबल काज़ी के काम को अच्छा नही समझते थे। और भी कुछ लोग इस विचार के पाये जाते है। काज़ी का काम मुंसिफ़ का काम है। जान में या अनजान में बहुत-सी भूलें हो सकती हैं और हो ही जाती हैं। बेगुनाहों को फांसी दे दी जाय, यह कोई अनहोनी बात नहीं है। दुनिया को छोड़नेवाला संत उसकी चीज लेकर उसके पाप का भागी क्यों बने ? संत ने वह रोटी नही खायी। कोई भिखारी भी उसे लेने न आया।

आखिरकार वह दरिया मे डाल दी गई।

सत अहमद कहा करते थे कि जिसके पास चादी की सुरमेदानी हो उसकी सोहतब भी इख्तयार न करनी चाहिए। एक दिन इन्होंने कपड़े धोबी को धुलने के लिए दे दिए, इसलिए सफियान बिन ऐनिमा के पास उस दिन हदीस सुनने न जा सके। सत ने यह देखने के लिए कि आज क्यों नही आये, एक आदमी भेजा। इन्हे नंगे-बदन बैठा देख उस आदमी ने कहा कि मैं कपडे लाये देता हू, आप पहन लें। पर यह राज़ी न हुए। एक किताब दी और कहा—"इसे बेचकर दस गज़ टाट ले आ।" वह बोला, कता (मुलायम सुन्दर वस्त्र) ले आऊं? बोले—"बस, टाट काफी है।" भला जो चादी से भागे, वह कता कैसे पहने?

इनकी परहेज़गारी (सयम) का एक शानदार तेवर और भी देखा गया। कहते हैं कि यह बगदाद जबतक मे रहे, वहा की कोई चीज़ न खायी। आटा भी मूसल नाम के दूसरे शहर से मंगाकर खाते थे। ऐसा क्यो? इनका कहना था कि बगदाद की जमीन को खलीफा उमर ने ग़ाज़ियो के लिए वक्फ कर दिया है। जो चीज जिसके लिए वक्फ हो, सिवा दें उसके दूसरे का उसमे हक नही। इसपर परशुराम की भूमिदान वाली कहानी स्मरण हो जाती है। आज इस बात को याद रखने की आवश्यकता है कि धर्मार्थ सम्पत्ति धर्मार्थ कार्यों मे ही लगे।

धर्म मे, सत्य में बडी शक्ति है। जो धर्म का पालन करते हैं उनपर ईश्वर की कृपा होती है। उनकी कमाई मे बरकत होती है। स्थूल पर ही दृष्टि रखनेवाले धोखा खाते हैं। सत अहमद को इसका अनुभव ईश्वर ने कराया। कही जगल मे जा रहे थे, राह भूल गए। वही एक आदमी बैठा देखा तो यह उसके पास जाकर राह पूछने लगे। शायद राह भूलने की बात सुनकर उस आदमी का दिल भर आया। वह फूट-फूटकर रोने लगा। अहमद ने समझा, यह भूखा है। इनके पास झोली मे खाने की कोई चीज थी, वह निकालकर उसे देने लगे तो वह क्रुद्ध होकर बोला—"ऐ अहमद! तू खुदा पर राज़ी नही जो खुदा की तरह रोजी देता है और खुद राह भूल जाता है।" अहमद ने अपने मन मे सोचा, 'या अल्लाह! दुनिया के गोशो मे तूने अपने ऐसे बदो को छिपा रखा है। वह आदमी

इनका खयाल समझ गया और कहने लगा—"अल्लाह के बंदे ऐसे हुए हैं कि अगर जमीन मे सोना होने को कह दें तो तमाम दुनिया सोने की हो जाए ।"

संत अहमद हवल कहते हैं—मैंने देखा तो तमाम जगल मुझे सोने ही का नज़र आता था । मुझपर बेखुदी-सी तारी हुई । उसी वक्त गैब से आवाज़ आई—"यह आदमी हमारा ऐसा महबूब वदा है कि यह कहे तो हम तमाम आलम को लुप्त कर दें । तू शुक्र कर कि हमने तुझे ऐसे बंदे से मिला दिया, लेकिन अब फिर तू कभी इसे न देखेगा।" संतो की जागत् आत्मा को प्रताडित करके और भी सजग बनाने के लिए ऐसे प्रसगो का आयोजन भगवान कभी-कभी कृपा करके करते रहते हैं।

इसका एक शिष्य रात को इनके यहा आकर ठहरा। इन्होने एक बर्तन मे पानी भरकर उसके पास रख दिया और खुद जाकर अपने स्थान पर रात-भर इबादत की। सुबह वह पानी रखा देखा तो उससे पूछा—"पानी तुमने खर्च नही किया ?" वह बोला—"मैं किस काम मे खर्च करता ?" सन्त ने कहा—"पानी से वुजू करके रात-भर अल्लाह की इबादत की होती। इल्म पढ़ने के बाद अगर उसपर अमल करना मंजूर न था तो इल्म क्यो हासिल किया ?" एक दूसरे शागिर्द ने सड़क से थोडी-सी मिट्टी लेकर दीवार से लगा दी तो उसे शागिर्दी से निकाल दिया।

जीवन का, आध्यात्मिक जीवन का और साधु-जीवन का, यह सजीव पहलू जबतक फिर व्यापक रूप से व्यवहार में दिखाई नही देता तबतक जीवन को एक विडम्बना और धर्म को उपहास की ही वस्तु समझा जायगा। रात-रातभर इबादत करना और दिनभर में हजार बार नमाज पढ़ना, ऐसी साधनाएं और इस तरह की तपस्याएं अब देखने-सुनने मे नहीं आतीं। लेकिन उठना है, आगे बढना है, कुछ सीखना और सिखाना है, तो उथले मन की ऊपरी आराधना से काम न चलेगा। क्यों न रात-दिन बैठकर, सौ बार, हजार बार, सन्ध्या-वन्दन किया जाय ?

किसी जरूरत से यह अपना तबाक (खाना बनाने का बर्तन) किसी दूकानदार के पास गिरवी रख आये। जब छुड़ाने गये तो उसने दो बर्तन लाकर सामने रख दिए और बोला—"मुझे मालूम नहीं, आपका तबाक

कौनसा है । इसमें जो आपका हो, पहचानकर ले लीजिए ।" लिखा है कि यह उठे और चले आए, कोई तबाक न लाये; क्योंकि दूकानदार को मालूम न था, सन्त भला तबाक को क्या पहचानें ? इनकी तो वही हालत हुई होगी कि जो उन सन्त की थी जिन्होंने अपनी दासी से कहा था, "ज़रा मेरी दासी को बुला दे।" तीस साल से नौकर थी, पर पहचानते न थे।

क्यो न ऐसे तल्लीन सन्तो की दुआ मे तासीर हो ? और वह तासीर दीखी। एक युवक की मा बहुत बीमार थी। हाथ-पैर मारे गये थे। उसने अपने बेटे से कहा—"इमाम अहमद साहब की खिदमत मे आओ और उनसे मेरे लिए दुआ की दरखास्त करो।" उसने आकर सन्त अहमद से सब हाल बयान किया। सन्त ने वुज़ू करके नमाज़ शुरू की और वह जवान उठकर घर को रवाना हुआ। घर पहुचकर देखा तो उसकी मा बिलकुल अच्छी थी। उसीने उठकर दरवाज़े की कुण्डी खोली।

ताज़ीम (आदर-सत्कार) भी कोई चीज़ है। एक ज़माना था कि इसकी बडी कद्र थी। अब 'ईक्वलिटी' (समानता) का बोलबाला है। ताज़ीम गई, फिर वह दिल से निकलने वाली शफकत-भरी (ममता से पूर्ण) दुआ कहा ? एक नौजवान ने सन्त अहमद की ताज़ीम की और फल पाया। सन्त दरिया किनारे वुज़ू कर रहे थे। पास ही कुछ बुलदी पर एक जवान वुज़ू कर रहा था। उसकी नज़र जो गई तो उठकर दूर नीचे वुज़ू किया। मरने पर किसी ने उसे स्वप्न मे देखा तो हाल पूछा। बोला, "अल्लाह ने मुझे बख्श दिया, उस ताज़ीम की वजह से जो मैंने वुज़ू के वक्त की।"

इनकी कुछ सूक्तिया यहा देने लायक हैं। किसीने इनसे पूछा—"जुहद क्या है ?" बोले —"अवाम का जुहद तर्के-हराम है, खास लोगो को जुहद हलाल मे ज्यादती की हिर्स न करना और आरिफो का जुहद अल्लाह के सिवा और सब बातो को छोड देना है।" अभिप्राय यह है—साधारण जुहद (त्याग और पवित्रता) यह है कि बुरी बातो से बचा जाय। विशिष्ट व्यक्तियो का जुहद यह है कि जो विदित और अच्छी चीज़े हैं उनमे भी सयम रखे, लोभ न करें। और आरिफो (ज्ञानियो) को तो अल्लाह के सिवा और किसी चीज़ से वास्ता ही न रखना चाहिए।

किसीने पूछा—"जो जाहिल सूफी मस्जिद मे मुतवक्किल (ईश्वर के भरोसे) बैठते हैं वे कैसे हैं?" बोले—"उन्हें अच्छा समझें, क्योकि इल्म की वजह से ही उन्होने तवक्कुल इख्तियार किया है।" लोगो ने कहा—"वो रोटी के टुकडे के तालिब हैं।" बोले—"दुनिया मे कोई ऐसा फिरका नही जो रोटी का तालिब न हो।" गरीब फ़कीर को अक्सर हिकारत की नज़र से देखा जाता है, मगर जाननेवाले जानते हैं कि असली लाल और रत्न इन्ही गुदडियों मे छिपे मिलेंगे और इस ग्रन्थ में ऐसे कई प्रसग आये भी हैं।

यहा पर पखे से वरक (पृष्ठ) उलटकर इमाम शाफी की जीवनी सामने आ गई। उसमें इमाम अहमद का जिक्र है। भक्त अहमद मानते थे, जो जानबूझकर एक नमाज छोड देता है वह काफिर हो जाता है। शाफ़ी कहते, वह काफिर तो नही हो जाता, पर काफिर से भी ज्यादा अजाब (पाप-दण्ड) का मुस्तहक हो जाता है। शाफी ने अहमद से पूछा—"जब वह काफिर हो जाता है तो मुसलमान क्योकर हो सकता है? अहमद बोले—"नमाज अदा करे।" शाफी—"काफिर की नमाज दुरुस्त नही।" अहमद खामोश हो गये। तर्क मे शाफी जीतते से दीखते हैं।

यो मतलब दोनों ही सतो का यह है कि भक्त के लिए एक भी समय नमाज छोड़ना उचित नही। इसी बात को दोनो ने प्रभावशाली ढग से कहने का उपक्रम किया है। प्रभाव डालने के लिए कुछ अतिशयोक्ति से काम लेना होता है। इसीलिए सत अहमद कहते हैं, काफिर हो जाता है। सत शाफी उसे काफिर होने से तो बचाते हैं, पर अजाब उस पर काफिर से भी ज्यादा डाल देते हैं और तर्क के बल पर सत अहमद को निग्रहस्थान मे ले लेते है। पर प्रश्न है कि जब अच्छे मुसलमान पर भी एक गलती की वजह से काफिर से ज्यादा अजाब आना है, तो बेहतर कौन?

बेहतर काफिर है कि मुसलमान? जब मुसलमान पर काफिर से ज्यादा अजाब हो सकता है तो कोई मुसलमान बने ही क्यों? फिर काफिर की नमाज दुरुस्त नही, इसका क्या मतलब? 'दुरुस्त नही' मे संत शाफी का अभिप्राय यही हो सकता है कि मकबूल नही। काफिर वह जो कुरान को न माने और नमाज में समस्त कुरान की ही आयतें पढ़ी जाती

होगी। जो क़ुरान को नही मानता वह कुरान की आयतें पढेगा ही क्यो? किन्तु यदि सत शाफी का मतलब यह है कि काफिर यानी गैरमुस्लिम की प्रार्थना ईश्वर कबूल नही करता तो यह बहुत बडी बात है।

एक बुज़ुर्ग का कहना है कि इमाम अहमद की दो दुआए थी और दोनो कबूल हुईं। इनकी एक दुआ यह थी कि बेईमान को ईमान दे और दूसरी यह कि ईमानदार का ईमान न छीन। बेईमान को ईमान देने का तो सीधा अर्थ यह है कि जो मुसलमान नही हैं उनको मुसलमान बनने की तौफीक दे। यह दुआ इस तरह पूरी हुई कि इनके मरने पर दो हज़ार यहूदी मुसलमान बने। 'ईमान न छीन' का अर्थ यह है कि जो मुसलमान है उसकी अपने धर्म मे, ईश्वर में और सत्कर्म मे श्रद्धा अडिग बनी रहे।

उन्ही बुजुर्ग का कहना है कि इनकी पहली दुआ तो इनके मरने के बाद यहूदी मुसलमान बने इस तरह पूरी हुई। दूसरी दुआ इनके जीवन-काल में ही कबूल हुई। ईमान के सम्बन्ध मे यह स्वय कितने चिंतित थे, इसका दिग्दर्शन इनके अन्तिम क्षणो मे बहुत ही स्पष्ट रूप से होता है। इनके साहबज़ादे ने मृत्यु के वक्त हाल पूछा तो कहा—"जवाब का वक्त नही है। दुआ करो कि अल्लाह मुझे बा-ईमान उठाये।"

मरणासन्न स्थिति मे अपने पुत्र के पूछने पर यह तो कहा ही कि "दुआ करो, अल्लाह मुझे बा-ईमान उठाये," पर साथ ही एक विचित्र बात यह कही, "शैतान खड़ा मुझसे कह रहा है, 'ऐ अहमद, तू ईमान सलामत लिये जाता है, इसका मुझे अफसोस है।' मैं कहता हू, जब तक दम निकल न जाये, मुझे बा-ईमान मरने की उम्मीद नही है। अभी एक दम बाकी है और यही खतरनाक है। अल्लाह अपना फजल करे!' यह कहकरे अपने प्राण त्याग दिये और ईमान को खतरे से बाहर ले गये।

कहते हैं कि इनके जनाज़े पर परिंदे रोते थे। पक्षियो का इनके प्रति ऐसा आकर्षण देखकर दो हज़ार यहूदियो ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया। स्वप्न मे मुहम्मद बिन काज़िमाने इन्हे देखा तो पूछा—"अल्लाह ने आपके साथ क्या किया?" बोले—"गो मैंने दुनिया मे हज़ारो कष्ट उठाये लेकिन कुरान को मखलूक नही कहा, उसके बदले मे अल्लाह ने मुझे बख्श दिया और बेहद मर्तबे अता फरमाये। अल्लाह ने फिर मुझसे कहा, जो दुआ

सफियान सूरी ने बताई है वह पढ़। अल्लाह की आज्ञानुसार मैंने वह दुआ पढकर सुनायी जो सफियान सूरी ने बतायी थी और जिसका अर्थ यह है —'ऐ अल्लाह! बहुत चीजे तेरी कुदरत मे है, तू कादिर मुतलक सर्व-शक्तिमान है। तमाम चीजे जो अच्छी है मुझे दे और मुझसे न पूछ कि क्या मांगता है।' यह सुनकर अल्लाह ताला ने कहा—"ऐ अहमद, यह जन्नत है, तू इसमे दाखिल हो', और अनन्त दयालुता के लिए कृतज्ञता से परिपूर्ण हृदय से मै जन्नत मे दाखिल हुआ।"

: १३

मुहम्मद समाक

संत मुहम्मद समाक आबिद जाहिद अपने समय के लोकप्रिय इमाम थे। लिखा है कि संत मारूफ करखी ने इनके सत्संग और उपदेशो ने खूब लाभ उठाया। इतिहास-प्रसिद्ध संत-प्रेमी खलीफा हारू रशीद इनका बहुत सम्मान करता था। एक बार इन्होने उससे कहा था—ऐ, हारू रशीद, तेरे सारे गुणो मे तवाजय का गुण श्रेष्ठ है।

तवाजय का साधारण अर्थ तो प्रसिद्ध ही है; पर संत समाक की दृष्टि में, अपने को एकदम अकिंचन समझकर दूसरो का सच्चे जी से सम्मान करना ही तवाजय है। यह कहते थे कि पहले के लोग मिस्ल दवा के थे कि मरीज उनसे शफा पाते थे। इस जमाने के लोग दर्द हैं कि अच्छे-भले आदमी को बीमार कर देते हैं। कहते थे कि अच्छा तरीका कुरान हदीस पर अमल करना है।

कहते थे कि एक जमाना वह था कि वाइज (धर्मोपदेशक) उपदेश देना मुश्किल समझते थे जैसा कि आजकल के लोग इल्म पर अमल करना दुश्वार समझते हैं और एक वक्त था जब वाइज कम थे, जैसे अब आलिम कम हैं। इनकी एक सीधी-सच्ची और अच्छी-सी सूक्ति यह है—तमा

बहुत बुरी चीज़ है। तमा का साधारण अर्थ लालच है और सभी जानते हैं वह बुरी चीज़ है। परन्तु तमा (लालच) का जो विशेष अर्थ है उसकी ओर भी दृष्टिपात करना आध्यात्मिक लोक के पथिक के लिए श्रेयस्कर ही नही अनिवार्य-सा है जिस चीज की आवश्यकता नही उस ओर मन को न जाने देना, फिर वह चीज चाहे अच्छी ही क्यो न हो। बुरी चीज़ से तो एकदम दूर रहना ही चाहिए, पर जो चीज़ अच्छी और आवश्यक है उससे भी मतलब भर वास्ता रखना और उपयोग के समय भी वितृष्ण रहना।

फिर जितनी इन्द्रिया हैं उतने ही प्रकार के प्रलोभन है। उन सभी से बचकर, सभलकर, सतर्क रहकर चलने की आवश्यकता है। यदि किसी एक इन्द्रिय को सयम मे रखा और अन्य इन्द्रियो के प्रति असावधान रहे, या सभी ओर से सचेत रहकर कभी किसी एक इन्द्रिय के विषय मे प्रमाद करना, यह चोर के लिए एक या अनेक दरवाज़े खुले छोडकर उसे निमन्त्रण देने के समान है।

वस्तुस्थिति तो यह है कि सभी दरवाज़े बन्द रहने पर भी चोर घर मे घुस आता है। सभी इन्द्रियो के प्रति पर्याप्त सतर्कता रखने पर भी जीवन मे सदा कुशल ही रहे, ऐसी आशा करना वस्तुत विरोधी शक्ति की अवमानना करना है। प्रमाद या असावधानी किसी एक या अनेक इन्द्रियो के सम्बन्ध मे तो है ही, पर पूरी-पूरी सावधानी होने पर भी कुछ हो जाये तो भी वृत्ति लोभ से ऊपर रहे।

'तो भी वृत्ति लोभ से ऊपर रहे' यह कुछ विचित्र-सी बात लगेगी, पर विचार करने पर उसकी विचित्रता बुद्धिगम्य ही प्रतीत होगी। सभी प्रकार की सावधानी बरतने पर, जीवन को सर्वथा सुसगत रखने पर भी, यदि कोई अवाछनीय घटना घटित हो उठती है तो उसके लिए अपना मानसिक सतुलन खो बैठना उच्चस्तरीय लोभ की वृत्ति का ही प्रदर्शन नही, बल्कि इस ससार के शासक के प्रति एक प्रकार का विद्रोह भी है।

लोभ बुरा क्यो है? इसलिए कि वह तुम्हारे मन को किसी स्थूल या सूक्ष्म प्रकार के भौतिक पदार्थ से आबद्ध करके उसे ईश्वर से विमुख करने का प्रयत्न करता है। चिडिया चुग्गा चुगने आती है। मधुमक्खी रस का पान करने आती है, पर यदि उसके पख घिस जाते है तो उड नही सकती।

चुगगा चुनना या मधुपान बुरा नही; बुरा है पंखों को विषय से लिप्त जाने देना ।

मन ईश्वर की सम्पत्ति है । काम यह है कि लाख विघ्न-बाधाओ के होते हुए, हजार दुश्मनो के रहते, भी इस मन की गति अविच्छिन्न रूप से ईश्वर की ओर हो । संसार के पदार्थ उसे अपनी ओर मोड कर ईश्वर से विमुख करने का प्रयास करते हैं । इनसे बचना अच्छा, यह सब जानते हैं । पर सुसयत संयम के किसी दैवी आघात से टूटने पर रो उठना सयम मे लोभ प्रदर्शित करना है ।

सन अहमद हवाई का कहना है कि एक बार यह बीमार पडे तो इनके इलाज का लिए मैं एक आतिश-परस्त (अग्निपूजक) हकीम को बुलाने जा रहा था । राह मे एक बुजुर्ग मिले, वह बोले—"आश्चर्य है कि खुदा का दोस्त खुदा के दुश्मन से सहायता मागे । तू लौट जा और सत अबु अहमद समाक से कहना कि दर्द की जगह हाथ रखकर 'अउज बिल्ला मल उला शैतान उल रहीम' वाली आयत पढें ।"

अहमद हवाई कहते हैं कि उनकी बात मानकर मैं वापस लौटा और सत अबु समाक से सारा हाल बयान किया । उन्होने जैसे कहा गया था वैसा ही किया और तत्काल ही बिल्कुल स्वस्थ हो गए । मुझे चकित देख-कर वह बोले—"यह बुजुर्ग और कोई नही, समय-समय पर भक्तो के मन को निम्नता की ओर जाने से रोक कर ईश्वरोन्मुख करने वाले हजरत खिज्र ही थे ।"

अपनी अतिम अवसन्न अवस्था मे यह कहते सुने गए, "या अ[illegible], तू जानता है कि मैं गुनाह करते वक्त ही तेरे दोस्तो को दोस्त रखता था । उनके बदले मे मुझे बख्श दे ।" यह संत सारी जिन्दगी मुजर्रद (ब्रह्मचारी) रहे; अर्थात् विवाह न करके ब्रह्मचर्य जीवन व्यतीत किया । किसीने इनसे विवाह की बात चलाई तो बोले—"मैं दो शैतानो की ताकत नही रखता ।"

मुस्लिम संतो की सुप्रतिष्ठित परम्परा के अनुसार मृत्यु हो जाने के पश्चात् जब लोगों ने इन्हे स्वप्न मे देखा तो पूछा—"अल्लाह ने आपके साथ क्या किया ?" बोले—"उसने मुझे बख्श दिया । लेकिन जो सबसे

गृहस्थ को रजो-मुसीबत वर्दाश्त करने के एवज़ मे मिलता है वह दूसरे को नही मिलता।" एक नैष्ठिक ब्रह्मचारी के द्वारा संसार के लोगो को यह सदेश आयत-सा लगेगा।

ससार मे अक्सर यह देखने को मिलता है कि जो गृहस्थ हैं वे गृहस्थी की अनन्त झझटो से परेशान होकर एकाकी जीवन की ओर ललचायी दृष्टि से देखते हैं और जिन्होने स्वेच्छा से या अनिच्छापूर्वक एकाकी जीवन व्यतीत किया वे एकाकी जीवन की नीरसता से उद्विग्न होकर विवाहित गृहस्थ जीवन का ही उन्मुक्त हृदय से गुणगान करते हुए देखे जाते हैं।

स्वर्गस्थ ब्रह्मचारी के द्वारा गृहस्थ की तपस्या का गुणगान और श्रेष्ठ-तत्वसस्थापन अत्यधिक भार से दबे गृहस्थो के लिए निश्चय ही ढाढम बधानेवाला है और वे उससे सत्साहस की प्रेरणा ग्रहण करें तो यह कल्याण-कारी ही होगा। पर ब्रह्मचारियो को अपने मन मे स्वीकृत मार्ग से विच-लित होने की भावना पैदा होने देना निश्चय ही एक भयकर भूल होगी।

वस्तुत नैष्ठिक ब्रह्मचारी का स्थान स्वर्ग मे ही नही हो सकता, वह ऊपर, उससे कही वहुत ऊपर, ब्रह्मलोक मे सस्थित होता है जहा हूरो की बलाए उसे घेरे हुए नही फिरती। ब्रह्मचारी वैरागी है और वैराग्य की योगसूत्र मे व्याख्या इस प्रकार है—"इह अमुत्र विषयवितृष्णस्य वशीकारसज्ञा वैराग्यम्।"

१४

अबु सुलेमान दाराई

मुल्क स्याम मे दारा नाम का एक नगर है। सत अबु सुलेमान वही के रहने वाले थे, इसीलिए लोग इन्हे अबु सुलेमान दाराई कहते थे। यह शरीयत और तरीकत दोनो के अच्छे जानकार और विद्वान् पुरुष थे।

अहमद हवाई इनके प्रमुख शिष्य थे। अपने इन्ही ईश्वर-भक्त शिष्य की आनन्दमयी आध्यात्मिक अनुभूति पर इन्होने जो अपनी सम्मति प्रकट की, उससे यह अनुमान किया जा सकता है कि इनकी अपनी निजी आन्तरिक स्थिति कितनी उत्कृष्ट रही होगी।

अहमद हवाई ने इनसे आकर कहा कि एक बार रात को मैंने खिल-वत अर्थात् एकान्त मे नमाज़ अदा की तो मुझे बहुत राहत मिली। बात सुनकर सत अबु सुलेमान बोले—"तू अभी ज़ईफ (वृद्ध) है। कमज़ोर है। तुझे खिलवत और ज़िलवत की कैफियत मालूम नही। खिलवत हो या ज़िल-वत, कोई चीज़ मर्दे-हक को अल्लाह से रोकने वाली नही।" बात सच है। प्राय लोग आराधना के लिए एकान्त खोजते फिरते है और यह अच्छा और स्वाभाविक भी है। जिनका मन अभी आराधना की पिछली सीढियो पर ही है उनके लिए एकात परमावश्यक है, क्योकि अशान्त, असंयत और अवशीभूत मन स्वत ही उद्विग्न रहता है और जब चारो ओर का वाता-वरण उद्वेगकारी और अशान्ति से पूर्ण हो जाता है तब भक्ति, आराधना या योग मे मन को लगाना कठिन क्या असम्भव-सा ही है। इसलिए मन को एकाग्र करके साधना की इच्छा करने वाले के लिए मन सबसे पहली आवश्यकता यही प्रतीत होती है कि शात-एकान्त स्थान ढूढे। पर वह व्यक्ति कि जिसका मन शात और वशीभूत है, जो शीघ्र ही किसी बाह्य अवरोध से उद्विग्न होने से इन्कार कर देता है, इतना सुसस्कृत हो उठता है कि एकान्त हो अथवा भीड-भाड, खिलवत हो या ज़िलवत, चारो ओर मनोरम शाति छायी हो या तोपो की गडगडाहट हो, अपना काम एकरस होकर करता रहता है। उसका तार टूटता नही। ऐसी स्थिति निश्चय ही बड़ी अभिनदनीय है और उसीकी ओर सत अबु सुलेमान दाराई अपने शिष्य अहमद हवाई का ध्यान आकर्षित करते हुए देखे जाते हैं।

ऐसा व्यक्ति खिलवत मे अपने आराध्यदेव का शात-सौम्य स्वरूप देखता है, ससार की नज़रो से छिपा हुआ अपने प्रेमी से यथारुचि प्रेमा-लाप करता है। और जब ज़िलवत मे आता है तो भी प्रभु को भूल नहीं जाता, उससे दूर भी नही जा पड़ता, प्रत्युत उल्लसित नयनो से अपने प्रभु का सुविशाल ऐश्वर्य देखकर गद्गद हो उठता है और कभी-कभी बाह्य की

ओर दृष्टिपात किये बिना ही प्रभु प्रीतम से अपने राज़ो-नियाज़ की बाते वैसे ही जारी रखता है जैसे और कोई कही हो ही नही।

सत अबु सुलेमान ने एक बार रात को ईश्वराराधन के पश्चात् प्रार्थना के लिए हाथ उठाये, किन्तु शीत की अधिकता के कारण अपना एक हाथ बगल मे दबा लिया। उसी रात उन्होने स्वप्न देखा कि कोई कह रहा है—"ऐ सुलेमान! जो हाथ तूने दुआ के लिए फैलाया था उसको हमने उसका सबाब दे दिया, यदि दूसरा हाथ भी तूने फैलाया होता तो उसका पुण्य भी तुझे मिलता।" उस दिन से दुआ के लिए दोनो हाथ उठाना इन्होने ज़रूरी समझ लिया।

असावधान को सावधान करने का स्वप्न एक अच्छा साधन था और सत अबु सुलेमान को एक बार चेतावनी दी गई, ज़रा मौलिक ढग से। लिखा है कि एक वार यह गाफिल होकर सो रहे थे। करीब था कि वजीफे का वक्त फौत (व्यतीत) हो जाय। ख्वाब देखा कि एक हूर कह रही है, "पांच सौ सालो से मैं तुम्हारे लिए आरास्ता की जा रही हू और तुम ऐसे गाफिल सो रहे हो कि किसी वात का ध्यान ही नही।" सत अबु सुलेमान का कहना है कि मैं उठा और वज़ीफा पढा।

एक हूर का आविर्भाव इनके चित्त को उत्साहित करने के लिए एक बार और हुआ। लिखा है कि एक हूर को, जिसकी पेशानी खूब रौशन थी, देखकर सुलेमान ने पूछा—"यह रोशनी किसकी है?" हूर ने कहा—"एक रात तुम अल्लाह के खौफ से रो रहे थे। वे आसू उबटन की तरह मेरे मुह पर मल दिये गए। उसी की यह चमक और रोशनी है।" एक और सत के जीवन मे भी इसी प्रकार की घटना का उल्लेख है।

कभी-कभी किसी छोटी भूल का भी कितना बडा दण्ड मिलता है। लिखा है कि इन सत ने अपना यह नियम बना लिया था कि कही से रोटी लाये और उसपर नमक छिडक कर उसे खा लिया। एक बार नमक मे भूल से कही कोई तिल मिला रह गया और यह बिना देखे ही उसे खा गये। सत कहते हैं कि इस भूल की सज़ा मे पूरे एक साल तक मेरी यह हालत रही कि इबादते-इलाही मे कोई मजा न आता। राबिया को तो धमकी ही दी थी, मगर इनसे इबादत की लज्ज़त आखिर छीन ही ली।

इनका एक भक्त था। जब इन्हे किसी चीज़ की आवश्यकता होती तो उसे कह देते, वह इनकी आवश्यकता की पूर्ति कर देता। एक बार इन्होने उससे कुछ कहा तो वह बोला—तुम कब तक इस तरह मागा करोगे ? सत का कहना है कि उस दिन से मैंने खलक से मागना छोड दिया। यह इनका अन्दाज़ कुछ नया नही। कुम्हार हल्की-हल्की चोटें मारकर जैसे अपने बर्तन बनाता है वैसे ही परमेश्वर दिल पर चोट करके सत-जीवन का निर्माण करता है।

कितनी विचित्र, कितनी भयभीत, मन स्थिति संतो की प्राय. होती है। गीबत (पर-निंदा) का भय तो सतो की सस्कृति मे अत्यधिक है ही, क्योकि (निंदा) करना जिसकी निन्दा की जाय उसका मास खाने के बराबर है। पर सन्त दाराई ने गीवत से वचने का एक नया ढंग निकाला। बोले—"मैं खलीफाए-वक्त को बुरा समझता था। मगर कभी लोगो के सामने उसकी बुराई न की, इस खौफ से कि शायद लोग मेरे कौल को पसन्द करें और मैं उससे खुश होकर बेइखलासी की हालत में मर जाऊ।"

इन्होने एक आदमी को देखा जो हमेशा ज़मज़म का पानी ही पीता था। एक दिन यह उससे बोले—अगर जमज़म सूख जाये तो तू क्या पीयेगा ? अत्यन्त प्रभावित होकर उस व्यक्ति ने कहा—"अल्लाह तुमको इस नेक नसीहत का बदला दे। मैं एक अरसे से ज़मज़म-परस्त था, अब मैंने उसकी परस्तिश (उपासना) तुम्हारी नसीहत सुनकर छोड दी।" ज़मजम मक्का मे एक मशहूर पानी का चश्मा है, जिसका पानी पवित्र माना जाता है।)

इनका कहना था कि जो व्यक्ति हज के वक्त ऐसा माल खर्च करता है जिसकी पवित्रता मे सन्देह हो, जो हलाल किस्म का माल न हो, उसे 'लबेक' (हाज़िर हू) कहते समय अल्लाह की तरफ से हुक्म होता है कि जब तक हराम माल हज मे खर्च करेगा तब तक तेरे लिए हुजूरी और नेकी नही है। यह बात बहुत अच्छी और स्मरण रखने योग्य है। पवित्र कार्य मे पवित्र धन (शुद्ध कमाई) ही लगे, इसका ध्यान भारत मे आज बहुत

भोजन के सम्बन्ध मे इनके वैसे ही परम्परागत विचार थे। कहते—अल्लाह सिवा अपने दोस्तो के किसी को भूखा रहने की कुदरत नही देता और भूखा रहना आखिरत की और पेट भरकर खाना दुनिया की कुंजी है। कहते—मैं दिनभर नमाज़ पढने से शब को हलाल खाने का एक लुकमा कम खाना अच्छा समझता हू। वैसे सूरज डूबने पर रात होती है, लेकिन ईमानदार के लिए पेट भरकर खाना रात होने के ही समान है।

कहते—दुनिया की वासनाओ से वही व्यक्ति विरक्त होता है जिसके दिल मे नूर (ईश्वर-प्रेम का प्रकाश) हो और वह नूर आखिरत की ओर मन को प्रेरित करके दुनिया की चीज़ो से एकदम दूर कर देता है। बोले—जो शख्स जिसे दोस्त समझता है उस पर सब्र नही कर सकता, वह उस चीज़ पर कैसे सब्र करेगा जिसको दोस्त ही नही रखता ? इनकी एक सूक्ति है—"मज़िले-मकसूद से पलट आने वाला मक़सद से महरूम रहता है।"

इनका कहना था—जिसे ज़िन्दगी मे थोड़ा इखलास भी हासिल हुआ हो वह खुशहाल है और इखलास इख्तियार करने वाला दुश्चिन्ताओ और दुर्व्यसनो से वचता है। ऐमाले-सालह थोडे हैं, अर्थात् शुभ कर्म गिनती मे बहुत नही हैं, तथापि उन थोडे से कामो को करने की भी प्रवृत्ति कम ही लोगो को होती है। बोले—सादिक अपने दिल का बयान करना चाहता है तो ज़बान उसकी मदद नही करती।

इनकी एक भली-सी सूक्ति है—"सिद्क दिल का ज़ेवर है।" कहते—सिद्क अर्थात सच्चाई की सवारी पर सवार होकर हक बात की तलवार हाथ मे ले और अल्लाह को इन्तहा अपने मकसद की जान। ईश्वर तक पहुचने की यह सैनिक भापा है। कुछ ऐसी ही भाषा उपनिषद् के उस मन्त्र मे है जिसका अर्थ है—"प्रणव ओंकार का जप ही धनुष है और यह आत्मा ही वह तीर है जिसे धनुष पर चढाना है। इस तीर का निशाना क्या है ? ब्रह्म।" इस ब्रह्म को आत्म-शर से सिद्ध करके 'शरवत् तन्मयो भवेत्।'

यह कहते—अल्लाह के ऐसे भी बन्दे है जो रज़ा के मामले के साथ सब्र पर नजर करते हुए शरमाते है, क्योकि सब्र मे साबिर गोया सब्र का

दावा करता है और रज़ा मरज़िए-इलाही है। सब्र को बन्दे के साथ और रजा को अल्लाह के साथ ताल्लुक हासिल है। रज़ा इसका नाम है कि बन्दा अपने आपको एकदम ईश्वर की मर्जी पर छोड़ दे। अपने दिल मे न तो वह जन्नत की ही तलब को घुसने दे, और न दोज़ख के खौफ को ही जगह दे।

वडी शान से यह कहते—अगरचे रजा की मैंने वू ही सूघी है, उस पर यह हाल है कि अगर अल्लाह तमाम आलम को दोज़ख मे डाले तो एक मजबूरी से और मैं खुशी से दोजख मे जन्मूगा। इससे भी ऊँची उडान भरकर कहा है—और अगर दोजख के सातो तवको का अजाव मेरी दाहिनी आख को दिया जाय तो कभी मुझे इसका खयाल न होगा कि वाई आख को क्यो न दिया। भाव यह है कि उसकी जो मर्जी हो वो करे, चू-चरा की गुजाइश नही।

कहते—खुदवीनी (अहकार) तर्क करने को तवाज़य कहते है और जो नफ्स को नही पहचानता, वह तवाज़य नही कर सकता। और जो शख्स दुनिया को हेच समझे वह बुरा नही हो सकता। इस आखिरी सूक्ति का भाव यो स्पष्ट हो जाता है कि जो दुनिया को और दुनिया की सारी वातो को हेच, नाचीज, ध्यान न देने योग्य समझता है, वह दुनिया की किसी चीज मे अपना मन न लगायेगा, फिर वह कोई बुरा काम करेगा ही क्यो ?

कहते—अल्लाह से दूर करने वाली चीजो को छोड देने वाले को जाहिद कहते है। और जुहद की अलामत यह है कि अगर तुझे अल्लाह तीन रुपये वाला कम्वल दे तो पाच रुपये वाले कम्वल की इच्छा न कर। कहते थे कि किसी के जुहद पर गवाही न हों, क्योकि जुहद तो दिल की चीज है और उसे दूसरा कोई क्योकर जान सकता है ? अलवत्ता परहेज़दारी ऐसी चीज है जो ज़ाहिर मे भी मालूम पडती है।

कहते—जुवानी जुहद भी दिरहम और दीनार की मुहव्वत से अच्छा है। जुवान वन्द रखने से इन्सान वहुत-सी वुराइयो से वचा रहता है। भूखा रहना इवादत के लिए ज़रूरी है। तमाम गुनाह दुनिया की दोस्ती करने से होते है। तसव्वुफ इसको कहते है कि इन्सान तमाम नफ्सीफो

को अल्लाह की ओर से आया जानकर सब्र करे और अल्लाह के अलावा दुनिया और आखिरत की जितनी चीजें हैं, उनसे एकदम विरक्त हो जाय।

कहते—दुनिया की बातो को सोचना यह आखिरत के लिए परदे का काम देता है, उससे दूर रखता है, मगर आखिरत की बातो का चिन्तन करने का फल अच्छा है। इनकी एक विचित्र सूक्ति है—इबादत मे इस कदर आफत दीखती है कि मासियत (पाप) की हाजत नही। यह सूक्ति तो सत-परम्परा के अनुकूल ही है कि आख से रोना और दिल से नुकबा (चोवदारो) की फिक्र करना चाहिए। वेकार उम्र गुज़ारने का गम इस कदर है कि तमाम उम्र रोयें तव भी गम खत्म न हो।

कहते—मुमलमान अर्थात् ईश्वरभक्त को चाहिए कि दिल को दुनिया की फिक्र से खाली करके अल्लाह की इवादत और अपने पापो पर रुदन-क्रन्दन किया करे। नेकी करनेवाले को वहुत जल्द अल्लाह उसका वदला देता है और जो शख्म सच्चे जी से वासनाओ को अपने दिल से निकाल देता है, अल्लाह अपनी मेहरवानी से नफसानी ख्वाहिशात (विषय-भोग की इच्छा) को उसके दिल से सदा के लिए दूर कर देता है। इबरत हासिल करने से इल्म वढता है और तफक्कुर (चिन्तन) से खौफ।

इनकी एक सार्थक सूक्ति यह है—जिस इवादत का हज तुझे दुनिया मे नही मिलता परलोक मे भी उसके पुण्य से वचित ही रहेगा, क्योकि हुसूले-हज (आनन्द की प्राप्ति) कवूल की अलामत है। भाव यह है कि जव कोई पुरुप साधना, आराधना या तपश्चर्या करता है और उनके करते समय या उनके पूर्ण होने पर आनन्द, उल्लास और शाति का अनुभव होता है तो समझना चाहिए वह साधना स्वीकृत हुई, अन्यथा मानना होगा कि कही भूल है।

खौफ और रजा, अर्थात् भय और आशा, पर इनकी कई सूक्तिया है। यह ईश्वर से भयभीत रहने के पक्षपाती थे। सत सालह का कहना है कि खौफ और रजा दोनो ही हो तो वेहतर, वरना उम्मीद तो होनी ही चाहिए। सत सुलेमान ने इसपर यो टीका की कि मेरे नजदीक खौफ की वजह से सव इवादतें होती हैं, रजा (उम्मीद) सव इवादतो से वेपरवाह

कर देती है। अल्लाह से डरना चाहिए कि आगे उसका अजाव है और आग से डरना चाहिए कि वह अल्लाह का अजाव है।

कहते—दुनिया और आखिरत सबकी असल ख़ौफ है। जब रजा खौफ पर गालिब होती है तो दिल पर आफत आती है और अगर हमेशा खौफ़ रहता है तो ज्यादा इबादत होती है। अपने शिष्य हवारी से इन्होंने कहा कि हकीम लुकमान ने अपने बेटे से कहा, खुदा से इस कदर डर कि उसकी रहमत से नाउम्मीद न हो जाये, और इस कदर उम्मीद रख कि उसके अजाब से बेखौफ न हो जाय।

एक व्यावहारिक सूक्ति यह है—जो व्यक्ति विवाह, यात्रा या बातें करता है उसका रुख दुनिया की ओर होता है, यद्यपि यह मानना होगा कि अच्छी सती स्त्री, धर्म-भाव से प्रेरित यात्रा और सच्ची बात धर्मसम्मत हैं। कहते—सोते हुए आरिफ (ज्ञानी) को अल्लाह वह मर्तबा देता है जो नमाज़ पढनेवाले गैरआरिफ को नही देता। जब आरिफ़ के दिल की आख खुलती है तो उसकी ज़ाहिरी आख बन्द हो जाती है। यानी तब वह सिवा खुदा के किसीको नही देखता।

कहते—अल्लाह की नजदीकी तब हासिल होती है जब बन्दा दीन और दुनिया को उसके लिए त्याग देता है। इनका कहना है कि अल्लाह मारफत को जिस्म बनाकर अगर जाहिर करे तो कोई उसके दीदार की ताब न ला सके और उसके सामने तमाम रोशनिया तारीक हो जाये। कहते—मारफत ख़ामोशी से नजदीक है। जिसका दिल जिक्रे-इलाही से रौशन हो जाता है उसको किसी चीज की हाजत नही रहती। जो तकलीफ़े इबादत मे आती है उन्हे वह नजात का जरिया समझता है।

कहते—दुनिया मे सब्र से अच्छी कोई चीज़ नही। सब्र की दो किस्मे हैं : एक उस चीज़ पर सब्र करना कि जिसकी मन मे इच्छा नही, दूसरे उस चीज़ पर सब्र करना जिसका नफ्स तालिब है अगर अल्लाह ने उसे मना किया है। कहते—नियामत पर शुक्र भेजना और मुसीबत आने पर सब्र करना—ये दोनो ऐसी चीज़े हैं जिनमें शर (बुराई) नही। खुदबीनी (अहकार) खिदमत की हलावत (मिठास) से महरूम होता है।

एक सूक्ति है—मैंने अपने को इतना खराब कर रखा है कि उससे

ज़्यादा सारी खल्क मुझे ख़राब नही कर सकती। लोकलाज का और लोकमत का अक्सर लोगो को बडा भय रहता है, मगर सत अवु सुलेमान ने यह तरकीब निकाली कि अपने दिल को इतना नीचा और नाचीज़ समझ लिया कि उससे अधिक नाचीज़ कोई चीज़ हो ही नही सकती। हकीम दुनिया छोडकर ही नूरे हिक्मत पाता है।

इनकी सूक्ति है—अल्लाह कहता है कि जो वन्दे मुझसे शर्म करते हैं मैं उनके ऐबो को छिपाता हू और उनकी ख़ताए माफ करता हू। प्रसिद्ध सत जुनैद वगदादी कहते थे कि यह इतने सजग थे कि अक्सर कहते, "कुछ अच्छे सूफियो के वचन मुझे वहुत पसन्द आये, पर मैं उनपर अमल तब तक नही करूगा जब तक दो गवाह (कुरान और हदीस) उनके ठीक होने का प्रमाण न दे दे।

अहमद हवारी का कहना है कि एक वार उनके गुरु सत सुलेमान दाराई बहुत ही साफ लिबास पहने हुए थे तो बोले—क्या ही अच्छा होता कि जैसे लोगो मे इस वक्त मेरा लिवास साफ है उसी तरह सवके दिलो से मेरा दिल भी साफ होता। दिल साफ होने की यह आरज़ू इनके दिल मे पैदा होना इनका दिल साफ होने की दलील है। मगर जिनका दिल साफ होता है वे अक्सर अपने दिल को और भी ज्यादा साफ देखने के लिए आरज़ूमद हो उठते हैं, क्योकि सफाई-ए-कल्व की कोई सीमा नही।

सत अवु सुलेमान अक्सर मनाजात मे कहा करते थे—या अल्लाह! जो शख्स तेरे अहकाम की पावदी नही कर सकता, वह क्योकर तेरी ख़िदमत के लायक हो सकता है? जो तेरी अवज्ञा करने से नही चूकता, वह क्योकर तेरा कृपापात्र हो सकता है? जिस दिल मे दुनिया की मुहब्बत होती है इसमे आख़िरत की मुहव्वत नही समा सकती।

जब इनका अत समय निकट आया तो लोगो ने कहा, "कुछ खुश-खवरी दीजिए, क्योकि आप ऐसे अल्लाह के घर जाते हैं जो बडा ही क्षमाशील है।" यह वोले—"बल्कि मैं ऐसे अल्लाह की खिदमत मे जाता हू जो छोटे-से-छोटे गुनाह का भी हिसाब मागता है। और वडे गुनाहो पर सख्त सजा देता है।" कहते है कि सत सुलेमान के ये अतिम शब्द थे

जिन्हे कहकर यह सदा के लिए मौन हो गये।

लिखा है, किसी ने इन्हे स्वप्न मे देखकर पूछा—अल्लाह ने आपके साथ क्या किया ? उत्तर दिया—उसने मुझपर रहमत और इनायत की, मगर खल्क मे मशहूर होना मुझे नुकसान पहुंचानेवाला हुआ।

स्वप्नादेशो से उस समय के सत निश्चय ही लाभ उठाते रहे होंगे। इन सत के द्वारा सत-समाज और धार्मिक व्यक्तियो को लोकैषणा से विरक्त होने की कल्याणमयी प्रेरणा दी गई है।

· १५ ·

हारस मुहासवी

सन्त अबु अब्दुल्ला खफीक ने किसी प्रसग पर अपनी सम्मति प्रकट करते हुए कहा था कि इल्मे-तरीकत को जानने और मानने वालो और उसपर तहे-दिल से अमल करने वालो मे पाच बुजुर्ग विशेषरूप से उल्लेखनीय और अनुकरणीय हैं। उनमे पहला नाम था इस जीवनी के नायक हारस मुहासवी का और दूसरा बगदादी का। सन्त हारस अपने समय के विद्वान सन्तो मे अत्यन्त सम्मान्य और अपनी विनम्रता और सज्जनता के लिए प्रसिद्ध थे। इन्होने बहुत-सी पुस्तकें लिखी हैं और यह हसन बसरी के समकालीन थे।

जीवनी-लेखक अत्तार का कहना है कि सन्त अबु अब्दुल्ला खफीक ने पीराने-तरीका के जो पाच नाम गिनाये उनमे सन्त रुवी, सन्त इब्न अता और सन्त उमरु बिन उस्मान मक्की के नाम भी सम्मिलित है। निश्चय ही ये सम्मान्य सन्त थे। मगर इसका अभिप्राय यह नही कि जो दूसरे और बड़े-बडे बुजुर्ग हुए हैं उनके जीवन-सन्देश से लाभ न उठाया जाय। वह कहते है कि खुद सन्त खफीक मिस्ल उन पाच बुजुर्गों के हैं। शिष्टता, विनम्रता और सौजन्य के कारण उन्होने अपने नाम का उल्लेख करना

उचित न समझा, महज इसी लिए उन्हे नज़र-अन्दाज़ करना ठीक न होगा ।

'अर्थे शुचि स शुचि '—सच पूछो तो यह पवित्रता की बडी खरी कसौटी है । धन-सम्पत्ति के सम्बन्ध मे जो पवित्रता के नियमो का पालन करता है वही वास्तव मे पवित्र है । धन और अन्न पर ही इस युग के मानव का आधार है, इसलिए जो उठना चाहता है उसे अपनी आय, अपने धन और अन्न के सम्बन्ध मे विशेष जागरूक रहना ही होगा ।

इन जीवनियो मे ऐसे सन्तो का उल्लेख आया है, जिनकी आत्मा शुद्ध भोजन के सम्वन्ध मे इतनी सतर्क और सचेत रहती थी कि यदि अनजान मे कभी ऐसा भोजन सामने आ जाता जिसकी पवित्रता असदिग्ध न होती तो उनके हाथ काम न देते और अगुलिया ठिठुरने लगती ।

सन्त-दर्शन के वाचक-वृन्द सन्त जुनैद के नाम से भली भाति परिचित हो चुके हैं । इन्ही सत जुनैद के यहा एक वार सत हारस मुहासवी पहुचे तो भूख तेज़ लग रही थी । जुनैद के पास जो खाना मौजूद था, वह उन्होंने इनके सामने परोस दिया । सत हारस ने जब खाने के लिए हाथ बढाया तो अगुलियो ने काम करने मे इन्कार कर दिया । इतने प्रसिद्ध और ऊचे दर्जे के सत के यहा भी भोजन के सदिग्ध होने के लक्षण इन्हे स्पष्ट दीखे, क्योकि इनकी अगुलिया ठिठुर गई । यह बडे धर्म-सकट मे पड गए कि न खायें तो जुनैद की दिल-शिकनी होगी । इन्होने अपने पर जब्र करके किसी तरह एक लुकमा मुह मे डाला तो सही, मगर वह हलक से नीचे नही उतर रहा था । मजबूरन उठे और बाहर जाकर वह लुकमा थूक दिया ।

कुछ दिनो बाद जुनैद जब इन्हे मिले तो इस तरह उठ जाने का कारण पूछा । हारस मुहासबी ने कहा—'मुझपर खुदा का अहसान है कि जब सदिग्ध खाने पर हाथ बढाता हू तो मेरी अ गुलिया ठिठुर जाती हैं । उस दिन भी यही हुआ, मगर तुम्हारी दिलशिकनी के खयाल से मैंने मजबूरन निवाला मुह मे रख लिया । हलक से न उतरा, तब बाहर जाकर मैंने उसे थूक दिया ।" यह वृत्तान्त सुनाकर हारस मुहासवी ने जुनैद से पूछा—"यह बताओ, खाना कहा का था ?" जुनैद ने जो बात थी सच-सच

कह दी—"पड़ोस मे एक शख्स के यहां शादी थी, वह खाना वहीं से आया था।" फिर जुनैद ने इनसे प्रार्थना की कि आज मेरे यहा चलिये। यह उनके साथ गये। उन्होने सूखी रोटी जो मौजूद थी इनके सामने रख दी। इन्होने उसे खाकर कहा—दरवेशो के लिए यही बहुत है। यह एक अच्छी कहानी है। इस समय इस देश मे जो साधु-जीवन मुरझा-सा रहा है उसके मूल मे इसी सच्चे सिद्धात की अवहेलना निहित है। शुद्ध आजीविका के बिना साधु-जीवन पनपेगा नही, यह याद रखना होगा।

साधु-जीवन का आधार निश्चय ही गार्हस्थ जीवन है। शास्त्र इस बात की स्पष्ट घोषणा करते है कि गृहस्थ-आश्रम पर ही अन्य आश्रमो का अवलम्बन है। अतएव जिस देश में गृहस्थ-जीवन शुद्ध नही, जहा लोग शुद्ध कमाई का ध्यान नही रखते, वहा ऊचे दर्जे का आध्यात्मिक जीवन पनपे, यह सम्भव नही। मानना होगा कि इस देश पर विशेष रूप से ईश्वर की कृपा है इसीलिए युगयुगान्तर से आध्यात्मिक जीवन की परम्परा धारा-प्रवाह रूप मे चली आ रही है, पर यदि जीवन को सतुष्ट और सजीव बनाना है तो साधु और गृहस्थ सभी को रोजी की ओर ध्यान देना होगा।

शुद्ध आजीविका और शुद्ध कमाई के भी कुछ नियम है। इस सम्बन्ध मे हारस मुहासबी बड़े जागरूक थे। इसका उदाहरण इस बात से मिलता है कि इन्होने अपने पिता की कमाई हुई सम्पत्ति, जो लगभग तीस हज़ार के थी, लेने से इन्कार कर दिया, क्योंकि इनके पिता कदरिया फिरके से सबधित थे और हदीस मे ऐसा निर्देश है कि कदरिया इस्लाम की दृष्टि से निंद्य और गर्हित हैं। इसलिए उनका पैतृक धन मुसलमानो को न लेना चाहिए। कहते है कि यह बहुत ही गरीब हालत मे बगदाद मे मरे, मगर वे तीस हजार दिरम नही लिये।

कहा इतना त्याग, इतना विचार, इतनी जागरूकता और साथ ही ईश्वरीय कृपा की अभिसधि, और कहा ऊपर से नीचे तक अस्त-व्यस्त समाज, अर्थशुद्धि की भावना का विचार के क्षेत्र मे न सही पर व्यवहार मे तो प्राय पूरा असम्मान और बहिष्कार। प्रतिफल प्रत्यक्ष है। तीस वर्ष पूर्व श्रद्धाभिभूत हो योगियो की खोज मे ऋषिकेश की ओर जाना हुआ। पर

देखा, साधु तो बहुत है पर उनमे वह तेजस्विता न थी जो किसी भी साधु के लिए प्राणो से भी प्रिय तथा सदा अक्षुण्ण बनाये रखने योग्य धन है। कलकत्ता के व्यापारी जैसे-तैसे जो धन कमाते हैं, उसी का कुछ अ श वहा भोजन-स्वरूप वितरित होता हैं।

जब तक समाज का जीवन बहुत ही उच्च स्तर तक न पहुचे, जब-तक वैश्य वर्ग अपने जीवन को अर्थ-दासता के गर्त से निकालकर फिर से धर्म-प्रधान न बनाये, तब तक यह आशा करना कि इस देश के व्यापारी अपने-अपने व्यापारो मे पूरी-पूरी ईमानदारी बरतेंगे, शुद्धता और प्रामाणिकता को अपने जीवन का ध्येय बनायेंगे, आकाशकुसुम के समान ही निराधार है। हा, एक बात हो सकती है जब तक धर्मवृत्ति का प्राधान्य जीवन मे अधिष्ठित नही होता तब तक दानी लोग इतना सद्भाव अवश्य बरते कि महात्माओ के निमित्त जो दान निकाला जाय वह अपनी कमाई के शुद्ध अश मे से ही हो।

यह कार्य मानसिक सकल्प के द्वारा ही हो सकता है। जो शुद्ध कमाई हो वही दान मे दी जाय, यह तो ठीक है, पर दान देते समय मन मे सकल्प करें कि हम अपनी कमाई का शुद्ध अ श ही धर्म-कार्य मे दान करेंगे। इससे यह लाभ होगा कि शुद्ध कमाई की भावना बढेगी और शुद्ध कमाई मे भी वृद्धि होगी। जो चीज बोयी जाती है वही उगती है। जब शुद्ध धन दान मे दिया जायगा तब दान-दाता को प्रतिफलस्वरूप शुद्ध धन ही प्राप्त होगा। आज ठीक इसके विपरीत है। बुरी कमाई का कुछ अ श क्षेत्रो मे दान करते हैं और साधु के साथ स्वय भी नीचे गिरते है।

यह बात निश्चय ही परमावश्यक और ध्यान देने योग्य है। इसे यो ही पढकर भूल जाना ठीक न होगा। व्यापारी को भय है कि ईमानदारी से वह बहुत धन न कमा सकेगा, इसीलिए वह स्वय पापिष्ठ होकर साधु को भी अपने पाप का भागीदार बनाता है। यही उसकी भूल है। जब इस देश मे धर्म का भाव था तब इस देश के वैश्य इतने समृद्ध थे कि विशाखा नाम की बुद्ध की एक शिष्या ने अकेले नौ करोड सुवर्ण-मुद्राए अपने महान् गुरु के लिए खर्च की थी। यह धन-राशि इतनी बडी है कि आज का धन-लोभी व्यापारी इतने बडे दान की कल्पना भी नही कर सकता।

यद्यपि ये जीवनिया बहुत-कुछ अ शो मे उपन्यास से भी मनोरंजक हैं, पर इन्हे इस रूप मे प्रस्तुत करने का अभिप्राय यही है कि ईश्वर की कृपा से जव इस्लाम अपने पूरे आध्यात्मिक ओज पर था, जव साधु और गृहस्थ एक-से-एक आगे वढकर ईश्वर की कृपा प्राप्त करने के लिए समुत्सुक थे, तव जो घटनाए घटी, तव जो आध्यात्मिक सौंदर्य परिस्फुरित हुआ, उससे प्रेरणा लेकर इस देश का गार्हस्थ और सन्यस्त, दोनो ही प्रकार का जीवन फिर से सजीवित होकर अपने उत्कृष्ट मार्ग पर दृढतापूर्वक चले और ससार का उचित रूप से मार्ग-दर्शन करे ।

सन्त हारस मुहासवी ने जीवन को ऊचे दर्जे पर ले जाने के लिए दस वाते वताई है—(१) किसी हालत मे अल्लाह की कसम न खाओ। (२) झूठ न बोलो। (३) किसी से वादा न करो और अगर करो तो उसे पूरा करो। (४) ज़ालिम पर भी लानत न भेजो। (५) किसी से वदले के तालिव न होओ और न किसी के लिए वददुआ करो। (६) किसी के कुफ्र या शिर्क या निफाक की शहादत न दो। (७) जाहिर और वातिन किसी तरह गुनाह का कस्द न करो और गुनाहो से वचते रहो। (८) किसी पर अपना वोझ न डालो, वल्कि जहा तक हो सके दूसरो की मुश्किलें दूर करने की कोशिश करो। (९) लोगो से नाउम्मीद होकर लालच को दिल से एकदम निकाल दो। (१०) सवको अपने से अच्छा जानो।

उपर्युक्त दसवी वात कहते हुए सन्त हारम सिर्फ यही नही कहते कि सवको अपने से अच्छा जानो, वल्कि साथ ही यह भी कहते हैं कि अपने लिए दुनिया मे बुलन्द मर्तवा न चाहो। जो ऊचा मर्तबा चाहता है वह दूसरो को अपने से नीचा भले ही न समझे, अपने से अच्छा सवको जाने यह तो उसके लिए वहुत ही कम सम्भव है। सन्त कहते है कि इन बातो पर अमल करने से बहुत फायदे होते हैं। इनकी यह सूक्ति चोज़-भरी है—अल्लाह की नज़दीकी मे दिल इल्म का रकीव है। हृदय और बुद्धि का द्वन्द्व तो चलता ही है, पर दिल प्रेम मे डूबकर इल्म को भूल जाता है।

कुछ सूक्तिया ये है · सब्र अहकामे-इलाही बजा लाने को कहते हैं। कयाम (सच्ची मानसिक स्थिति) यह है कि जो कुछ भी होता है यही समझे कि ईश्वर की ओर से ही होता है। बला पर शाकिर (कृतज्ञ)

रहने को तल्लीन कहते हैं। खुदा के दुश्मनो से कोई सम्बन्ध न रखने को हया कहते है। तर्के-दुनिया को मुँह-इलाही कहते हैं। ईश्वर को हिसाब देना होगा, यह खयाल करके गुनाह न करने को खौफ कहते हैं। खल्क से भागने को उ-से खलिक कहते है। सादिक उसे कहते हैं जिसे खल्क वुरा जाने और वह इससे खुश रहे कि खल्क उसके हाल से बिल्कुल नावाकिफ है।

कहते—सादिक को चाहिए कि हमेशा अल्लाह से पनाह मागता रहे। जिसने अपने नफ्स को रियाजत से मुहज्जब बनाया, तप आदि साधनाओ से मन को सुसस्कृत किया, उसको राहे-रास्त मिलती है। जो वहिश्त की नियामतो का दुनिया मे ही तालिब हो उसे शान्तिप्रिय और सन्तुष्ट दरवेश की सोहवत इख्तियार करनी चाहिए। यह भी कहते—खुदा का हो जा, या खुदी को मिटा दे। यह बहुत अच्छी बात है। जो मराकूबा और इखलास करता है अल्लाह उसे मुजाहिद और सुन्नत के मुताबिक अमल करने की ताकत देता है। जो अपनी नमाज़ पर नाज़ करता है उसकी नमाज कबूल नही होती।

एक सूक्ति यह है—जो शख्स गैब के महल मे दिल की हरकतो पर वाकिफ है उसके लिए यह ज्यादा वेहतर है कि अजा की हरकत पर आगाह हो जाय। यह सन्त की बडी ही सामयिक और उपयोगी चेतावनी है। आज ऐसे बहुत-से लोग हैं जो अपनी मनोमुखी साधना के बल पर छोटी-मोटी सिद्धिया हासिल करके उन्हीके चक्कर मे पडे रह जाते हैं। वे दूसरो के मन की वात केवल समझ ही नही लेते, वल्कि अपने असस्कृत विचार दूसरो के मन मे डालने मे भी समर्थ होते है। पर उनका अपना जीवन, अपना व्यवहार, ऐसा नही होता कि जिसके लिए उन्हे साधुवाद दिया जाय। इसलिए सन्त कहते हैं कि दूसरो के मन की बात जानने की अपेक्षा यह अधिक उपादेय है कि मनुष्य इस बात पर ध्यान दे कि वह अपने शरीर के अगो का उपयोग किस प्रकार करता है। यदि हाथ चोरी नही करते किसीको मारते या सताते नही, यदि वाणी किसी को गाली या शाप नही देती, यदि कान वुरे गाने सुनने मे दूर भागते हैं, यदि पैर किसी दुष्कर्म की ओर प्रवृत्त होने से इन्कार कर देते हैं, यदि ये और अन्य इन्द्रिया सदा

सत्कर्म की ओर ही प्रवृत्त होती हैं, तो सिद्धि प्राप्त करने वाले व्यक्ति की अपेक्षा यह परिस्थिति कही अधिक श्रेयस्कर है।

अलकारयुक्त भाषा मे सत कहते है—आरिफ रजा की खदक मे उतरते है और सफा के समुन्दर मे गोता लगाकर वफा के मोती पाते हैं और फिर पर्दए-खफा (जिससे शब्द मखफी वना है, अर्थात् गुप्त) मे वासिले-अल्लाह हो जाते है।

सत कोई किताव लिख रहे थे, तव किसी दरवेश ने आकर पूछा—मारफते अल्लाह हक है बन्दे पर, या बन्दे का हक है अल्लाह पर ? यह प्रश्न इन्हे बडा उलझन-भरा हुआ लगा, इसलिए कुछ दिनो के लिए किताब लिखना वन्द कर दिया और समस्या को सुलझाते रहे।

प्रश्न का तात्पर्य यह है—भक्त स्वय ब्रह्मज्ञान प्राप्त करके भगवान् के ऋण से उऋण हो, या भगवान् ही ब्रह्मज्ञान भक्त को देने वाले हैं ? यहा हक और अधिकार की भाषा ने मामले को उलझा दिया है। अन्यथा वात स्पष्ट है कि भक्त का कर्त्तव्य है कि वह भगवान् की ओर अपनी पूरी शक्ति से चले—और यह भी स्पष्ट है कि ब्रह्मज्ञान का बहुमूल्य रत्न उसी को मिलता है जिसे भगवान् अपनी कृपा से देना चाहते है। सोच-विचार के वाद सत इस निश्चय पर पहुचे कि बन्दे का हक है कि उसके हक को अदा करे। इसके वाद फिर लिखना शुरू किया।

: १६ :

अहमद हरब

सत अहमद हरब आलिम, जाहिद, मुतकी और परहेजगार थे। वहुत वडी सख्या मे लोग इनके उपदेशो को सुनकर इनके श्रद्धालु और प्रेमल अनुवर्ती वन गए थे। सत याहिया विन मुआज राज़ी, जिनका उल्लेख प्रथम भाग मे आया है, इनमे बडी श्रद्धा रखते थे और उन्होने

यह वसीयत की थी कि मरने पर उनका सिर गुरुवर्य अहमद के चरणो मे रखा जाए।

भक्ति की मिठास मे इनका मन कैसा रमा हुआ था, इसका विवरण इनके जीवन की एक छोटी-सी घटना से मिलता है। लिखा है कि एक वार नाई इनके वाल वना रहा था। यह अपने जप मे मग्न थे। नाई बोला —थोडी देर रुक जाइए, ताकि होठो के वालो को दुरुस्त कर दू। इन्होने कहा—मैं अपना काम करता हू, तू अपना काम कर। कई जगह इनके होठ कट गए, मगर इन्होने जप न छोडा।

इनकी वृत्ति अत्यन्त विरक्त और एकान्तप्रिय थी। ससारी लोगो से किसी प्रकार का सम्पर्क इन्हे अखरता था। किसी दोस्त ने इन्हे खत लिखा, मगर उसका उत्तर देने की इनकी हिम्मत ही न होती थी। आखिर एक दिन शिष्य से कहा, "वह प्रतीक्षा मे होगा, इसलिए उसे लिख दो कि आइन्दा वह मुझे खत न लिखा करे, क्योकि जवाब देने की मुझे फुर्सत नही।" वस, अल्लाह की याद मे रहे।

एक बिल्कुल नई चीज़ इनकी जीवनी मे देखने को मिलती है। इनका एक छोटा-सा पुत्र था। उसे तवक्कुल अर्थात् ईश्वर पर विश्वास करने की शिक्षा देने की एक युक्ति इन्होने यह निकाली कि दीवार मे इन्होने एक सूराख वनाया। वेटे से कहा कि जिस चीज़ की तुम्हे ज़रूरत हो इससे माग लिया करो और उधर बीवी से कह दिया कि जो चीज़ वह मागे उसे सूराख की दूसरी तरफ से इस तरह रख दिया करो कि मालूम न हो।

कुछ दिनो तक यह सिलसिला वरावर जारी रहा। इनके पुत्र का यह पक्का खयाल बन गया कि जो वह मागता है, सूराख उसे वही दे देता है। दैवयोग से एकबार ऐसा हुआ कि इनकी वीवी कही वाहर गयी हुई थी, वेटे ने सूराख के पास जाकर खाना मागा। आश्चर्य यह कि खाना यथापूर्व उसे मिल गया और वह खाने लगा। इतने मे मा भी आ गई। पूछा—खाना कहां से मिला? लडके ने विश्वस्त स्वर मे उत्तर दिया—वही से जहा से रोज मिलता है। जव अहमद हरव ने यह वात सुनी तो अपनी धर्मपत्नी से कहा कि अव तुम कोई चीज़ सूराख मे न रखा करो,

असली मतलब हासिल हो गया। अब अल्लाह बिला वास्ता उसको देगा। कहानी यही समाप्त हो जाती है। यह पता नही चलता कि यह घटना एक आकस्मिक चमत्कार था या आगे भी ऐसा हुआ।

सत अहमद हरब के शब्द ये है—अब अल्लाह बिला वास्ता उसको देगा। इससे यह ध्वनि निकलती है कि कम-से-कम सत को यह दृढ विश्वास था कि न केवल यह सूराख का आयोजन ही जारी रहेगा बल्कि आगामी जीवन मे भी ईश्वर इस बालक की उचित आकाक्षाओ को बिना किसी अन्य को निमित्त बनाये स्वय ही पूरा कर दिया करेगा। यही तवक्कुल है।

निश्चय ही यह बात श्रद्धा और विश्वास से सम्बन्ध रखती है। श्रद्धा के ऐसे ही एक प्रसग का उल्लेख एक वयोवृद्ध सत ने भी किया है। उन बुजुर्ग का कहना है कि एक बार मैने इनसे एक कलाम सुना। सत हरब के मुह से उस कलाम को सुने चालीस साल हो गए हैं, मगर मेरा दिल रोजाना ज्यादा रौशन होता जाता है और उस कलाम का जौक रोजाना तरक्की ही करता दिखाई देता है।

इनपर ईश्वर की कृपा थी, यह बात उपर्युक्त विवरणो से स्पष्ट हो जाती है। पर एक प्रसग ऐसा आया जब इनके प्रेमी भगवान् इनपर ताना कसने से भी न चूके। यह एक कमरे मे इबादत कर रहे थे। वर्षा तेज हो रही थी। खयाल आया कि मकान टपका तो सारी किताबें खराब हो जायगी। तुरन्त गैब से यह तीर आया—'ऐ अहमद! उसी घर मे जा जहा आराम हो।" ताना सुनते ही चिन्ता छोडकर भजन मे लग गए।

जहा अन्तर की अनुच्छ्वसित ऊहापोह पर भी ऐसी कृपादृष्टि रहती हो, वहा श्रद्धा और विश्वास की कमी का तो कही प्रश्न ही नही। और साधना भी जिस तल्लीनता, तन्मयता और आत्मीयता के साथ होती होगी उसका तो अनुमान करके ही अपने मन को प्रसन्न किया जा सकता है, क्योकि वे दृश्य अब कहाँ कि ऐसी प्रेमभरी झिडकी खाकर सत सारी रात साधना करें जैसा कि अहमद हरब ने सारी रात किया।

ऐसे भक्त का मान करके, सच पूछो तो भगवान् अपना ही मान बढाते हैं, जैसाकि बहराम नामी एक आतिशपरस्त (अग्निपूजक) के प्रसग मे

हुआ। वहराम सत अहमद हरव के पडौस मे रहते थे। सफर मे उनका माल डाकुओ ने लूट लिया। औरो के साथ यह भी हमदर्दी के लिए उनके घर गये। वह अकाल का जमाना था। उन्होने समझा कि शायद खाना खाने आये हैं, इसलिए दावत का इरादा किया। सत हरव उनके दिल की वात समझ गए। वोले—"हम खाना खाने नही आये हैं। सुना है तुम्हारा माल जाता रहा, इसलिए हमदर्दी जाहिर करने आये हैं।" वहराम वोले—"हा, मेरा माल तो गया, मगर उसकी वजह से तीन शुक्र मुझपर वाजिव हैं। पहला यह कि दूसरे लोग मेरा माल ले गये, मैंने किसी का माल नही लिया। दूसरा यह कि आधा माल मेरे पास वाकी है। तीसरा यह कि माल गया, मगर दीन मेरा सलामत है।"

सत अहमद हरव खुश होकर अपने साथियो से वोले—'ये अच्छी नसीहतें है, इन्हे लिख लो।" फिर वहराम से कहा—"तुम आग की पूजा क्यो करते हो ?" वह वोले, "इसलिए कि कयामत मे आग मुझे न जलाये और अल्लाह से मिला दे।" यह वोले—"आग इस क़दर कमजोर होती है कि अगर छोटा-सा वच्चा भी उसपर थोडा-सा पानी डाल दे तो वुझ जायगी। फिर सत्तर साल से तुम उसकी पूजा करते हो, अब तक उसने क्या वफा की ?"

यह कह रहे थे कि इतनी लम्वी अवधि तक पूजा करने पर भी जव वह तुम्हें यहाँ जलाने मे न चूकेगी तव तुम कैसे उम्मीद कर सकते हो कि कयामत मे वह इससे ज्यादा वफादार सावित होगी ? वहराम वोले कि अगर आप मेरे चार सवालो का जवाव दे दे तो मैं मुसलमान हो जाऊगा। सत अहमद ने कहा—अच्छा वताओ, तुम्हारे वे सवाल क्या-क्या हैं ?

वहराम ने कहा—"मेरे सवाल ये हैं—(१) अल्लाह ने मखलूक क्यो पैदा किया (२) और अगर पैदा किया तो रोजी क्यो दी ? (३) अगर रोजी दी तो फिर उसे मारा क्यो ? और (४) जव मारा तो फिर उसे जिलायेगा क्यो ?" संत अहमद ने भाववाचक सज्ञा का प्रयोग करके इन प्रश्नो का उत्तर आसानी से दे दिया। वोले—"अल्लाह ने मख़लूक को इसलिए पैदा किया कि उसको खलकियत को जाने। रिज्क इसलिए

दिया कि लोग उसकी रोज़ की (आजीविका) प्रदान करने की शक्ति से परिचित हों। मारा इसलिए कि उसकी कहानी का पता लगे, अर्थात् लोग यह समझ सकें कि अल्लाह में कहर बरपा करने की भी ताकत है। और वह जिलायेगा इसलिए कि खलकत उनकी कादरी (सर्वशक्तिमत्ता) से भी आगाह हो।"

बहराम बोले—"यह सब तो ठीक है, मगर मैं आज़माइश करना चाहता हूं। मैं देखना चाहता हूं कि आप जो अल्लाह की इबादत करते हैं, आपको वह जलाती है कि नहीं।" आग लायी गई और संत अहमद ने मन-ही-मन भगवान् का नाम-स्मरण करके अपना हाथ आग में डाल दिया और देर तक आग पर रखे रहे, मगर लिखा है कि हाथ पर आग का कोई असर न हुआ।

यह आश्चर्यजनक दृश्य देखकर बहराम ने सोचा, "मैं आग की पूजा करता हूं, फिर भी आग मुझे जलाये बिना नहीं रहती। यह अल्लाह की इबादत करते हैं और आग ने इनका बाल भी बांका नहीं किया। निश्चय ही अल्लाह की इबादत आग की परस्तिश से बहतर है। और जो मजहब अल्लाह की इबादत करने को कहता है वह मेरे दीन से बेहतर है।" और वह मुसलमान हो गए।

यहां तक तो ठीक है। मगर बहराम के मुसलमान होते ही ईश्वर की परम अनुकंपा से आग पर विजय पाने वाले वही संत अहमद हरब एकाएक जोर से चीखकर बेहोश हो गए। क्यों? "सत्तर साल के बाद बहराम ईमान लाया और तू एक मुद्दत से मुसलमान है, देखें तू आखिरी वक्त में क्या लाता है?"—यह बात गैबी आवाज ने बहराम के मुसलमान होते ही अहमद हरब से कही। इसी बात की चोट खाकर यह चीखे और बेहोश हो गए। मॉगने वाले की यह महती आकांक्षा और बेचारे फकीर की अकिंचनता और तुच्छता—ये दो दृश्य बिजली की तरह इनके दिल में कौंधे होंगे और वही इन्हें बेहोश करके चले गए।

अहमद हरब नवविवाहिता वधू की भांति सीधे, सरल और मधुर परिहास में अनभ्यस्त ही थे। यहाँ पर प्रौढ प्रेम की वह परिहास-लीला

स्मरण हो जाती है कि जहाँ भगवान् अपने एक विश्वस्त प्रेमी से कह बैठे थे कि "क्या तू चाहता है कि तेरे दिल का जो हाल है वह मैं लोगो पर ज़ाहिर कर दू, ताकि वह तुझे सगसार कर दें ?" भक्त भी खिलाडी था। उसने वह करारा उत्तर दिया कि उन्हे सुलह पर उतर आना पडा। भक्त बोला—"या अल्लाह ! क्या तू चाहता है कि तेरी रहमत और बख्शारी का जो हाल मुझे मालूम है वह लोगो पर ज़ाहिर कर दू, ताकि फिर कोई तेरी इबादत ही न करे ?" इबादत की ही भूख लेकर तो भगवान् ने यह दुनिया बनायी थी। यह भक्त तो उनकी पूरी गठरी को ही हाथ लगा बैठा, इसलिए हार-सी मानकर वह प्रेम-भरे स्वर मे बोले—"अच्छा, न मैं तेरी कहू, न तू मेरी कह।'

सत अहमद हरब की आध्यात्मिक स्थिति की एक झलक उस उत्तर मे मिलती है जो इन्होने कुछ लोगो द्वारा एक प्रश्न पूछे जाने पर दिया था। कहते हैं कि वह तमाम उम्र रात को कभी न सोये। प्रेमियो ने कहा—कभी-कभी आप आराम भी कर लिया करें तो क्या हर्ज है ? बोले—जिसके लिए दोज़ख दहकाई जाती हो और जिन्नत आरास्ता की जा रही हो और उसे मालूम न हो कि उसका ठिकाना कहा है, तो नीद कैसे आये ?

सतति-शास्त्र की दृष्टि से भी इनकी एक बात स्मरणीय है। कुछ महापुरुष इनसे मिलने आये। इन्होने बडे प्रेम और सम्मान से उनका स्वागत किया। मगर इनका एक शरीर लडका था, वह निहायत गुस्ताखाना ढग पर रुबाब बजाता हुआ सतो के निकट आ खडा हुआ। इस बाअदब घर मे इस बेअदबी पर सतो का ध्यान जाना स्वाभाविक था। अहमद हरब ने विनम्रता से कहा—"आप इसका अपराध क्षमा करें। इसके ऐसा होने की एक वजह है।" बोले—"यह दरअसल इसका दोष नही है। इसकी जन्म-कथा यो है—मेरा एक पडौसी है। उसके घर बादशाह के यहा से खाना आया था। वह खाना उसने मुझे भी खिलाया था। उसी रात को इस लडके का नुत्फा कायम हुआ। इसीलिए यह शरीर और बेअदब है।" भारतीय संस्कृति तो यह मानती ही है कि जन्म से बहुत पहले ही माता-पिता को श्रेष्ठ सस्कारो मे अपने को ढाल लेना चाहिए।

दिन-प्रतिदिन उत्तरोत्तर बढती हुई वैज्ञानिक संस्कृति की यह एक विचित्र विडबना है कि पार्थिवता और पशु-पक्षियो के विकास के लिए तो बहुत समय, श्रम और धन खर्च किया जा रहा है, मगर मानव जिसकी अहम्मन्यता को इतना बढाया गया है कि सार्वभौम सत्ता ईश्वर से छीनकर उसके कधो पर डाल दी गई है, उसके प्रजनन पर कोई उतना ध्यान नही देता जितना घोडो और कुत्तो पर दिया जाता है।

संत अहमद अरब गीबत यानी परनिंदा को बहुत बुरा समझते थे। मगर कहते थे कि अगर मुझे मालूम हो जाये कि अमुक मनुष्य मेरी निंदा करता है तो मैं उसको धन-दौलत दू, क्योकि जिसकी कोई निन्दा करता है उसके लिए सवाब होता है। यह ठीक ही है, क्योकि निन्दा होने से पापो का क्षय होता है, साथ ही निन्दा करने वाले के सारे पुण्य उसके नाम लिख दिये जाते हैं जिसकी वह निन्दा करता है।

पर-निन्दा का पेशा बहुत व्यापक है। धर्म-चर्चा की अपेक्षा दूसरों की बुराई करने मे लोगो को ज्यादा आनन्द आता है। इस वृत्ति को रोकने के लिए ही सतो ने उपर्युक्त मान्यता को प्रश्रय दिया है। इसीलिए एक सत ने तो यहा तक कहा कि अगर किसी को निन्दा करनी ही है तो उसे चाहिए कि अपने माता-पिता की करे, ताकि उसके जो पुण्य हैं वे उन्हें ही मिलें जिन्होने उसके लिए इतने कष्ट उठाये।

इनकी जीवनी अत्तार ने इन्हीकी एक सरल-सीधी सी सूक्ति के साथ समाप्त की है, जो सस्मरणीय है और वस्तुत मुस्लिम सतो के आध्यात्मिक जीवन का आश्रयस्थल है। वह सूक्ति यह है—"अल्लाह से डरो और उसकी इबादत करो और दुनिया मे न फसो, इसलिए कि दुनिया मे फसने वाला और मुसीबत मे गिरफ्तार होता है।" ईश्वर से प्रेम और ससार से विरक्ति, यह तो सत-सम्मत सिद्धान्त है ही।

१७.

सहल तस्तरी

"होनहार बिरवान के होत चीकने पात"—यह कहावत सत सहल अब्दुल्ला बिन तस्तरी पर एकदम ठीक उतरती है। सत जुनैद की तरह यह भी बड़े भाग्यशाली थे। जुनैद के मामा सरी सक्ती ने उनके मन मे ईश्वर-भक्ति का बीज बोकर बचपन मे बडी योग्यता से उनका मार्ग-दर्शन किया। ठीक इसी तरह सहल तस्तरी के मामा मुहम्मद बिन समर ने इनके आध्यात्मिक जीवन की नीव डाली।

जुनैद भी बच्चे ही थे, मगर वह कुछ बडे हो चुके थे जब उन्होने अपने पिता के दिये हुए दिरमो के साथ अपने-आपको अपने मामा के सुपुर्द किया। सहल तस्तरी इस सम्बन्ध मे कुछ अधिक भाग्यशाली थे। लिखा है कि यह तीन वर्ष की अवस्था मे ही अपने पूज्य मामा के साथ रात-रात भर जागकर इबादत किया करते थे। निश्चय ही बालभक्तो मे इनका दर्जा ऊचा है।

इतिहास मे ऐसे प्रसग कम ही देखने को मिलते है कि इतनी छोटी अवस्था मे वालक इतनी गहरी और तपस्यापूर्ण साधना करे। जिस जाति, जिस देश और जिस धर्म मे ऐसी आत्माए अवतरित होती हैं, वह देश, वह जाति, वह धर्म और सच पूछो तो वह युग किसी अत्यन्त उज्ज्वल और ऊर्ध्वस्थ भविष्य का अधिकारी होता है। वस्तुत जब ऐसी प्रकाण्ड घटना घटित हो, तीन वर्ष का वालक रात-रातभर जागकर भगवान् का भजन-स्मरण करे, तो किसी चमत्कारिक प्रतिक्रिया का न होना ही आश्चर्य का विषय हो सकता है। चुनांचे एक दिन सहल अपने मामा से बोले कि मैं देखता हू, अर्श के आगे मैं ताअबद सस्व-सिजदा हू। मामा ने सावधान किया कि इस बात का किसी से जिक्र न करना और एक दुआ

हर रोज़ पढने को बतायी।

सहल के मामा ने हर रोज़ रात को जो दुआ पढने को बतायी, वह यह थी—"अल्लाह मयी, अल्लाह नाजिरी, अल्लाह शाहिदी। कुछ दिन तक यह रात को एक बार यह दुआ कहते रहे, फिर मामा के कहने से सात बार उस दुआ को रोज़ पढना शुरू किया। कुछ दिन बाद मामा ने कहा कि अब रोजाना पन्द्रह बार इस दुआ को पढा करो और ताजीस्त कभी तर्क न करना। सहल ने ऐसा ही किया और बहुत वर्षों तक पन्द्रह बार यह दुआ पढते रहे।

लिखा है कि इस दुआ की बदौलत इनके दिल मे एक तरह की हलावत (मिठास) सी पैदा हो गई और यह गोशानशीनी (एकान्त) इख्तियार करके इबादते-इलाही मे दिलो-जान से मशगूल हो गए। इनका कहना है कि फिर मैंने कुरान पढा और जब सात साल का हुआ तो हमेशा रोज़ा रखने लगा और जौ की टिकिया के साथ अफ्तार सूम करता था। तब दिल मे एक समस्या उठ खडी हुई।

कहते हैं उस समय सहल की अवस्था बारह साल की थी। जब देखा कि अपने मसले को कोई हल नही कर पा रहा है, तब इन्होने मिस्र की यात्रा का निश्चय किया। मिस्र मे उस समय हबीब हमजा एक मशहूर दरवेश थे। उन्होने इस बालभक्त की मानसिक समस्या को हल कर दिया। सहल कुछ दिनो तक उनकी सेवा मे रहकर सत्सग का लाभ उठाते रहे। उनसे बहुत-कुछ लाभ हासिल करके आखिर तस्तर वापस आ गये।

तस्तर मे आकर इन्होने अपना यह नियम बना लिया कि दिन-भर रोजा रखते और शाम को जौ की एक टिकिया खाते। फिर इन्होने ऐसे रोज़े रखने शुरू किये कि तीन दिन और रात तक कुछ न खाते। फिर सात-शबाना रोज़े, फिर पच्चीस-शबाना रोज़े, यानी रात-दिन मे कुछ न खाने के रोज़े रखे और ये रोजे उसी चार तोला साढे चार माशा की जौ की टिकिया से सात या पच्चीस दिन के बाद खोलते।

अत्तार का कहना तो यह है कि ऐसा भी किताबो मे देखने मे आया कि सत्तर रात-दिन के बाद इन्होने अपना व्रत खोला। और कभी चालीस दिन के व्रत के बाद सिर्फ एक बादाम खाया। रमज़ान मे तो सिर्फ एक

बार कुछ खाकर पूरा महीना भजन और जागरण मे गुज़ार देते। इसके अतिरिक्त शैबान के महीने मे भी यह अक्सर रोज़े रखा करते, क्योकि इस महीने मे रोज़ा रखना हदीस के माफिक है।

संत सहल का कहना है कि कई साल तक मैंने अपने को भूखा और आसूदा होकर आज़माया। आरम्भ मे तो बेशक भूखे रहने से कमज़ोरी और आसूदा होने यानी खाने से ताकत मालूम होती थी, लेकिन आखिर मे भूख से ताकत और आसूदगी से कमजोरी मालूम होने लगी। मैंने दुआ की—'ऐ अल्लाह, मुझे वह ताकत दे कि आसूदगीको गरसगी (भूख मे) और गरसगी को आसूदगी मे तेरी जानिब से समझूं।"

एक बात यह देखने मे आती है कि मुस्लिम संत जितना ही ऊंचा और प्राणवान होता है, कुफ्र का फतबा भी उतना ही उसका पीछा करता हुआ दिखाई देता है। अत्यधिक ऊंची मारफत की उडान और लोकाचार मे अक्सर संघर्ष होता रहा है। सहल तस्तरी भी इससे अछूते न रह सके। इनके खिलाफ भी कुफ्र का फतवा दिया गया, पर इन्होने उसके जवाब मे यह किया कि अपना सारा माल खैरात करके मक्का के लिए रवाना हो गए।

मक्का जाते हुए इन्होने नफ्स से यह तय किया कि वह खाने के लिए कुछ भी न मांगे। फाके-पर-फाके करते हुए जब यह कुफ्र मे दाखिल हुए तो भूख ने सताया और नफ्स ने खाने को मांगा। इन्होने देखा कि एक ऊंट चक्की मे बंधा चक्की खीच रहा है। चक्की वाले से मालूम हुआ कि दो दीनार रोज़ ऊंट वाले को दिये जाते है। यह बोले—"तुम ऊंट को खोलकर मुझे बांध दो, मैं एक दीनार मे दिनभर तुम्हारी चक्की चलाऊंगा।" दिन-भर मेहनत करने के बाद जब शाम को एक दीनार मिला तो उसे लेकर नफ्स से कहा, 'अगर फिर कभी कुछ मांगेगा तो इसी तरह दिनभर मेहनत करनी होगी।' वहा से सीधे मक्का पहुंचे जहा बहुत-से संतो के दर्शन किये। संत जू उल नून मिस्री से यह बहुत प्रभावित हुए और उन्हीके मुरीद बनकर कुछ दिनो के पश्चात् यह अपनी जन्मभूमि तस्तर मे वापस आ गए।

सहल कभी पीठ को दीवार से लगाकर न बैठते और न कभी पैर

ही फैलाते। इतना इनको पासे-अदव था। मुस्लिम सस्कृति मे रफाकत और अतबा की भी एक सुनहरी परिपाटी है। मित्र को जो कष्ट हो, मित्रता के नाते खुद भी उस कष्ट को झेलना, यह हक की रफ़ाकत अदा करना कहलाता है। इसलिए जब रसूल का मैदाने-जंग मे एक दात टूटा तो मीलो-दूर बैठे जगल मे ऊट चराने वाले उवैरा करनी ने जोशे-रफाकत मे एक-एक करके अपने सब दात तोड डाले थे।

लिखा है कि सहल के पाव की अगुलियो मे दर्द हुआ और वह चार महीने तक अगुलियो को वाधे रहे। किसी ने अगुलिया बाधने का सबब पूछा तो चुप रहे, कुछ जवाब न दिया। वह व्यक्ति इत्तिफाक से मिस्र जाकर जू उल नून मिसरी से मिला और उसने देखा कि उनके पैर की अगुलिया भी उसी तरह बधी हुई हैं। सबब पूछा तो कहा कि चार महीने से दर्द हो रहा है इसलिए बाधी है। उस व्यक्ति ने हिसाब लगाया तो ठीक उसी दिन सहल ने भी पजे मे दर्द की वजह से अपने पैर की अगुलिया वाधी थी। उसने जू उल नून को वताया कि सत सहल ने भी उसी दिन दर्द की वजह से अपने पैर की अगुलिया वाधी थी। शिष्य की भक्ति से प्रसन्न गुरु जू उल नून ने कहा कि सहल के सिवा ऐसा और कोई नही है जो मेरे दर्द से आगाह होकर मेरी अतवा करे। तर्क-प्रधान व्यक्ति को यह सब विचित्र और व्यर्थ-सी वात मालूम होगी। मगर मुस्लिम सस्कृति मे अदव और खौफ की ही तरह रफाकत और अतवा की परिपाटी भी वहुत प्रचलित और सम्मानित है।

कष्ट मे, दु ख मे, मुसीवत मे मित्र का साथ देना—साथ देना अर्थात् स्वय भी उसी मुसीवत मे मुब्तिला हो जाना—रफाकत है और जो परम सम्मान्य गुरु हैं उनकी मुसीवत मे उनका साथ देना, कष्ट झेलने मे साहचर्य या अनुकरण करना 'अतबा करना' कहलाता है। भारतीय सस्कृति मे कम-से-कम एक ऐसी मिसाल है वह है पति-भक्ति से प्रेरित होकर गाधारी का अपनी आखो पर पट्टी बाध लेना। और कौन नही उसकी प्रशंसा करता ?

इस हद से वढे हुए मगर वहुत ही मीठे अदव की एक कहानी सहल की जीवनी मे और भी देखने को मिलती है। एक बार जब यह तख्तर मे

थे तो अचानक इन्होंने दीवार से अपनी पीठ लगायी और पैर फैलाकर कहा—"अच्छा, अब जो पूछना है, मुझसे पूछो!" लोगो ने कहा—"आज तक न कभी आपने पीठ लगायी, न पैर फैलाये, न किसी के सवालो का जवाब दिया। फिर आज ऐसा क्यो कर रहे हैं कि खुद ही सवाल पूछने को कहते हैं?" तो बोले—"जब तक उस्ताद ज़िन्दा हैं उनका अदब लाज़िम है।" लोगो ने वह दिन, तारीख़ और वक्त तभी लिख लिया और फिर दरयाफ्त किया तो मालूम हुआ कि उसी दिन, उसी तारीख़ और उसी वक्त संत जू उल नून मिसरी ने, जो इनके गुरु, परम महात्मा और मुस्लिम जगत् के बहुत प्रतिष्ठित संत थे, अपनी इहलीला संवरण की। नून इतने ऊंचे थे कि उनके देशवासी उन्हे समझ न सके। जीवन-भर कष्ट ही देते रहे। फिर जनाज़े पर परिंदो का साया करना सुना तो बडे लज्जित हुए।

उमरू नाम का एक अधिकारी बीमार हुआ। रोग असाध्य था। हकीम ने जवाब दे दिया। तब उसने संत सहल को दुआ के लिए याद किया तो बोले—"दुआ कबूल होती है जब पहले इन्सान तौबा करे।" उसने तौबा की और कैदियो को रिहाई दी। तब दुआ के लिए हाथ उठाकर सहल बोले—"ऐ अल्लाह! जिस तरह तूने अपनी नाफरमानी की जिल्लत इसे दिखाई उसी तरह मेरी इबादत की इज्ज़त दिखा दे।" अभी दुआ पूरी भी न हो पाई थी कि वह बीमार एकदम तन्दुरुस्त होकर उठ खडा हुआ और तहे-दिल से शुक्रिया अदा किया। उसने कृतज्ञता से अभिभूत होकरए एक बहुत बडी धनराशि भी इनको भेंट मे दी, मगर इन्होने उसे स्वीकार न किया। एक ऋणग्रस्त शिष्या, जो उस समय इनके साथ ही था, दीनता से बोला कि अगर आप यह नज़र ले लेते तो मेरा कर्ज़ अदा हो जाता। सहल बोले—"तुझे ज़र चाहिए तो देख!" उसने जिधर नज़र घुमायी तो सोना-ही-सोना नज़र आया। संत बोले—"जिसे अल्लाह ने यह रुतबा दिया हो वह धन का इच्छुक नही हो सकता। इस अनन्य निष्का-मता मे भी भगवान् ने अपना बाह्य वैभव निहित कर रखा है।"

इन चमत्कारिक घटनाओ के और अविश्वसनीय एवं असंभव-सी लगने वाली कष्ट-सहिष्णुताओ के जब-जब वर्णन आते हैं, जो यहा पग-पग पर

दिखायी देते है, तव-तव आज की तर्कवुद्धि खड्गहस्त हो उठती है। वात यह है कि आज मानव की शक्ति वाहर की ओर प्रवृत्त हो रही है। वाहर आज मनुष्य जैसी भयकरता से भरी ऊची उडानें भर रहा है वैसी ही वह कभी अतर की उडानें भरा करता था। मानव है ही चमत्कार-प्रिय।

पर मानव मे एक मौलिक-सा, कुछ असाध्य-सा दोष है कि जब वह अन्तर की ओर देखता है तो उसीमे इतना लीन हो जाता है कि वह वाहर को भूल ही नही जाता वल्कि उमकी अवहेलना करना धर्म समझता है। धन-वैभव की तो वात ही क्या, खाने-पीने जैसी वातो की तरफ भी वह वडी कडी नफरत की नज़र से देखता है। उसके मन मे डर-सा वैठा रहता है कि उसने वाहर की ओर देखा नही कि वह अपने ऊचे आत्म-सिहासन से नीचे गिरा नही। इसके विपरीत जव घडी के पेडुलम की तरह उसकी वृत्ति अन्तर से हटकर वाह्य की ओर प्रवृत्त होती है तब वह वाह्य के रग मे ऐमी रँग जाती है कि कुछ ही वर्षो और शताब्दियो पूर्व की अन्तर्जजगत् की अपनी शिखरस्थ उपलब्धियो को मनुष्य ऐसा भूल जाता है कि उन्हे एकदम अविश्वसनीय और असंभव ही नही, झूठ और छल-प्रपच से युक्त कहने मे भी सकोच नही करता।

शेख अवु अली दकाक का कहना है कि सत सहल वडे साहबे-करामात थे, मगर अपने को छिपाते थे। लिखा है कि यह पानी की सतह पर चलते मगर भीगते नही। लोगो ने जब कहा कि हमने सुना है कि आप बगैर किश्ती के पानी पर चलते है, तो कह दिया—"जरा मस्जिद के मुअज्जन से जाकर पूछो।" पूछने पर मुअज्ज़न ने कहा—"मैं तो सिर्फ यह जानता हू कि एक वार हौज मे नहा रहे थे। पैर फिसलकर गिरने वाले थे कि इतने मे मैंने इन्हे सभाल लिया।"

एक वार एक वुजुर्ग जुम्मे की नमाज़ से पहले इनसे मिलने आये तो देखा कि इनके पास एक साप वैठा है। बुजुर्ग ने कुछ रुककर पूछा, क्या मैं आऊ ? बोले—आओ। जब वह करीब आये तो कहा—जो शख्स आसमान की हकीकत नही जानता, वह जमीन की चीजों से डरता है। फिर पूछा, नमाज़ के वारे मे क्या कहते हो ? बोले—जामा मस्जिद यहां

से एक दिन और एक रात के फासले पर है। इन्होने उनका हाथ पकड़ा और दमभर मे मतलूब (इच्छित) जामा मस्जिद मे जा पहुचे। वहा प्रेम-पूर्वक नमाज़ पढी। फिर उन बुजुर्ग ने नज़र उठाकर जब लोगो की तरफ देखा तो सहल बोले—कलमा पढनेवाले बहुत और मुखलिस कम है। और वास्तव मे यह मुखलिसी यानी इखलास, सच्चे प्रेम, शुद्ध सत्यमय जीवन का अभाव ही है कि जिसकी वजह से लाखो-करोडो आदमी अपनी मजिले-मकसूद तक पहुच नही पाते—और जब कोई अल्लाह का प्यारा चोटी पर पहुचता है तो लोग उसे हैरत और अविश्वास की नज़र से देखते है।

लिखा है कि सिह और अन्य हिंसक पशु भी सत सहल के पास आते और यह उन्हे खाना देते और बडी मुहब्बत से पेश आते। यह बात तो प्राचीन काल के भारतीय आश्रमो की याद दिलाती है और आज भी अहिंसा की उस प्रसिद्ध सिद्धि की व्यावहारिक झलक कही-कही देखने को मिल जाती है। प्रेम एक ऐसी सार्वभौम रसायन है जिसकी प्रतिक्रिया जीव-जन्तुओ पर ही नही, बल्कि लता-वृक्षो और स्थावर जगत् पर भी हुए बिना नही रहती।

सत तो मशहूर हो जाते हैं, मगर मशहूर सतो से भी कही ऊची हस्तियाँ दुनिया की नजर से दूर अपने दिली हबीब के राजो नियाज़ मे मस्त रहती हैं और कही किसी खास मौके पर किसी भाग्यशाली को अपनी एक झलक दिखाकर फिर गुम हो जाती हैं। ऐसी ही एक हस्ती का ज़िक्र सत सहल की जीवनी मे आया है। वह एक बुढिया थी, जो किसी जगल मे घूमती हुई इन्हे निहायत परेशान हालत मे मिली। गरीब समझकर इन्होंने उसे कुछ देना चाहा। बुढिया ने आसमान की तरफ हाथ उठाकर मुट्ठी बंद कर ली और फिर मुट्ठी खोली तो उसमे सोना था। सहल से बोली, "तू जेब से निकालता है और मुझे गैब से मिलता है।" लिखा है कि यह कहकर बुढिया गायब हो गई और फिर एक बार खास काबे मे मिली, इससे भी अधिक हैरतअगेज़ हालत मे। जब सहल काबा पहुचे और तवाफ में मशगूल हुए तो देखा कि काबा उसी बुढिया का तवाफ कर रहा है। सहल तो देर से उसकी तलाश मे थे। यहा देखकर उसके

पास गये। उस वृद्धा देवी ने संत सहल से अब एक मार्के की बात कही। वह बोली—"जो काबा देखने आता है उसे काबे का तवाफ करना ही चाहिए, और जो बेइख्तियार होकर आता है, काबा उसका तवाफ करता है।"

इनका एक मुरीद 'अल्लाह, अल्लाह' कहने का इतना अभ्यस्त हो गया था कि सोने पर भी 'अल्लाह, अल्लाह' कहता। एक बार उसके सिर पर छत गिर पड़ी और सिर से बहुत लहू निकला। मगर जो कतरा गिरता, उससे अल्लाह का लफ्ज बन जाता। अपने मुरीदों से इन्होंने कहा कि बसरी में एक नानबाई बड़ा साहबे-वलायत है। एक मुरीद बसरा गया और नानबाई को दाढ़ी पर ढाटा बांधे देख सोचा, यह कैसा वली है! सलाम का जवाब देकर नानबाई बोला—तुझे मुझसे लाभ न होगा, क्योंकि तूने मुझे पहले ही हकीर समझ लिया।

इनकी सूक्ति है—"उसको ख़िल्वत मुफीद नहीं होती जो अक्ल हलाल से महरूम रहता है और अक्ल हलाल (हलाल रोज़ी) जिसे अल्लाह दे वही पा सकता है। हराम रोज़ी खानेवाले के सब अंग पाप की ओर प्रवृत्त होते हैं और हलाल रोज़ी खाने वाले के सब अंग इबादत की ओर प्रवृत्त होते हैं।" यह इनका बड़ा सुन्दर विश्वास था "अल्लाह का जिक्र करना रोजी है।" कहा—"जब तक बंदा अपने को नेस्त करके अल्लाह की इबादत नहीं करता, उसकी इबादत कबूल नहीं होती।"

कहते—"सिवा सिद्दीक और शहीद के किसी का दिल कुशादा नहीं होता। बन्दे का ईमान कामिल नहीं होता, जब तक उसका अमल कामिल न हो परहेजगारी से, और परहेजगारी इखलास से और इखलास मुशाहदे से।" इखलास सिवा अल्लाह के और सब-कुछ तर्क करने को कहते हैं। कहा—"खौफ करनेवालों में मुख़लिस बेहतर हैं और उनमें बेहतर हैं वे जिनका इखलास मौत तक रहे। रिया की तारीख उससे पूछो जो मुख-लिस हो।"

यह भी कहते—"मुख़लिसों को बला और आफत में डालकर अल्लाह आज़माता है। अगर मुखलिस साबित-कदम रहे तो अपना कुर्ब (सान्निध्य) देता है, वरना जुदाई में मुक्तिलाभ करता है। खुदा की परस्तिश न करने वाला खल्क की परस्तिश करता है। सिवा अल्लाह के किसी शय से दिल

को आराम देना हराम है। खुदी को फरामोश करना पवित्रता प्रदान करता है। आलिम का मर्तबा औरो से ज्यादा है और अलामत आलिम की यह है कि तकदीर अजली (अनादि काल का) पर राजी रहे।

वे—"आलिमो की तीन किस्मे हैं।" यह बताकर कहा—(१) जो अपने जाहिरा इल्म को अहले-ज़ाहिर के सामने ज़ाहिर करते है। (२) बातिनी (आभ्यतरिक) इल्म के आलिम, जो अपने इल्म को अहले बातिन के सामने ज़ाहिर करते हैं। (३) वे खास आलिम हैं जिनका इल्म सिवा उनके और अल्लाह के और कोई नही जानता। हिम्मत वह है जो ज्यादा तलब करे। अगर बीच मे रह जाय बिना मकसद हासिल किये, तो ज़रूर हिम्मत की कोताही है।"

कहते—"जो अपना जानोमाल खुदा पर फिदा करता है उसीके लिए सूरज और चाद का उगना और डूबना ज़ेब देता है। सबसे बडा गुनाह जलालत है। फ़कीरो को हिकारत से न देखो, क्योकि अक्सर उनमे नबियो के नायब और वारिस होते हैं।" और—"कुरान, सुन्नत और विधि-निषेध के नियमों का पालन, हलाल रोज़ो और हकूक का अदा करना और किसीको ईजा (हानि) न पहुचाना मेरी ज़िन्दगी के उसूल हैं।"

"सबसे पहले इसान को तौबा लाजिम है। जब तक खामोशी इख्तियार न करे, तौबा हासिल नही होती। बगैर खामोशी इख्तियार किये इसान खिल्वत-नशीनी (एकान्त) का लुत्फ नही पाता। खिल्वत-नशीनी का लुत्फ बगैर हलाल रोज़ी के नही मिलता। हलाल रोजी अल्लाह का हक अदा किये बिना मिलना दुश्वार है और हकूक अल्लाह जब तक तमाम अगो पर निगाह न रखे, हासिल नही होता।" यह बताकर कहा—"ये सब बातें मिलती है तो फ़ज़्ले इलाही (ईश्वरीय कृपा) से।"

कहते—"सादिक बन्दे पर अल्लाह एक फरिश्ता मुकर्रर करता है, जो उसे जब नमाज़ का वक्त होता है तो आगाह कर देता है और अगर सो गया तो जगा देता है। मुतवक्किल उसे कहते है जो सवाल न करे और कोई दे तो न ले, अगर ले तो खैरात कर दे। तवक्कुल उसे कहते है कि अल्लाह के वादे को सच्चा जाने।" वस्तुत होने और न होने दोनो हालतो मे राज़ी रहने को ही तवक्कुल कहते हैं। जो शख्स दुनिया को

छोडकर अल्लाह की इवादत करता है उसे तवक्कुल हासिल होता है।

तमाम चीज़ो मे अच्छाई और बुराई दोनों है, परन्तु तवक्कुल मे सरासर अच्छाई है। मगर यह कहते थे कि तवक्कुल इसका नाम है कि इन्सान अल्लाह के सामने इस तरह रहे जिस तरह मुर्दा गुस्ल देने वालो के सामने विना हिले-डुले खामोश रहता है। उनका कहना था कि तवक्कुल सपूर्ण दुरुस्त नही होता, मगर आत्मसमर्पण के विना कुछ हासिल नही होना। और दोस्ती उसे कहते हैं कि आज्ञा-पालन मे मुस्तैद हो और विरोध से दूर भागे। हया का रुतवा खौफ से ज्यादा है क्योकि हया खास तौर से खुदा के लिए है और खौफ तमाम आमल के लिए है। दुनिया और आखिरत के फना होने से न डरने को मुराकिवा कहते हैं। ईमान खौफ और रजा (आशा) के वीच है। जिसे गरूर और किब्र (वडेपन की भावना) होता है उसे खौफ और रज़ा नही हो सकते।

कहते—जुहद तीन चीजो मे है। अव्वल जुहद खाने और पहनने मे, क्योकि खाने का अन्त मल है और कपडे का अन्त है फटना। दूसरा जुहद, भाई-वन्दो मे है, क्योकि अजाम जुदाई है। और तीसरा जुहद दुनिया मे है, क्योकि अन्त फना है। और कहा—"नफ्स से दोस्ती करने वाला ऐसा है जैसा अल्लाह के दुश्मन से दोस्ती करनेवाला। सख्त सफर नफ्स को तर्क करके अल्लाह की इवादत करना है।

यह भी कहा—नफ्स या तो काफिर होता है या ईश्वर-द्रोही अथवा (मक्कार); और वह नफ्स ही है जो खुदाई का दावा कराता है। अल्लाह के दोस्तो से मुहब्बत पैदा करनी चाहिए। दिल को साफ करो, ताकि अल्लाह का सान्निध्य हासिल हो। इखलास उसको कहते है कि जिस तरह तूने दीन अल्लाह से हासिल किया है उसी तरह कयामत मे उसे वापस करना। गुनहगार को ईश्वर से प्रेम नही होता।

एक बडी अच्छी बात इन्होने यह कही—"दिन भर नारास्ती और वेईमानी से महफूज रहने मे रात भर की नमाज से ज्यादा पुण्य है।"

लोगो ने एक आदमी का उल्लेख किया कि वह कहता है, कि मैं रोज़ी नही ढूढता जब तक मुझे रोज़ी ढूंढने का हुक्म नही होता। इसपर सत सहल ने कहा—यह बात सिवा सिद्दीक (सच्चा) और ज़िदीक (मिथ्या

भिमानी) के कोई नही कहता। अपना दर्जा नेक खसलत (अच्छी आदत) का यह है कि दूसरे का क़सूर माफ करे।

इनका कहना है—रोजाना अल्लाह ताला नदा (अन्दाज) करता है, "ऐ मेरे बदो, मैं तुम्हे याद करता हू मगर आप मुझे याद नही करते। तुम्हे अपनी तरफ बुलाता हू और आप दूसरी तरफ जाते हो। मैं बला को तुमसे दूर करता हू और तुम गुनाह करके फिर बला मे फसते हो। तुमसे ज्यादा कोई बेइसाफ नही है। तुम्हें यह भी खयाल नही कि कयामत मे क्या जवाब दोगे!" कितनी मार्मिक और हार्दिक प्रेम से परिपूर्ण यह अपील है।

इसी तरह की एक मधुर भावना की कल्पना करके यह कहते—"अल्लाह ने खल्क को पैदा करके फर्माया—तुम मुझसे अपना राज़ कहो। अगर नही कह सकते तो मेरी तरफ देखो। अगर देख भी नही सकते तो अपनी हाजत मुझसे तलव करो।" यह अच्छी भावना है। सचमुच ईश्वर के लिए यह प्रसन्नता का विषय है कि उनके बच्चे उनसे प्रेम करें, अपने दु ख-दर्द की बात उनसे कहे, और आवश्यकता पडने पर जिस चीज की भी ज़रूरत हो उनसे प्रेमपूर्वक मागें।

एक अच्छी-सी सूक्ति यह है—जो शख्स अपने नफ्स पर काबिज हुआ, गोया तमाम आलम पर उसने कब्जा कर लिया। इसीलिए यह कहते थे कि नफ्स की मुआफिकत करना सिद्दीको का पहला गुनाह है। नफ्स क्या चीज़ है इसका उल्लेख पीछे कई बार हो चुका है। फिर भी ऊपर की दोनो सूक्तियो को हृदयगम करने के लिए यह ध्यान रहे कि शारीरिकता की वे मागें, जो स्वीकृत उद्देश्य मे व्याघात डालें, उपेक्षणीय हैं, फिर वे वासनाए, जो अनावश्यक हो, अग्राह्य होनी ही चाहिए। पर ऐसी कामनाए, जो शरीर की दृष्टि से तो आवश्यक हो पर आध्यात्मिक दृष्टि से उपयोगी न हो, वे भी आत्मिक सैनिक के लिए अमान्य हैं। किन्तु वे कामनाए जो न शरीर को लाभ पहुचायें न आत्मा को, और मनन करने पर प्रतीत होगा कि अधिकाश कामनाए इसी श्रेणी की होती हैं जो आकाशबेल की तरह अपने आश्रयदाता के जीवन-रस को अतिम बिंदु तक चूसकर केवल अपने ही को पनपाती हैं, वे भी निश्चय ही

नितान्त निंदनीय है ।

नफ्स अर्थात् वासनाएं शरीर की अनेक श्रेणिया है । इनकी प्रबल, मन को विवश कर देने वाली, और लाख कोशिश करने पर भी चगुल मे फसे हुए अपने शिकार को छोडने के लिए अतत्पर भावोर्मियो पर हमेशा निगाह रखने की जरूरत है । यह वासनामय शरीर स्थूल शरीर के आधार पर ही पनपता है इसलिए स्थूल कामनाओ की निष्कृति और फिर सूक्ष्म वासनाओ की सकल्प-शस्त्र से सपूर्ण विनिष्कृति नफ्स को जीतने का एक अच्छा-सी रास्ता है ।

मूलत सूक्ष्म शरीर ही स्थूल शरीर का शासन-सचालन करता है, अतएव सूक्ष्म का शुद्धीकरण आत्मजय के पथिक के लिए परमावश्यक है । सूक्ष्म सस्कारो की निष्कृति और सूक्ष्म शरीर की विनिर्मुक्ति के लिए यह अधिक उपादेय होगा कि इस सूक्ष्म तत्त्व के ऊपर जो सूक्ष्मतम, शुद्धतम आत्मतत्त्व है उसे प्रतिष्ठित किया जाय और उसकी सतत ज्योति से अवाछनीय सस्कारो को एकदम निरस्त, दग्ध बीज की तरह पूर्ण निष्क्रिय कर दिया जाय ।

यह क्रिया मन ही के द्वारा हो सकती है। मनन ही मन का साधन है । इस 'मनन' शब्द मे एक चमत्कारिक श्लेष है । मनन करते-करते, आत्मतत्त्व का ध्यान करते-करते यह मन आत्ममय हो जाता है । मन रह ही नही जाता । मनन का अर्थ है मन—न, मन नही, आत्मा ही आत्मा है । इस मार्ग पर चलने से मन परम उपयोगी हो उठता है। इसलिए शरीर को भुलाकर आत्मतत्त्व पर केन्द्रित होना ही मन का असली काम है । तब मन शरीर को ही नही, अपने को भी भूल जाता है ।

आत्म-प्रकाश से प्रकाशित हुआ मन इतना ज्योतिर्मय, इतना आत्म-निष्ठ, इतना प्रकाशवान्, इतना ज्योति स्वरूप, इतना प्रकाशस्वरूप बन जाता है, यह भी कह सकते है कि इतना पारदर्शी बन जाता है, कि जहा जाता है वहा अपना या यो कहो कि अपने द्वारा गृहीत आत्मा का प्रकाश फैलाता है । श्रद्धा जिनमे है वे यह समझ सकेंगे कि यह असभव नही । परमात्मतत्त्व को आत्मा मे, आत्मा मे अवतरित परमात्म-प्रकाश को मन मे और प्रकाशित मन से दिव्यता को शरीर मे उतारा जाय ।

नफ्स को काबू मे करना इसीलिए बहुत जरूरी है। मन एक ऐसा माध्यम है जो जीवन को आत्मा से मिलाकर ज्योतिर्मय और आध्यात्मिक सकता बना है और अवहेलित, असस्कृत, अलस मन ऊपर की ओर न उठकर शारीरिकता मे इतना रम जाता है कि आत्मा-जैसी कोई चीज है, यह उनकी समझ मे नही आता। यह आजकल फैला अनात्मवाद, अनीश्वरवाद इसी का परिणाम है कि मन को ढीला छोडकर शारीरिकता से आबद्ध कर दिया है।

सत सहल का कहना है कि एक बार स्वप्न देखा कि कयामत लगी हुई है और एक चिडिया पकड-पकडकर लोगो को जन्नत मे दाखिल कर रही है। मुझे खयाल हुआ, यह क्या माजरा है। आवाज सुनाई दी, "यह दुनिया का तकवा है, जो उन लोगो को जो साहबे, तकवा है, जन्नत दिला रहा है।" यह तकवा क्या है? वही नफ्सकुशी, शारीरिकता से ऊपर उठना। दूसरे स्वप्न मे तीन बुजुर्गों को बहिश्त मे देखा तो पूछा—आपको दुनिया मे सबसे ज्यादा खौफनाक चीज क्या मालूम हुई? बोले—खात्मे का खौफ।

एक बार शैतान को ख्वाब मे देखकर इन्होने उससे पूछा—तुझे दुनिया मे सबसे ज्यादा सख्त कौनसी मालूम बात हुई? वह बोला—बदे का अल्लाह के साथ राजो-नियाज। यह कहते हैं कि एक बार मैंने शैतान को एक मुकाम पर गिरफ्तार करके कहा, जब तक तू तौहीद (एकेश्वरवाद) का बयान न करेगा मैं हर्गिज तुझे न छोडूगा। उसने इस शान से मसलए-तौहीद की व्याख्या की कि क्या कोई आरिफ इतनी अच्छी विवेचना अद्वैत के सिद्धान्त की करता।

कहते थे—"परहेजगारी अव्वल दर्जा जुहद का है। जुहद अव्वल दर्जा तवक्कुल का है। तवक्कुल अव्वल दर्जा मारफत का, मारफत अव्वल दर्जा कनाअत का, कनाअत अव्वल दर्जा तर्के-ख्वाहिशात-नफ्सानी का, तर्के ख्वाहिशात-नफ्सानी अव्वल दर्जा रजाए-इलाही का और रजाए-इलाही अव्वल दर्जा मुआफिकत का है। इस शृंखला मे मारफत को कनाअत का पहला दर्जा बताया है, जो इन शब्दो के प्रचलित अर्थ को देखते हुए कुछ विचित्र-सा लगेगा।

कनाअत यो तो दुनियादारी की भाषा मे साधारण सतोष को ही कहते है, पर यहा इसका विशेष अर्थ यह समझना होगा कि दुनिया की छोटी-मोटी बातो मे ही नही, बल्कि सभी बातो मे मनुष्य पूर्ण सतुष्ट रहे। यह देखकर कि यह ससार ईश्वर का है और वह यहा जो कुछ भी कर रहा है, बडी समझदारी और दूरदर्शिता से काम लेकर कर रहा है। उससे अच्छा कोई कर ही क्या सकता है। यह धारणा उसी के मन मे टिक सकती है जो मारफत से मारूफ है।

इस शृ खला की अतिम कडी यह है—रजाए-इलाही पहला दर्जा मुआफिकत का है। कनाअत का ऊपर स्पष्टीकरण हुआ है। कनाअत, रजाए-हक और मुआफिकत मे डिग्री का ही अन्तर नही, बल्कि धर्म और कर्त्तव्य से आगे बढकर अविच्छिन्न मित्रता की मधुर मिठास की एकरूपता और तादात्म्यता के अनिवर्चनीय आनन्द का प्रेमल साक्षात्कार हो उठता है।

सत सहल से किसी व्यक्ति ने आकर कहा कि मैं आपकी सोहबत मे रहना चाहता हू। सत ने पूछा—मेरे बाद किसकी सोहबत मे रहेगा ? वह बोला—अल्लाह की सोहबत मे। सत बोले—अब भी उसीकी सोहबत इख्तियार कर। वह व्यक्ति बोला—मैंने सुना है कि शेर आपके पास आते हैं। इन्होंने कहा—हा, कुत्ता कुत्ते ही के पास आता है। आगे की सूक्ति कितनी अच्छी है—दरवेश इस्तगराक (आत्ममग्नता) मे ही आसूदा होता है।

इनकी एक सूक्ति है—"नूरे-इलाही भूख की आग को बुझा देता है।" गीता भी कहती है, 'निराहार रहने वाले के मन से विषय दूर हो जाते है।" मगर उनका रस नही जाता, किन्तु इन विषयो का रस भी 'पर दृष्ट्वा निवर्तते'। यद्यपि उपवास बहुत उपयोगी है, पर यहा निराहार शब्द का अर्थ भूखा रहना ही नही, बल्कि इन्द्रियो के जो विषय है उनसे उपराम रहना ही यहा अभीष्ट है। वह 'परम", वह 'नूरे-इलाही' सभी विषयो की आग को निरस्त कर देने वाला है।

संत सहल मनाजात मे, प्रार्थना करते समय, कहा करते थे—"इलाही, मैं नाचीज हू और तू मुझे याद करता है, मुझे यही खुशी काफी है ?" यह अपने को नाचीज समझते थे, शायद इसीलिए इन्होंने एक नाचीज आदमी

को अपना खलीफा (वारिस) चुना । लोगो ने पूछा—आपके पश्चात् कौन आपका उत्तराधिकारी होगा ? कौन पीठ पर बैठकर आदेश देगा ? तो बोले—"शाददिल गब्र मेरा खलीफा होगा। जाओ, उसे बुला लाओ !" याद रहे, गब्र मुसलमान नही होते ।

वह इनका अन्तिम समय था । शाददिल जब आया तो इन्होने उससे कहा—"तुम मेरे देहावसान के तीसरे दिन जुहद की नमाज़ पढकर वाज़ कहना।" देहान्त के तीसरे दिन लोग जमा हुए । वह गब्र भी आया । वह आतिशपरस्त था । अपना वही लिबास पहने, ज़न्नार (यज्ञोपवीत) बाधे वह मबर पर चढा और लोगो से कहा—"तुम्हारे सरदार ने मुझे हादी (हिदायत करने वाला उपदेशक) बनाया है ।" और बोला—"ऐ शाद-दिल, आतिशपरस्ती तर्क करने का वक्त आ गया है।' —यह कहकर शाद-दिल ने ज़न्नार खोलकर फेंक दिया और आतिशपरस्तो का लिबास उतार-कर कलमा पढा। फिर लोगो से कहा—"तुम्हारे शेख़ ने कहा है कि देखो, शाददिल मुसलमान हुआ और उसने ज़न्नार ज़ाहिरी काट डाला । अगर तुम लोग कयामत मे हमसे मिलना चाहते हो तो बातिनी जन्नार काटो। तुम्हारे दिल मे जो कुफ्र छिपा हुआ है, उसे दूर करो ।" इस बात ने लोगो पर ऐसा असर किया कि वे बेताब होकर रोने लगे ।

१८

अबु याकूब बिन इसहाक़

अबु याकूब बिन इसहाक नहरजूरी के बारे मे कहा जाता है कि सूफी दरवेशो मे यह सबसे ज्यादा नूरानी थे। उमरू बिन उस्मान मक्की के सत्सग से इन्होने खूब लाभ उठाया और बहुत वर्षों तक काबा मे मुजा-विरी करते रहे। तपस्या और आराधना मे सदा लीन रहने वाले यह सत एक रोज़ रो-रोकर मनाजात कर रहे थे कि अचानक एक गैबी आवाज़

सुनी—"तू वदा है और वदे को राहत नही होती।"

दो रूहानी शिकायतो का जो कामयाव इलाज इन्होने वताया वह याद रखने लायक है, क्योकि वे शिकायते आजकल अक्सर लोगो से सुनी जाती हैं और इलाज जो वताया वह भी इतना सादा और सीधा है जितनी कि शिकायते मुश्किल और लाइलाज-सी नजर आती हैं। एक शख्स ने इनसे कहा—"मेरा दिल सख्त है। अक्सर सूफियो ने मुझे रोजा रखने और सफर करने को कहा, पर उससे कुछ लाभ न हुआ।" इन्होने कहा—"तेरे लिए वाजिब है कि तू एकात मे ईश्वर से गिडगिडा कर प्रार्थना करे।" उसने ऐसा ही किया और उसे लाभ हुआ।

यह एक अच्छी युक्ति इन्होने वतायी और यह सफल हुई। दुआ तो हर चीज का इलाज है ही, किन्तु उसमे विनम्र क्रदन का जो इन्होने समावेश कर दिया, इससे वह और भी अधिक कारगर हो उठी। हार्दिक क्रदन मे कुछ ऐसा रासायनिक गुण है कि वह पाषाण-हृदय को भी द्रवीभूत कर देता है, फिर भगवान का हृदय यद्यपि किसी के लिए वज्र से भी कठोर हो सकता है पर भक्तो के लिए तो वह कुसुम से भी कोमल है।

हार्दिक कारुण्य मे जव यह शक्ति है कि दूरस्थ दिल को पिघला दे, तव जिस दिल मे कारुण्य की भावना का सचार किया गया हो, स्वय उसमे सुकोमलता क्यो न उत्पन्न होगी? इसलिए मान लेना चाहिए कि सत अवु याकूव ने जो नुस्खा तजवीज किया, वह अपने प्रभाव मे अचूक है यदि ईश्वर की मर्जी किसी कारण से उसके खिलाफ न हो, क्योकि अन्ततोगत्वा तो सव-कुछ अवलवित है उसकी इच्छा पर ही।

एक दूसरे शख्स ने आकर कहा कि मुझे नमाज मे हलावत (मिठास) नहीं मिलती है। नमाज़ का यदि व्यापक अर्थ लिया जाय तो यह शिकायत आम दिखाई देगी। पूजा-पाठ करने वाले अक्सर यह कहते सुने जाते हैं कि उनका मन उसमे नही लगता, मन इधर-उधर घूमता रहता है। जव वे अपनी वाणी आदि अगों को पूजा के विधि-विधान में नियोजित करते हैं, वाणी, नेत्र, हाथ और पैर—सव जव पूजा करते हैं, तव मन उनकी खिल्ली-सी उडाता दौडता फिरता है।

सत अवु याकूव ने उस व्यक्ति को इसका जो इलाज वताया, वह

उसके लिए तो फायदेमद साबित हुआ ही, पर वह औरो को भी उतना ही लाभ पहुचा सकेगा कि नही, यह विचारणीय प्रश्न है, क्योकि वस्तुत इसमे काम उसके करने का नही है बल्कि उस व्यक्ति-विशेष के मानस की भूमिका पर अवतरित होकर हितैषी शक्तियो द्वारा उसके मन को परिमार्जित करने का ही विधान दृष्टिगोचर होता है ।

नमाज़ मे हलावत नही मिलती, इस समस्या का निराकरण सत ने केवल यही बताया कि नमाज़ पढते वक्त दिल का ख्याल न किया करो। उस आदमी ने ऐसा ही किया और हलावत मिलने लगी। इसमे तो ऐसा लगता है कि सत ने लैपिटक नीति से काम लिया। इसे मनोवैज्ञानिक नियोजन कला ही कह सकते हैं। पर इसमे कर्तृत्व सच पूछो तो बहुत करके सत अबु याकूब का ही मिलेगा। यह बात यो ठीक समझ मे आयेगी। उसको जो हलावत नही मिलती थी, उसका कोई कारण अवश्य होगा। कारण यह हो सकता है कि जिस शक्ति का उस व्यक्ति के मन पर आधिपत्य था वह अनुकूल न थी और 'हलावत नही मिल रही है', यह भाव डालकर वह और भी मज़ा किरकिरा कर रही थी। सत ने युक्ति यह बताई थी कि नमाज़ के वक्त दिल का ख्याल न करो। इससे उस शक्ति का प्रभाव कम हुआ और इधर सत ने अपनी तवज्जह (ध्यानशक्ति) से मिठास पैदा कर दी।

यह कहते है—एक व्यक्ति को परिक्रमा करते समय मैंने यह प्रार्थना करते देखा, "मैं पनाह ढूढता हू, तुझसे तेरे साथ।" मैंने पूछा, तुम ऐसी अजीब दुआ क्यो करते हो? वह बोला, "एक बार मैंने एक खूबसूरत आदमी को देखकर कहा, 'यह अच्छा है।' तुरत ही हवा का तेज़ झोका आया और मेरी आख पर लगा जिससे मेरी आख जाती रही और आवाज आई, 'यह तेरे जुर्म की सज़ा है। यदि ज्यादा करता तो ज्यादा होती।' तब से मैं यही दुआ पढता हू।"

इनकी सूक्तिया है—दुनिया एक दरिया है, आखिरत उसका किनारा है और किश्ती जुहद और तकवा है। जो माल से अमीर है वह दरअसल दरवेश है, जो खल्क से हाजक तलब करता है वह महरूम है और जो तालिबे-मददे-इलाही नही होता, वह ज़लील नही होता है। जिस नेमत

का शुक्र किया जाय वह नेमत नष्ट नही होती। असल काम ये हैं—कम खाना, कम बोलना, कम सोना और कामना-त्याग !

एक छोटी-सी अच्छी सूक्ति यह है—फना होकर वका हासिल होती है। अपना जो अहकार है मनुष्य उसी को असली चीज, अपना सब-कुछ मान बैठता है। यह अहकार तो नदी की लहर की तरह परिवर्तनशील है। तरग मिटे तो शांत नदी जल ही है। वद्धमूल अहता की यह तरग, यह ग्रथि हटे तो सत्-चित्-आनंद या निर्लेप, निर्विकार, सदा शान्त, एक-रस ब्रह्म ही है। फना होने वाली अहता को छोड़ा तो सामने वका-ही-बका है।

यह अहता की ग्रथि मन मे पड़ती है, फिर मन शरीर को और शरीर से सबध रखने वाले अनेकानेक पदार्थों को अपना मानता, उनमे ममत्व वढाता चलता है। मान लो, गिलास से मोह है। अब गिलास टूटने से मोह टूटे यह जरूरी नही, उल्टे मोह और भी वढ सकता है—हाय मेरा गिलास ! पर गिलास टूटे विना भी मोह टूट सकता है। इसी तरह शरीर-नाश से मोह नष्ट हो, यह जरूरी नही, पर शरीर रहते भी मोह नष्ट हो सकता है।

तव फना होकर वका हासिल होती है। इससे यह तात्पर्य नही निकलता कि शरीर-नाश से, मनुष्य के मर जाने से, वका की, अमृतत्व की प्राप्ति हो सकती है। जैसे गिलास टूटे विना मोह छूट सकता है, वैसे ही शरीर-नाश हुए विना भी मोह का वधन टूट सकता है। आवश्यकता शरीर के नाश की नही, पर अपनी अहंता मे जो ममता का मोह है, उसे दूर करने की है। यही असली फना है जो वका मे पहुँचाती है। रास्ता तो यही है, पर चले विना कोई पहुचे कैसे ?

इनकी सूक्ति है—जो वदा उवूदियत में, आराधना मे, इस्तेमाल इलगे-रजा का खयाल नही करता और फना और वका मे उवूदियत को कायम नही रखता, वह अपने दावे मे झूठा है। वदा यानी भक्त मुक्ति नही चाहता, वह तो ऊर्ध्व-लोक में भी भक्ति का साधन जुटा लेता है और दुनिया मे उसकी भक्ति इसीमें है कि वह अपने को उसकी रजा पर छोड़ देता है। क्षमा करेगा कोई ! विश्वात्मा के मन की यह भांति की ग्रंथि ही

द्वैत का मूल है ।

यह कहते हैं—"खुशी की तीन किस्मे है—एक इबादत पर, दूसरे कुर्ब पर, तीसरे उसकी याद पर। जिसे ये खुशिया हासिल होती है वह हमेशा इबादत करता है और तारकुल(त्यागी) दुनिया होता है। सबसे अच्छा वह काम है जो इल्म से इलाका रखे, और बड़ा आरिफ वह है जो अल्लाह के जलालो-जमाल मे मुतहय्यर हो । कुर्बे-इलाही हासिल नही होता जबतक आरिफ ज्ञानी तीन बातें न छोड़े इल्म, अमल, खिल्वत (एकातवास) ।"

विरोधाभास अक्सर दीखेगा । ये किसी अनत भूमिका के लाखो-करोडो चित्र हैं जो सम्बन्धित भी हैं और नही भी हैं । किसी सूफी की कोई सुदर सूक्ति अनन्त ज्ञान और भाव की ऊर्मियो मे से किसी एक का चलित चित्र है । आनन्द इसमे है कि यह किसी अछूते अदृश्य की एक नई अदा है । इल्म, अलम और खिल्वत आरिफ के लिए ज़रूरी हैं, पर यहा कही गई है इन्हे छोडने की बात । ठीक तो है ।—महल बन गया अब मसाला, मेमार और औज़ार क्यो ?

कहते हैं—आरिफ सिवा खुदा के किसी को नही देखता, इसीलिए उसे तास्सुफ यानी अफसोस भी नही होता । सेब और दूधवाली रात पर फटकार पढी थी । सेब लतीफ है । सेब नही, लतीफ अल्लाह है और दूध दर्द करे ? यह शिर्क नही तो क्या है ? जो कुछ करता है करने वाला ही करता है। आरिफ यही जानता है और खुदा को ही देखता है । करने वाला खुदा है। वह जो कुछ करता है, अच्छा करता है, फिर खेद या अफसोस क्यो ?

कहते—जब बदा यकीन की हकीकत से कमाल को पहुचा, बला उसके नज़दीक नेमत हुई और मुसीबत रज़ा होती है । कमाल पर पहुचने से पूर्व ही मानव की चित्तशक्ति शरीर से हटकर ब्रह्माण्ड मे केन्द्रित होने लगती है और जब वह वहा पूर्णत समस्थित हो जाती है तो उसका देहाध्यास यहा तक जाता रहता है कि उसके अग को काटो, कूटो, जलाओ, उसे खबर ही नही होती ।

इसी पुस्तक के एक सत की जीवनी मे आया है कि उसका हाथ खराब हो गया था । जर्राह की सलाह थी कि उसे काट दिया जाय,

पर वह काटने की इज़ाजत नही देते। आखिर मुरीदों ने कहा, जब ये नमाज मे हो, उस समय हाथ काटना। ऐसा ही हुआ। जब वह नमाज मे थे, जर्राह ने हाथ काटा, मरहम-पट्टी की। उन्हे इसका कुछ भान-ही न हुआ, क्योकि नमाज मे उनकी चेतना शरीर से असलग्न थी।

हा, तो सत्य, श्रद्धा और दृढ विश्वास के बल पर जब मनुष्य की चेतना देह से असबद्ध होकर शिखरस्थ होती है तो मुसीबत उसके लिए मुसीबत नही रह जाती और न बला उसके लिए बला रह जाती है। किसी कष्ट, किसी तकलीफ का उसे एहसास ही नही होता कि सुख-दु:ख जैसी कोई चीज उसे व्यापती ही नही।

कष्ट नही पहुचता, यहा तक तो ठीक, पर बला नेमत हो जाती है और मुसीबत रजा (चिन्मयी आशा) होती है, यह कैसे माना जाय ? जब कष्ट नही रहा तब न वह मुसीबत रही न बला रही। अब जो ऊंचा भक्त और ज्ञानी है वह यह खूब जानता है कि जो कुछ होता है वह ईश्वर की प्रेरणा से ही होता है। करने वाला एकमात्र वही है और वह अच्छा है, कृपालु है, कल्याणस्वरूप है, इसलिए जो कुछ करता है, अच्छा ही करता है।

यदि किन्ही ज्ञात या अज्ञात, ज्ञेय या अज्ञेय कारणों से वह कृपालु ईश्वर कोई ऐसी घटना सघटित करता है जो दुनिया की दृष्टि मे कष्ट-प्रद या जघन्यतापूर्ण हो तो वह जानता है कि भले के लिए ही यह हो रहा है। इतना ही नही, वह चाहे तो देख सकता है कि यह बला उस भलाई के लिए आई है और ऐसी अवस्था मे वह उस बला का हार्दिक स्वागत करता है और सचमुच वह उसके लिए नेमत हो जाती है।

अतिम पद है, मुसीबत रजा हो जाती है। रजा कहते है आशा को, उम्मीद को। मुसीबत मे निश्चय ही किसी महान कल्याण की भावना सन्निहित होती है, इसलिए मुसीबत या दुःख का आना उसके लिए चिन्मयी आशा का प्रतीक होता है। मुसीबत नही आ रही है, क्योंकि उसमे कष्ट तो है ही नही; उसका जो डर है वह टूट गया—बल्कि उसके लिए किसी मनोरम स्वर्णविहान का उदय हो रहा है। मसूर की तरह ऐसा वह मानता है।

इनकी सूक्ति का एक अश है—मुशाहिदए-अरवाह और मुशाहिदए-कुलूब तहकीक है, यानी निश्चत हैं, सत्य हैं। कहते है, जमा यानी ऐक्य समष्टि हक है कि तमाम अशिया (चीज़े) उसपर कायम है और फरीक यानी नानात्व (विभिन्नता) सनत खल्क की है, झूठी है। इल्म वह है कि अल्लाह ने हज़रत आदम को इस्म की तालीम फरमाई। मुतवक्किल को बेजरिया अल्लाह से रोज़ी मिलती है। खल्क से रजो-राहत न पाने वाला मुतवक्किल है।

इनका कहना है—तवक्कुल दरअसल इब्राहीम प्रभु के प्रिय ने नमरूद के द्वारा आग मे जलाये जाने पर किया था कि वह खुदा के फरिश्ते जिब्रयील से भी मदद के तालिब न हुए। खुद उन्होने कहा कि आपको जो ख्वाहिश हो बयान कीजिये, मगर प्रभुभक्त इब्राहीम ने यही उत्तर दिया कि मुझे सिवा अल्लाह के किसी से किसी तरह की भी ख्वाहिश नही है।

यह कहते हैं—मुतवक्किल का ऐसा मर्तबा है कि अगर आग पर चले तो आग उस पर असर न करे। यही नही—जाहिल से दूर रहना, आलिम की सोहवत इख्तियार करना और इल्म पर अमल करना और अल्लाह की इवादत करना इस्लाम की राह है। किसी ने तसव्वुफ के बारे मे पूछा तो कहा—तसव्वुफ वह था कि जो पुराने बुज़ुर्ग कर गए। यह उन्ही का हक था और उन्ही तक रहा।

इनकी एक अच्छी सूक्ति है—अमानत हुजूर से जर्रात कुलूव के है। यह जो दिल बना है उसके ज़र्रे आये कहा से है ? अमानत हुजूर से। ये दिल के ज़र्रे उन्ही की अमानत है और क्यो न हो, आखिर उन्होने दिल को अपना वासस्थान बनाया है। सत कहते हैं, सबको अल्लाह ने खिताब किया और वे सब ज़र्रे की सूरत मे थे। अल्लाह ने कहा —क्या मैं नही हू तुम्हारा परवरदिगार ? उत्तर मिला—बेशक तू ही है हमारा परवरदिगार।

: १९ :

मुहम्मद अली हकीम

संत मुहम्मद अली तरद के रहने वाले थे, इसलिए इनके नाम के आगे तरदी भी लिखा जाता है। हिकमत मे इनकी अच्छी गति थी, इसलिए हकीम कहलाते थे। और कुछ लोग तो इन्हे हकीम-उल-औलिया भी कहते थे। यह ऊचे दर्जे के विद्वान् और तार्किक थे। बहस मे कोई उनका मुकाबला न कर सकता था। इनकी पुस्तकें इतनी रहस्यभरी थी कि खिज्र ने भी इन्हे देखने की इच्छा प्रकट की।

पर इनके जीवन की विशेषता, इनकी आध्यात्मिकता और विद्वत्ता की आधारशिला थी इनकी मातृभक्ति। बचपन मे यह दो साथियो के साथ इस निश्चय पर पहुचे कि किसी दूसरे देश मे चलकर विद्याध्ययन करना चाहिए। इनकी माता ने सुना तो कहा, "मैं बूढी और कमज़ोर हू, मेरी सेवा कौन करेगा?" इन्होने अपना विचार बदल दिया और वे दोनो विद्यार्थी चले गये।

माता की भक्ति से प्रेरित होकर इन्होने विद्याध्ययन के लिए देशाटन का विचार तो छोड दिया, पर इल्म हासिल करने की जो लगन दिल मे लगी थी वह तो चुप बैठने देने वाली न थी। लिखा है कि एक बार यह कब्रिस्तान की सुनसान फिज़ा मे बैठे रो रहे थे और कह रहे थे कि मेरे मित्र जब इल्म हासिल करके आयेंगे तो मुझे बडी लज्जा का सामना करना होगा; मैं तो उन्हे मुह भी न दिखा सकूगा, बात करना तो दरकिनार।

अचानक एक सौम्य वृद्ध पुरुष दृष्टिगोचर हुए। उन्होने बालक को रोते देखकर कहा—"तुम कुछ चिन्ता न करो। रोज यहां आकर पढ जाया करो। मैं खुद तुम्हे पढाऊगा और इशा-अल्लाह तुम इतने अच्छे

आलिम बन जाओगे कि तुम किसी से न हारोगे, सब तुमसे हार जायेंगे।" तीन साल तक पढकर इन्होने अच्छी विद्वत्ता प्राप्त कर ली और तब इन्हे मालूम हुआ कि इतने प्रेम से पढाने वाले बुजुर्ग कौन है। वह और कोई नही, भूले-भटको को राह बताने वाले खिज्र ही थे।

इनके हृदय मे यह विश्वास जड पकड गया कि मेरा विद्याध्ययन जो इतने सुचारु रूप से, इतनी सफलता के साथ और ऐसे अलौकिक विद्वान् के आचार्यत्व मे सम्पन्न हुआ, उसमे निश्चय ही माता की वरद अनुकपा का शुभ फल है। फलत. मातृभूमि और माता के प्रति कृतज्ञता की भावना और भी सुदढ हो गई।

खिज्र ने इन्हे तीन साल ही शिक्षा दी हो ऐसी बात नही, क्योकि सत अबुबकर वराक का कहना है कि उसके बाद भी खिज्र हफ़्ते मे एक वार मुहम्मदअली की मुलाकात को आते और यह बहुत देर तक उनसे विविध विषयों पर वाद-विवाद किया करते। ऐसी अवस्था मे इनका यह दावा कि एक बार यह्या बिना मुआज़ राजी, जिनके साथ अक्सर वाद-विवाद होता था, इनकी दलीलें सुनकर दग रह गये, अहकार-सूचक न होकर इनकी विलक्षणा प्रतिभा का आनन्दमय दिग्दर्शन कराने वाला ही कहा जा सकता है।

सत वराक का कहना है कि एक वार इन्होने अपनी रची हुई पुस्तकें देकर उनसे कहा कि इन्हे दजला (नदी) मे डाल आओ। वराक ने उन पुस्तको को सरसरी नज़र से जो देखा तो उनमे वडे ऊचे ज्ञान की झलक उन्हें मिली। दरिया मे ऐसी वहुमूल्य पुस्तकें डालने को उनका मन राज़ी न हुआ, इसलिए पुस्तकें अपने घर मे रखकर उनसे जाकर कह दिया कि मैं पुस्तकें दरिया मे डाल आया। सत मुहम्मद अली वोले—"तेरा घर दरिया नही है; अभी जा और उन्हे डाल के आ।"

मजबूर होकर वराक उन पुस्तको को लेकर दरिया मे डालने गये। मगर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उन्होंने देखा कि पुस्तकें दरिया मे डालते ही एक सदूक निकला, जिसका ढक्कन खुला हुआ था। पुस्तकें उसमें चली गईं, सदूक का ढक्कन वन्द हुआ और वह दरिया मे विलीन हो गया। वराक ने जव यह हाल जाकर सुनाया तो मुहम्मद अली

बोले—"मेरी इन रचनाओ को खिज्र ने मागा था। एक मछली वह संदूक लायी थी और वही उसे खिज्र के पास पहुंचा देगी।"

बराक द्वारा उद्धृत एक घटना का और उल्लेख आया है। उनका कहना है कि एक बार यह मुझे एक बियावान जंगल मे ले गये। मैंने देखा, एक बुजुर्ग स्वर्ण-सिहासन पर बैठे है और पास ही एक नदी बह रही है। उन बुजुर्ग ने संत को देखते ही उठकर उनका स्वागत किया और ससम्मान उन्हें स्वर्ण-सिहासन पर समासीन किया। फिर एक-एक करके चालीस बुजुर्ग और आये। इतने मे आसमान से खाना उतरा। सबने भोजन किया और कुछ बातचीत हुई, जिसे मैं न समझा।

बराक कहते हैं कि इसके बाद संत मुहम्मद अली ने मेरा हाथ पकडा और पलक मारते हम फिर तरद में आ पहुचे। मैंने पूछा—वह कौन मुकाम था और वे कौन बुजुर्ग थे? सत मुहम्मद अली ने उत्तर दिया कि वह मुकाम इसराइल था और बुजुर्ग कुतुब मदार थे। तब मैंने पूछा, आप इतनी जल्दी उस मुकाम पर क्योंकर गये और क्योकर इतनी जल्दी वहां से वापस आ गये? संत बोले—'यह राज (रहस्य) की बात है, बतायी नही जा सकती।'

सत मुहम्मद अली अपने बारे मे कहते है कि "मैंने बहुत कोशिश की कि नफ्स मेरे साथ इबादत में मशगूल हो, मगर वह न माना। आखिरकार मैं तग आकर दरिया मे कूद पडा, ताकि इस बेकार जिदगी को खत्म कर दू। मगर एक ऐसी लहर आई कि उसने मुझे किनारे पर लाकर पटक दिया। मैंने कहा—'या अल्लाह! तूने मेरे नफ्स को न जिन्नत के ही लायक रखा, न दोजख के ही काबिल।' मेरी नाउम्मीदी देख अल्लाह ने नफ्स को इबादत की ओर माइल कर दिया।"

एक बार का जिक्र है। संत हज करके जब लौट कर अपनी कुटी पर आये तो देखा, एक कुत्ती ने उसे अपना मस्कन (घर) बना लिया है और वहा बच्चे दे दिये हैं। इन्होंने उसको जबरदस्ती निकालना तो ठीक न समझा क्योंकि वे उसे और उसके बच्चों को कष्ट देना नहीं चाहते थे, मगर उनके पास कई बार जाकर खड़े हुए कि यह स्वयं ही परिस्थिति को समझकर अपने बच्चो को उठाकर चली जाय तो अच्छा है।

लिखा है कि वहीं पास ही मे कोई जाहिद रहता था। वह इनसे सख्त नाराज़ था और अक्सर इनको बुरा-भला कहता रहता था। उसी रात, जिस दिन अली हज से लौटकर आये थे, उसने स्वप्न मे देखा कि रसूल कह रहे हैं—"जो शख्स कुत्ती को भी तकलीफ देना नही चाहता, तू उससे दुश्मनी रखता है। अगर तुझे अपनी भलाई मजूर है, तो जाकर उसकी खिदमत कर।" वह जाहिद जब जागा तो फौरन इनके पास आया, क्षमा मागी और सेवा करके लाभान्वित हुआ।

इन सत की एक आदत प्रशसनीय ही नही बल्कि अनुकरणीय है। कहते हैं कि जब यह किसी से नाराज़ होते तो उसके साथ निहायत नरमी से पेश आते। हो सकता तो ऐसे अवसर पर अपनी अप्रसन्नता के पात्र को कोई लाभ पहुचाने की भी कोशिश करते। जाननेवाले इनकी इस हद से बढी हुई नरमी और सचेष्ट कल्याण-भावना से ही यह समझ लेते कि कोई कसूर हो गया है जिससे यह असतुष्ट हैं।

कसूरवार का कसूर क्या है, इसे प्रकट करने का भी इनका अपना एक अनोखा ढग था। अपराधी के लिए तो यह कृपा की मूर्ति ही बन जाते थे, किन्तु अपनी मनाजात मे ईश्वर से प्रार्थना करते कि "ऐ अल्लाह, मैंने तेरा क्या अपराध किया है जिसके दडस्वरूप तूने मुझे इस अवाछनीय, असतोष-मयी परिस्थिति मे डाला है? दया करके मेरे मन मे इस क्रोध की भावना को दूर कर दे और अमुक व्यक्ति ने जो बुरा रास्ता इख्तियार किया है उस पर रहम कर और उसे इस बला से बचा!" मनाज़ात सुनकर लोग समझ जाते और अपनी बुराई को छोड देते।

जो खिज्र इन्हे पढाने आते थे वह एक मुद्दत तक इनसे मिलने न आये और यह उनके दर्शनो को ललकते रहे। एक रोज़ इनकी नौकरानी ने, न जाने उसे क्या सूझा, पानी-भरा बर्तन इन पर फेंक दिया। दासी और यह गुस्ताखी! पर यह कुछ न बोले, बात को एकदम पी गये। मगर सबसे बडी बात यह थी कि जिन खिज्र को देखने के लिए यह तरस रहे थे वह उसी समय आ मौजूद हुए और बोले—"तुम्हारी सहनशीलता के कारण खुदा ने तुम्हारी मुराद पूरी की।"

इनका विश्वास था कि इसरार ज़ाहिर नही किये जाते, इसरारे-

सुलतानी ज़ाहिर करनेवाला मुकब्बिर नहीं होता। कहते थे कि जब तक इन्सान मे एक नफ़्सानी सिफत भी बाकी रहती है वह आज़ाद नही होता। उपनिषद् के ऋषि की तरह यह भी कहते थे, जिसे अल्लाह अपनी तरफ बुलाता है वही मरतबा पाता है। कुरान में आया है—जिसको अल्लाह चाहता है उसे अपना बनाता है और उसे हिदायत करता है। निश्चय ही आध्यात्मिक प्रेम और प्रगति सब उसी की इच्छा पर निर्भर है।

मानव का मन कितना अनिश्चित और अज्ञेय-सा है, इसका उदाहरण इन सत की जीवनी मे दृष्टिगोचर होता है। कहते हैं कि जवानी में यह बहुत खूबसूरत थे और एक भयंकर प्रलोभन इनके पीछे पड़ गया। यह उससे भागे। उसने देर तक पीछा किया, पर अंतत' यह बच निकले। चालीस वर्ष पश्चात् जब यह बूढे हो गये तब एक दिन मन मे ख़याल आया कि काश मैं उस औरत की ख्वाहिश पूरी कर देता और फिर तौबा कर लेता। वह थी भी बडी सुदरी और अमीर।

जब यह सजग हुए तब इन्हे अपने इस मानसिक पतन पर बड़ा पश्चात्ताप हुआ और लिखा है कि तीन दिन तक यह रोते रहे। तीसरी रात इन्होने रसूल को ख्वाब मे देखा कि वह कह रहे है, "तू रंज न कर, इसमें कसूर तेरा नहीं है बल्कि जिस कदर ज़माना मेरी वफात का दूर होता जाता है उसी कदर ऐसे असर बढते जाते है।" शक्ति क्षीण होने पर तो ऐसी घटनाओ के लिए मार्ग खुल ही जाता है, पर शक्ति होने पर भी रक्षा ईश्वर की कृपा ही करती है।

शैतान किस तरकीब से इन्सान के सीने में घुसा, इसका एक इस्लामी आख्यान है। शैतान ने हव्वा को बहकाया और उसके परिणामस्वरूप आदम और हव्वा दोनो स्वर्ग से बहिष्कृत कर दिये गये, यह आख्यान तो सुप्रसिद्ध है ही। जब इन दोनों ने तौबा की और इनकी तौबा कबूल हुई और ये एक जगह रहने लगे, तब शैतान ने इन पर एक गहरा फंदा फेंक इन्हें और इनकी औलाद को पूर्णत: अपने कब्जे में करने का मंसूबा बांधा और इसके लिए एक चाल चली।

खन्नास नाम का शैतान का एक बेटा था। वह उसे अपने साथ लेकर हव्वा के पास उस वक्त पहुंचा जब वह अकेली थी। ममशा-मुताबिक वह

खनास को हव्वा के पास छोड़ आया, यह कहकर कि थोडी देर मे आकर उसे ले जायेगा। आदम जब आये तो खनास को देखकर हव्वा पर बहुत नाराज़ हुए और गुस्से मे आकर खनास को मार डाला। शैतान ने आकर जब हव्वा से मब हाल सुना तो उसने खनास को आवाज़ दी और खनास जैसा पहले था, सही-सालिम वहा आ खडा हुआ।

चकित हव्वा को शैतान ने फिर खनास को अपने पास थोडी देर तक रहने देने के लिए राज़ी कर लिया। अब जो आदम आये तो और भी नाराज़ हुए और उसे मार कर जला डाला और उसकी खाक आधी तो दरिया मे डाल दी और आधी हवा मे उडा दी। हव्वा को अकेला पाकर शैतान फिर आया और उसके आवाज़ देते ही खनास फिर सजीव होकर सामने आ खडा हुआ। भोली हव्वा अब भी न समझी। और शैतान के कहने से खनास को अपने पास रख लिया।

आदम ने आकर तीसरी बार जब खनास को हव्वा के पास पाया तो वह आपे से बाहर हो गये। उसे मारकर उसका गोश्त पकाया, आप खाया और हव्वा को खिलाया। अबकी बार जब शैतान आया और यह हाल सुना तो बहुत खुश हुआ, क्योकि वह चाहता यही था कि किसी तरह खनास का गुज़र आदम के सीने मे हो जाय। इस तरह शैतान इन्सान के अन्दर घुसा और इससे बचने का इलाज यही है कि इन्सान किसी भी प्राणी को मारना और खाना छोड दे।

केन और ऐबल का ईसाई आख्यान भी इसी नतीजे पर पहुचाता है। आदम के ये दो बेटे थे और सब मिलकर कद-मूल और फल-फूल पर बसर करते थे। अचानक केन ने धनुष-बाण बना जानवरो को मारकर खाना शुरू किया। ऐबल ने उसे ऐसा करने से मना किया। हिंसा तो केन के अतर मे प्रविष्ट हो ही चुकी थी। उसने गुस्से मे भरकर अपने भाई ऐबल को भी मार डाला। पहले प्राणियो को मारा, फिर मानव को। इस आख्यान मे सकेत स्पष्ट है।

सत मुहम्मद अली ने यह कहानी सुनाई थी लोगो को यह उपदेश देते हुए कि नफ्स से होशियार रहो, क्योकि नफ्स मे शैतान रहता है। नफ्स मे शैतान इसी हिंसा के द्वार से प्रविष्ट हुआ, इसलिए नफ्स को काबू में

करने के लिए जहां सच्चे दिल से इबादत करना आवश्यक है वहां सच्चे दिल से इबादत करने के लिए मनःस्थिति को अनुकूल बनाने के निमित्त ऊपर के आख्यान से जो संकेत मिलता है उससे लाभ उठाकर हिंसा और आमिष से बचना भी आवश्यक है।

इनकी कुछ सूक्तियां हैं, जिनमे से एक है—"जवामर्दी यह है कि क़यामत मे सिवा खुदा के किसी का दामन न पकडे।" ये शब्द तो सीधे-सादे हैं, पर इनमे जो ध्वनि है वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसका एक भाव तो यह है कि कयामत मे किसी के भी खिलाफ इंसान का नालिश न होगा। जो कुछ किसी ने भला-बुरा अपने साथ दुनिया मे किया उसका करने वाला सच पूछो तो वही है जो अब मुंसिफ बनकर बैठा है। ऐसी अवस्था में किसी इंसान का दामन पकडना और उससे बदला चुकाना या उसको दंडित करने की इच्छा रखना जवामर्दी तो नहीं ही है।

एक सूक्ति है—"अजीज वह है जिसे गुनाह ने ख्वार न किया हो।" यह मानकर चलना ठीक होगा कि यह सिक्के का दूसरा रुख है। किसी और को दोषी न मानना पर अपने को दोषी समझना यह लंगडा कर चलना है, जो दूसरे के द्वारा तुम्हे दुःख देता है वही तुम्हारे द्वारा दूसरे के साथ खेलता है, यह बात बिलकुल साफ समझ मे आने लायक है, पर काम करते समय मनुष्य इस बात को भूल कर अपने को कर्ता मान बैठता है।

कोई अच्छा काम मनुष्य से हो जाता है, तो उससे जो आनन्द मिलता है। उसके नशे मे उस कार्य का श्रेय लेने को शायद अनजान मे ही उसका हाथ फैला बैठता है। यही पर रोक आवश्यक है।

ये कितने अच्छे शब्द है—"अजीज वह है जिसे गुनाह ने ख्वार न किया हो।" सीधा अर्थ तो यह है कि जिसने कोई गुनाह न किया हो। पर इन शब्दो का भी महत्त्व है—जिसे गुनाह ने ख्वार न किया हो। गुनाह तो कोई उससे होगा नही और कोई ऐसी बात होती है जो लौकिक दृष्टि से गुनाह की सजा मे आती है तो वह उसे अपने मन को छूने नही देता। जो उसी को सदा सामने देखता है, वह अजीज क्यों न होगा?

वह कहते थे—"वह आजाद है जो निर्लोभ हो और अमीर वह है

जिस पर शैतान काबू न पाये । आकिल वह है कि परहेज़गारी और नफ्स की मुखालिफत अल्लाह के लिए करता हो ।" यह भी कहते—"खुदा से डरने वाले उसी के पास दौडते हैं, हालाकि कायदा यह है कि इसान जिस चीज़ से खौफ करता है उससे दूर भागता है । जो दीन हासिल करने की कोशिश करता है उसके दुनियावी काम बेकोशिश हासिल हो जाते है । इबादत बेनीयत फजूल है ।'

यह भी कहा—"जिसने नफ्स को न पहचाना वह खुदा को नही पहचान सकता । सौ भेडिये भेडो के गिरोह को उतना तबाह नही कर सकते कि जितना शैतान इसान को तबाह करता है और सौ शैतानो से ज्यादा बहकाने वाला नफ्स है ।" और "अल्लाह रिज्क का ज़ामिन है, पस बदो को उसपर तवक्कुल लाजिम है । अल्लाह के सिवा दूसरे का शुक्र न करो और सिवा उसके किसी के सामने आजिज न बनो । ज़िक्र से उन्स पैदा करना अल्लाह की मुहब्बत की अलामत है ।"

एक सूक्ति यह है—"लोगो का ख्याल है कि दिल असीम है, पर यह बात गलत है । बल्कि राह असीम है, क्योकि हर दिल का गुमान मालूम और राह की इतिहा नामालूम है ।" ग्रथकार अत्तार के अनुसार इस कौल का मतलब यह है कि दिल ससीम है, जैसा कि उसने अपनी पुस्तक शरह-उल-कुलूब मे कुछ विस्तार के साथ इस मस्ले पर विचार करके बयान किया है ।

२०

समनून मुहब

समनून तो इन सत का नाम है और मुहब कहते हैं मुहब्बत करनेवाले को । चूकि इनका मजहब मुहब्बत था, मुहब्बत को ही यह सब-कुछ समझते थे, इसलिए लोग इन्हे समनून मुहब कहते थे । इनका सिद्धान्त है कि मुहब्बत ही असली चीज़ है और यही राहे-हक का कानून है । और सब बातें मुहब्बत के सामने हेच हैं ।

मुहब्बत इसान की इंसान से, इसान की खुदा से और इंसान की जीव-मात्र से हो सकती है; पर इनकी मुहब्बत का कुछ और ही रंग है। कहते हैं कि एक बार यह हज से वापस आते हुए एक स्थान पर ठहरे तो वहा के लोगों ने इनसे प्रवचन के लिए तीव्र आग्रह किया। उनकी बात मानकर उन्होने वाज (उपदेश) कहा, पर किसी पर कुछ असर न हुआ। तब इन्होने उन कन्दीलो को, जो मजलिस मे जल रही थी, मुखातिब हो कहा कि अब मैं तुमसे मुहब्बत बयान करता हू। अब जो इन्होंने मुहब्बत का जिक्र शुरू किया तो कन्दीलें एक-दूसरे से टकराकर टुकडे-टुकडे हो गई। मालूम नही, पहले भी इनका यही मजमून था या इन्हें यह दिखाना था कि कदीलें भी असर से बाहर नही।

एक बार और कही मुहब समनून मुहब्बत का बयान कर रहे थे कि एक कबूतर बेकरार होकर हवा से उडकर आया और इनके सिर पर आ बैठा। फिर सिर से उतरकर इनकी गोद मे आया और फिर हाथ पर बैठा। जब और बेकरारी बढी तो वह जमीन पर उतरकर अपनी चोच से जमीन कुरेदने लगा। यहा तक कि उसकी चोच से खून बहने लगा और वह वही पर मर गया।

समनून ने विवाह किया और इनके यहा एक लडकी पैदा हुई। उस लडकी से इनको बहुत प्रेम था। अपनी उसी मन स्थिति मे इन्होंने स्वप्न देखा कि कयामत लगी हुई है और एक झडा मुहब्बो, प्रेममार्गियो का भी लगा हुआ है। यह भी उस झंडे के नीचे आकर खडे हो गए, मगर फरिश्तो ने इनको वहा से हटाना चाहा। यह चकित होकर कहने लगे—"मुझे लोग समनून मुहब्ब कहते हैं। जब अल्लाह ने मुझे मुहब्ब मशहूर किया है तो आप क्यो मुझे-मुकामे-मुहब्बत से दूर करते हो?" फरिश्ते बोले—"पहले तू मुहब्ब था, इसमे सन्देह नही; मगर जब से तूने अल्लाह के सिवा लडकी की मुहब्बत को भी अपने दिल में जगह दी है, तबसे तेरा नाम प्रेमियो की सूची से निकाल दिया गया है।"

यह करारी चोट खाकर स्वप्न की हालत में ही इन्होंने दुआ की—"ऐ अल्लाह! अगर लडकी मुझे तेरी मुहब्बत से जुदा करती है तो उसे उठा ले।" इधर इनकी दुआ खत्म हुई और उधर घर में शोर उठा

और इनकी आख खुल गई पूछा, यह शोर कैसा है ? तो मालूम हुआ कि ... लडकी छत पर से गिरकर मर गई। इस तरह स्वप्न की इनकी दुआ कबूल हुई और इन्होने अल्लाह को शुक्र भेजा।

समनून ने मुहब्बत की जो व्याख्या की है वह महत्त्वपूर्ण और सस्मरणीय है। यह कहते थे कि मुहब्बत ज़िक्रे-दायमी का नाम है। अज करो अल्लाह ज़िक्र अक्सीरा—अर्थात् 'अल्लाह का जिक्र जितना हो सके ज़्यादा से ज़्यादा करो।' यह वस्तुतः मुहब्बत पैदा करने का एक साधन है। क्योकि जिस दिल मे मुहब्बत है वहा तो ज़िक्र बिना किये ही हो रहा है। वहा किसी और बात की गुजाइश ही कहा ?

कहते थे कि मुहब्बते-हक से दुनिया और आखिरत को शर्फ है। मुहब्बत के भी हजार दर्जे हैं। वह जो अपने प्रेमपात्र से कुछ नहीं चाहता, जो अकारण, कामनारहित होकर प्रेम करता है, वह तो प्रेमी है ही, मगर भगवान का प्रेमी बनने का एक साधन यह भी है कि जो कुछ मागना है, वह और किसी से न मागकर उसी से मागा जाय, जिससे औरो का आभारी न होना पडे।

मुहब्बत करनेवालो की नजर तो कुछ ऐसे धोखे मे पडे रहना पसद करती है कि उनका आराध्य देव सबसे अधिक सुन्दर, सबसे अधिक मधुर और सबसे अधिक प्यारा है इसलिए यह किसी के वश मे ही नही कि वह उसकी प्रेमरज्जु मे बध न जाय। जो उसे नही चाहते-से दीखते है, वे भी मन-ही-मन चुपके-चुपके उसकी ही माला जप रहे हैं और उसी के प्रेम के भूखे है।

ऐसे लोगो को धोखे मे मामना ठीक न होगा। क्योकि वस्तु-स्थिति यह है कि जो उसकी परवाह नही करते और वे जो उसका साभिमान विरोध करते हैं वे खुद धोखे मे है। कही भी छिपकर फूल खिला, मधुमक्खी वही पहुचकर उसका रस लेती है। वह भी हजार रूप धरकर, जो उससे प्रेम चुराना चाहते हैं उनके हृदय का प्रेम खुले-आम चुरा ले जाता है।

तुम्हे फूल अच्छा लगता है, तो वह सवेरे जब तुम अभी सोते ही हो, एक खूबसूरत फूल बन कर तुम्हारे बाग मे उग आता है और तुम्हे धोखा देने के लिए अपने मुखडे को नीहार-मुक्ता से ऐसा सजाता है कि तुम ठगे-

से एकटक उसकी ओर देखते ही रह जाते हो; और जव तुम समझते हो कि तुम उसे देख रहे हो तव वह कभी न छकने वाला प्रेम-पिपासु चुपचाप रस-पान करता है।

मुहब्वत का दावा करना अच्छा लगता है और जिससे मुहब्वत होती है उस पर अपने प्रेम को प्रकट करने के लिए बात वढ-चढकर न की जाय, यह असम्भव है। मुहब्वत जो सोचती है उसी को सत्य जानती है; वह सत्य का अनुसरण करने की चिन्ता मे नही पडती, वह तो दुनिया और मफीहा (जो कुछ उसमे है वह मवको) अपने ही रग मे पूर्णत रँग लेने के लिए उतावली-सी वनी रहती है।

समनून भी मुहव थे। वह भला अपने मज़हव के मामले मे किसी से पीछे कैसे रहते ? इसलिए मनाज़ात मे एक दिन बोले—'ऐ अल्लाह, अगर तू तकलीफ देकर मुझे आज़माये तो साबिर पायेगा।" मुहब्वत की दुनिया मे रहनेवालो को कुछ और तो होता नही, सिवा इसके कि हर मुमकिन और नामुमकिन तरीके पर अपनी मुहव्वत का इज़हार करे। चुनाचे इन्होने कहा और स्वीकार कर लिया।

उसी रात को वडे जोर का दर्द हुआ, पर यह जी कडा किये चुपचाप पडे रहे। अपनी तरफ से इन्होने आह तक न की, क्योकि बला पर सब्र करने का दावा उसी दिन तो इन्होने किया था। सुवह हुई और दर्द भी कम हुआ। दिल मे यह अपने को शाबाशी दे रहे होगे कि खूव मैदान जीता, तभी कुछ पडौसी मिजाजपुरसी के लिए आये और कुछ कहकर उन्हे आश्चर्य मे डाल दिया।

आश्चर्य की वात यह थी इन्होने तो आह तक न की थी, पर पडोसियो ने आकर कहा—कल रात क्या वात थी जो आपने इस कदर आहो-फरियाद की ? यह इस निष्कर्प पर पहुचे कि अल्लाह ने वताया है कि असली खामोशी तो वातिन की (आन्तरिक) खामोशी है, जुवान की नही। जैसा अत्तार ने लिखा है कि इनके सूक्ष्म शरीर मे इनकी सूरते-हाल ने रात-भर फरियाद की थी।

ऐसी ही एक और घटना का उल्लेख इनकी जीवनी मे आया है। वड़ी शान से इन्होने यह आयत पढी—"मुझे सिवा तेरे किसी से आराम

नही है। और न किसी तरफ मेरा दिल माइल है।" उसी वक्त ज़िस्म मे सख्त तकलीफ मालूम हुई। हारे हुए जी से मकतब के लडको से कहा—"बच्चो, दुआ करो कि अल्लाह झूठे शख्स को शफा बख्शे।"

सतो मे भी पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष का नितात अभाव नही, इसलिए अबु मुहम्मद मगज़नी की कही हुई यह कहानी उल्लेखनीय है। मगज़नी कहते हैं कि मैं बगदाद मे उनके साथ था। किसी ने चालीस हज़ार दिरम फकीरो को तकसीम किये, मगर हम दोनो को कुछ न दिया। इस शुक्र मे इन्होने चालीस हज़ार रकअत नमाज़ अदा की और मैंने भी नमाज़ मे उनका साथ दिया।

गुलाम खलील अपने को सूफी कहता था और खलीफा के सामने हमेशा दूसरे सूफियो की निंदा इसलिए करता कि लोग औरो से बदज़न होकर उसके भक्त बन जाय। इधर कुछ बात ऐसी बनी कि जब समनून की प्रसिद्धि हुई तो एक स्त्री ने आकर्षित होकर इनसे निकाह करना चाहा, पर इन्होने अस्वीकार किया। वह स्त्री हार मानने वाली न थी। सीधी जुनैद के पास पहुची कि वह समनून से सिफारिश कर दें। जुनैद ने तब उसे अपने यहा से निकलवा दिया। तब वह बदला लेने पर तुल गई और उसी गुलाम खलील के पास जाकर समनून पर जिना की तोहमत लगा दी। गुलाम तो इस फिक्र मे था ही कि सूफियो को गिराने का कोई मौका मिले, उसने खलीफा के पास जाकर समनून के कत्ल का हुक्म करा लिया।

समनून और जल्लाद दरबार मे बुलाये गये। दोनो के आने पर खलीफा ने समनून के कत्ल का हुक्म देना चाहा, मगर उसकी जुबान बन्द हो गई। वह बोल ही न सका। उस दिन कत्ल मुल्तवी रहा। रात को खलीफा ने ख्वाब देखा कि कोई कहता है, कि 'अगर तूने समनून को कत्ल किया तो मुल्क बर्बाद हो जायगा।' सुबह होते ही खलीफा के इनको बुलाकर माफी मांगी और रिहा कर दिया।

"जो शख्स जिस चीज को दोस्त रखता है उसके साथ उसका हश्र होगा, अतएव मुहब्बाने-खुदा (ईश्वर-प्रेमी) कयामत मे भी अल्लाह के साथ ही होगे।" ऐसा हदीस मे लिखा है और समनून मुहब इसका अपने

भक्तो मे उल्लेख करते हैं। निश्चय ही जो सारी उम्र खुदा का दोस्त रहा, उसे ही दिलोजान से प्यार करता रहा, कयामत मे फिर भला वह खुदा से जुदा कैसे हो सकता है।

कहते थे—"औसाफे-मुहब्बत बयान से बाहर है। और मुहब को बला मे अल्लाह ने इसीलिए गिरफ्तार किया है कि हर कसोनाकस (छोटा-बड़ा, बुरा-भला) उसकी मुहब्बत में कदम न रखे।" यह सच है, मुहब्बत को उसने आसान नही बनाया है। मुहब्बत उसे प्यारी है। मुहब्बत की उसे चाह है। पर मुहब्बत की राह मे काटे भी अनगिनती बिखेरे हैं।

इनकी एक ज़ोरदार सूक्ति है—"फकीर वह है जो फुक्र से उसे ऐसा पकड़े जैसे जाहिल माल से उन्हे पकड़ते हैं और फकीर को नकदी से ऐसी नफरत है जैसी जाहिल को फुक्र से होती है।" साथ ही यह भी इनकी एक अच्छी-सी दूरदर्शितापूर्ण सूक्ति है—"तसव्वुफ यह है कि कोई चीज़ तेरी मिल्क न हो और न तू किसी की मिल्क ले।" वस्तुतः जिसका दिल साफ हो वही सूफी है और ससार से अनासक्ति ही तसव्वुफ है।

: २१ :
अबु बकर वराक़

अबु वकर वराक मुत्तकी और परहेज़गार थे और लिखा है कि अदब मे बेमिस्ल थे, इसीलिए अक्सर सूफी लोग इन्हें 'मुअद्दब-उल-औलिया' (शिष्ट महात्मा) कहा करते थे।

अदब मुस्लिम सस्कृति की एक विशेषता है और बहुत-से संतो की जीवनी मे इसका उल्लेख और उसके दृष्टान्त हैं, मगर इनकी जीवनी मे अदब का कोई विशिष्ट दृष्टान्त दृष्टिगोचर नही हुआ। इतना उल्लेख अवश्य आया है कि ईश्वर का खौफ़ इनके दिल मे इतना अधिक था कि यह मस्जिद के कयाम नही करते थे, बल्कि जब नमाज पढ़ने जाते तो

आवश्यकता से अधिक वहा क्षण-भर भी नही ठहरते और नमाज़ पढकर बहुत जल्दी वहा से वापस आ जाते थे। इसे मस्जिद का अदब भी कह सकते हैं, क्योकि खुदा तो आखिर सभी जगह है।

लिखा है कि इन्हे खिज्र से मिलने की बड़ी इच्छा थी। उनकी तलाश मे अक्सर सहारा मे जाते और आते-आते कुरान की आयतो का पारायण करते। एक बार एक वयोवृद्ध पुरुष इन्हे रास्ते मे मिले और बातें करते हुए साथ हो लिये। जब यह घर वापस पहुचे तो उन बुजुर्ग ने कहा—"तुमने शायद मुझे पहचाना नही, मैं खिज्र हू!" और खिज्र ने इन्हे एक बडी ही अच्छी सलाह दी। कहा—"तुम्हे मुझसे मिलने की बडी तमन्ना थी। ज़रा गौर करो कि आज मैं तुम्हारे साथ रहा तो तुम कुरान की तलावत न कर सके। जब खिज्र की सोहबत अल्लाह को भुलाती है तब दूसरो की सोहबत की तो बात ही क्या! वह तो एकदम ही तुम्हे अल्लाह से गाफिल कर देगी। इसलिए अच्छी बात तो गोशानशीनी (एकान्तवास) ही है।"

इनके एक साहबजादे बडे खुदापरस्त थे, वह खुदा के खौफ के वैसे ही शिकार हुए जैसे बहुत-से लोग पीछे की कहानियो मे जानबहक तस्लीम होते देखे गये। वह कुरान पढ रहे थे। जब एक आयत पर पहुचे तो एकाएक बीमार हुए और स्वर्गस्थ हो गये। आयत का भाव यह है—'एक दिन वह होगा कि लडके बूढे हो जायेगे।' यह उसकी कब्र पर रो-रोकर कहते—"मैंने बारहा इस आयत को पढा, पर कुछ असर न हुआ। उसने एक बार पढा और जान दे दी।"

यह अहमद खिजरविया के मित्रो मे से थे और बलख के रहनेवाले थे। मुहम्मद अली हकीम तरदी से इनकी विशेष घनिष्ठता थी और इनकी जीवनी मे उनका कई बार उल्लेख आया है। इन्ही के द्वारा उन्होने अपनी कुछ रचनाए खिज्र के अवलोकनार्थ भेजी थीं, जैसा कि पिछले परिच्छेद मे वर्णन आया है। मछली और दरिया इनके साधन थे।

किसीने इनसे वसीयत चाही तो कहा—"माल की कमी मे दुनिया और आखिरत, दोनो का फायदा है और ज्यादती मे नुकसान, और लोगो से मेलजोल रखना अल्लाह से जुदा करना है।" किसी औरत ने इनसे

पूछा, "तू कौन है?" बोले—"मुसाफिर हूं।" उसने कहा—"तू अल्लाह की शिकायत करता है?" उसकी इस डाट से यह बड़े प्रसन्न हुए और बोले, "मुझे यह नसीहत बहुत पसन्द आई।"

इनका कहना है कि एक बार अल्लाह ने मुझसे कहा—"माग, क्या मागता है?" मैंने कहा—"तू सब कुछ जानता है, क्या मागू। इतना जरूर चाहता हू कि मुझे विनम्रता प्रदान कर, क्योंकि मुझमे इतनी ताकत नही कि बला को मैं बर्दाशत कर सकूं।" कुछ ऐसे हुए है जो बलाओ के मुश्ताक थे, मगर बराक की विशेषता उनकी विनम्रता है।

कहते थे—"अमीरो की तबाही से खल्क की रोजी तबाह होती है, आलिमो की तबाही से मुसलमानो का दीन तबाह होता है और फकीरो की तबाही से खल्क का दिल तबाह होता है।"

इनकी सीधी और समझ मे आने लायक सलाह है—"जुबान से बुरी बात न कहो, कान से बुरी बात न सुनो आंख से कोई बुरी चीज न देखो, पाव से बुरी जगह न जाओ, हाथो से बुरी चीज न छुओ और दिल से अल्लाह को याद करो।" स्पष्ट है कि जितनी भी इन्द्रिया हैं उन्हें संयम मे रखना चाहिए। मन को बुरी बातो से हटाकर भले कामो मे लगाना चाहिए और सबसे भला काम है ईश्वर का भजन।"

कहते—"नबी के दर्जे के आगे कोई दर्जा नहीं है सिवा हिकमत के, और हिकमत की निशानी है खामोश रहना जरूरत के वक्त, और बात करना जरूरत के वक्त।" यह बात महत्वपूर्ण है, सभी के लिए व्यावहारिक और सभी के लिए मान्य और उपादेय है। मौके पर बोलना और मौके पर खामोश रहना हिकमत है और दर्जे मे नबी से भी बढ़कर।

कहते थे—"आरिफ को खामोशी पसन्द करनी चाहिए, आरिफ का कलाम मुफीदे-खल्क होता है।" और बड़ी ही बेबाक है इनकी यह सूक्ति—"जो नफ्स पर आशिक हुआ, रिश्क और हसद और [illegible] पर पै-दा हुई।' ऐसी ही दूरन्देशी से पुर है यह सूक्ति—"मजदूर से [illegible] करना तमा से भी ज्यादा बुरा है और इन्तिहा तमा की है बेशर्मी।"

कहते—"[illegible] मे आठ चीजों का वास्ता है। दिल में दो चीजें—एक ताजीमे-फरमान, दो खल्क पर शफकत। जुबान से दो

चीजें—एक इकरारे-तौहीद, दो खल्क से मीठा बोलना। तमाम अगो से दो बाते—एक खुदा की अताअत, दो खल्क की मदद। और खल्क से खुदा ये चीजें भी चाहता है—एक अपने पर सब्र, दो खल्क के साथ बुर्दबारी से पेश आना।"

ध्यान देने योग्य है—पतन की श्रेणियो का दिग्दर्शन। कहते थे कि एक बुजुर्ग का यह कौल है कि शैतान कहता है, मैं मोमिन को एकाएक काफिर नही बना सकता। पहले मैं उसे हलाल बातो पर हरीस बनाता हू। अर्थात् जो अच्छी और विहित बाते हैं उनके प्रति लोभ उत्पन्न करता हू, फिर उसे कामनाओ के वशीभूत करता हू। और जब गुनाह पर आता है तो कुफ्र का भाव दिल मे डालता हू।

इनका कहना है—"अल्लाह और नफ्स, शैतान और दुनिया, खलायक को पहचाननेवाला नजात पाता है और न पहचाननेवाला हलाक होता है। खल्क से उल्फत करनेवाले को खालिक की उल्फत हासिल नही हो सकती। सरदारी तलब करने वाला हिकमत नही पाता। आकिलो की पैरवी और जाहिदो को खातिर तवाज़ह करनी चाहिए और जाहिल जो नुकसान पहुचाए उस पर सब्र करना चाहिए।"

कहते—"इन्सान की उत्पत्ति पानी और मिट्टी से है, इसलिए जिसकी बनावट मे पानी ज्यादा हो उसे नर्मी से और जिसमे मिट्टी गालिब हो उसे सख्ती से अहकामे-इलाही सिखानी चाहिए।" और एक सुन्दर-सी सूक्ति यह है—"वह दरवेश अच्छा है जिससे दुनिया मे बादशाह खिराज न मागे और उकबा मे अल्लाह हिसाब तलब न करे। यकीन नूर है जो अहले-यकीन को मुत्तकी बना देता है।"

कहते—"जुहद मे तीन अक्षर हैं—ज़, ह, द। 'ज़' का मतलब है ज़ीनत की इच्छा छोड देना; 'ह' से मतलब है हिर्सो-हवा के खयाल से दूर रहना और 'द' का मतलब है दुनिया को तर्क करना।" और—"यकीन से दिल रोशन होता है। यकीन की तीन किस्मे हैं यकीने-सब्र—सूचना पाकर यकीन करना, यकीने-दलालत—दलील से यकीन करना, यकीने-मुशाहदा—प्रत्यक्ष का विश्वास करना।"

यह भी कहते—"अहले-मारफत पर हैबत और खौफ तारी होता

है। अहसानमद होना और हुर्मत को निगाह रखना शुक्र है। औकात को कुदरत से साफ रखना तवक्कुल है। साबिर वह है जो हर काम को अल्लाह की तरफ से खयाल करे। जिस तरह हराम लुकमे से यानी हराम रोजी से परहेज़ लाज़िम है, उसी तरह बदखुल्की से परहेज़ इख्तियार करो।" बदखुल्की का मतलब है—अशिष्ट व्यवहार।

देहावसान के बाद जब किसी को यह स्वप्न मे दिखाई पडे तो उसने पूछा—"अल्लाह ने आपके साथ क्या किया ?" बोले—"उसने अपना कुर्ब अता करके यानी पास बुलाकर मेरा ऐमालनामा हाथ मे दिया तो मैं उसे पढने लगा। उसमे एक ऐसा गुनाह लिखा हुआ था जिसकी तारीकी ने तमाम नेकियो को छिपा लिया था। मैंने शर्म से गर्दन झुका ली। हुक्म हुआ—हमने अपने करम से माफ किया।"

: २२ :

शेख़ अबुल ख़ैर

शेख अबुल खैर एक अच्छे सत थे। मगर इनके नाम के आगे अकता शब्द भी लगा है, जो सभवत 'कता' शब्द से सबधित है और जिसका अर्थ काटना या कटना होता है। इनकी कहानी पढकर कोई भी इन्हे 'कटे हाथो वाला' कह सकता है, और सभव है इसी कारण इनका नाम अकता पडा हो, यो अबु याकूब भी अकता कहलाते थे।

पुण्य कमाने के लिए धनी लोग फकीरो को कबल, खाना या रुपया आदि बाटा करते थे, जैसा कि इस देश मे आजकल भी होता है। लेबनान पर्वत पर जहा अबुल खैर रहते थे, उस देश का राजा आया और वहा जितने दरवेश थे, उन सबको उसने एक-एक दीनार दान मे दिया। सब के साथ बादशाह ने एक दीनार इन्हे भी दिया। इन्हे बादशाह से वह दीनार लेना सख्त नागवार गुज़रा।

बादशाह को यह लश्करी कहते थे। लश्करी शब्द से इनकी दृष्टि

मे यह जुगुप्सामय भाव निहित है कि एक आदमी लश्कर साथ लिये दूसरे को, खुदा की बनवाई खल्कत को, मारने-सताने का पेशा-सा बनाये घूमता फिरता है, जिससे खुदापरस्त दरवेश का दूर ही रहना अच्छा। बादशाह दीनार बाटते-बाटते जब इनके पास आया तो यह इन्कार न कर सके। दीनार तो ले लिया, मगर तुरन्त ही पास बैठे दरवेश को दे दिया। जान या अनजान मे आग पर हाथ पड जाना इनके लिए इतना खतरनाक न होता जितना एक लश्करी आदमी के दीनार को छू लेना हुआ, जैसाकि आगे के वर्णन से मालूम होगा।

वहा से यह शहर के लिए रवाना हुए और दैवयोग से एक अकल्याण-मयी घटना और भी घटित हो गई। कुछ अन्यमनस्कता की स्थिति मे बेवुजू होने की हालत मे इन्होंने अपने धर्म-ग्रथ कुरान को छू लिया। नापाक हालत मे पवित्र धर्म-ग्रथ को छू लेने वाला हाथ वही था जिसने दीनार लिया था।

यह शहर पहुचे तो देखा कि भीड लगी हुई है। किसी का कुछ माल चोर उठा ले गये थे। कुछ परेशान-हाल दरवेशो को पास खडा देखकर लोगो ने समझा कि माल चुराने वाले यही हैं और उन्हे चोर समझकर गिरफ्तार कर लिया। अबुल खैर ने जब यह हाल देखा तो आगे बढकर बोले—'सुनो लोगो, मेरी बात सुनो। ये जो दरवेश तुमने पकडे हैं इनका सरदार मैं हू। कसूर इनका नही, मेरा है। इसलिए इनको छोड दो और और जो कुछ भी सजा देना मुनासिब समझो, वह इन सबकी एवज मे मुझको ही दो।" और इधर अपने साथियो से कह दिया—"खबरदार! तुम इस मामले में कुछ न बोलना।"

लोगो ने समझा, मुजरिम खुद इकबाल कर रहा है इसलिए औरो को रिहा करके उन्होंने इन्हे ही असली चोर समझकर गिरफ्तार कर लिया। शरीयत के अनुसार चोरी की सजा यह है कि चोरी करने वाले के हाथ काटे जाय। यह चोर समझकर तो गिरफ्तार हुए ही थे, लिहाजा इनका एक हाथ काट डाला गया।

जब दड मिल गया, हाथ कट चुका, तब दड देने वालो को मालूम पडा कि यह तो सत-शिरोमणि शेख अबुल खैर हैं, चोर नही।

पर अब क्या हो सकता था ! जो कुछ होना था वह तो हो ही गया था। अत्यन्त लज्जित, दुःखित और मर्माहत-से हुए लोगो ने क्षमा-याचना करके इन्हे मुक्त कर दिया।

हाथ कटाकर जब यह घर पहुचे तो बाल-बच्चे इनकी यह हालत देखकर बहुत रोये-पीटे और शोर मचाने लगे। यह बोले—"रज न करो, बल्कि खुशी मनाओ; क्योंकि अगर मेरा हाथ न काटा जाता तो दिल काटा जाता, क्योंकि यह वही हाथ है जिसने बेवुजू कुरान छुआ और लश्करी का दीनार लिया।"

एक हाथ तो इनका यो गया, मगर दूसरा हाथ हके-रयाफत के जोश मे आकर पीछे कैसे रहता। उसमे फोड़ा निकला और उस फोडे ने अच्छा होने से इन्कार कर दिया। जर्राह ने हाथ काटने की सलाह दी, मगर यह राजी न हुए। आखिर मुरीदो ने कहा—"जब यह नमाज़ मे हो, तब तुम हाथ काट लेना। अली की कहानी पीछे आयी है। टखने मे घुसे हुए तीर को जर्राह ने उस वक्त निकाला जब वह सिजदे मे थे। कुछ ऐसा ही खेल अबुल खैर के साथ हुआ। जब यह नमाज़ मे थे, जर्राह ने इनका अच्छा न होनेवाला हाथ काट लिया और इन्हे खबर भी न हुई।

ये दोनो कहानी एक-सी हैं, पर थोड़ा-सा अन्तर है। अली के टखने मे तीर गहरा घुसा था, उसे निकालते हुए सख्त तकलीफ होती थी, इसीलिए स्वय अली ने ही जर्राह को यह सुझाव दिया कि सिजदे के वक्त वह अपना काम करे तो ठीक रहेगा, क्योंकि उस समय वह एक अच्छे योगी की तरह इद्रियो सहित अपने मन को चारो ओर से समेटकर ब्रह्म मे लीन हो जाते थे।

अबुल खैर अपने इस हाथ को कटाने के लिए राज़ी न थे। यह क्यो इन्कार कर रहे थे, इसका कोई कारण जीवनी-लेखक ने नही दिया है। सभवत अबुल खैर इस संबध मे किसी से कुछ चर्चा करना ही उचित न समझते थे। और मानना होगा कि ऐसी अवस्था मे हाथ का कटना और इन्हे खबर न होना बडी बात है।

लिखा है कि नमाज़ के बाद इन्होने अपना हाथ कटा हुआ देखा तब इन्हे सब हाल मालूम हुआ। ईश्वर के प्रेम मे मस्त होकर ऐसे

लवलीन हो जाना कि हाथ कटे और पता न चले, सचमुच बडी बात है; बहुत बडी बात है। उत्साहवर्धक है, पर ऐसी नही कि असभव हो।

सत अबुल ख़ैर का कहना है कि जब तक बदा अल्लाह के साथ नीयत सही नही रखता, उसका दिल साफ नही होता। यह अच्छी बात है। अल्लाह के साथ दिल साफ रखना आसान भी है, क्योकि यह अपने और अपने को बनानेवाले के बीच का ही मामला है और आसानी से निभ सकता है।

इनकी सूक्ति है कि "जब तक इन्सान औलिया अल्लाह की खिदमत नही करता तबतक तन की सफाई हासिल नही होती।" 'तन की सफाई हासिल नही होती', इससे इनका अभिप्राय यह है कि तन वैसा नही बन पाता जिसके अन्दर रहनेवाला मन साफ हो और सब भ्रग बुराई से दूर रहनेवाले हो।

आज सेवा की बात पर लोग हँसते हैं। पर सेवा-भाव का अभाव ही वस्तुत आध्यात्मिक ह्रास का मूल कारण है। जो सेवा नही करते, उन्हे सेवा द्वारा प्राप्त लाभ तो उपलब्ध नही होता, पर सत-जीवन स्वय भी मुरझा जाता है, क्योकि आख बन्द करके बैठने वालो की देखरेख आवश्यक है।

इनकी एक सूक्ति है—"दिलो के लिए मुकाम है। एक दिल का मुकाम ईमान है और जिस दिल का मुकाम ईमान है उसकी पहचान यह है कि मुसलमानो पर शफकत करता है, उनकी इच्छा-पूर्ति की कोशिश करता है और हर वक्त उनकी मदद करता है और ऐसे काम करता है जिनसे उन्हें लाभ हो। और एक दिल का मुकाम निफाक है। जिस दिल का मुकाम निफाक है उसकी पहचान यह है कि कीना, फरेब, दगाबाजी करने के लिए तैयार रहता है।"

इस सूक्ति मे मुसलमान शब्द आया है। उसका व्यापक अर्थ लेना श्रेयस्कर होगा, अर्थात् ईश्वरभक्त, भला आदमी। जो दिल अच्छे कामो की ओर जाय वह निश्चय ही अच्छे मुकाम पर है, पर जिस दिल मे अच्छे विचार न आकर बुरे विचार आये और हो, दूसरो को हानि पहुचाने वाले, तो समझो कि वह दिल खतरे मे है।

इनकी एक चीज़-भरी सूक्ति है—"दावा एक ऐसी रऊनत है जिसे पहाड भी नही उठा सकता।" इस अभिमान-भरे औद्धत्य का इलाज-सा बताते हुए यह कहते हैं—"हर्गिज कोई मर्तबाए-आला हासिल नही कर सकता, सिवा उस शख्स के जो अल्लाह के साथ पूरी-पूरी मुआफिकत करता हो।"

जिसे आला मर्तबा हासिल करना है उसे अल्लाह की मुआफिकत के साथ ही उरूदियत का अदब भी अच्छी तरह वजा लाना होगा और फरायज़े-हक को कामिल तौर से अदा करना होगा और नेक लोगो की सोहबत इख्तियार करके हमेशा इस बात से होशियार रहना होगा कि अनजाने मे भी बुरी सोहबत न करे।

: २३ :

अबुल अब्बास निहाबंदी

संत अबुल अब्बास निहाबदी की जीवनी से एक महत्त्वपूर्ण शिक्षा यह मिलती है कि शुद्ध कमाई मे इतनी शक्ति है कि जहा भी वह जाय वहा अपना कल्याणकारी प्रभाव डाले बिना नही रहती। ठीक इसी तरह सदिग्ध कमाई से, जहा भी वह जाय, बुराई की ही प्रेरणा मिलती है।

औरगज़ेब की तरह यह भी टोपी बनाकर बेचते थे और उससे अपनी जीविका और दान-पुण्य का काम चलाते थे। एक टोपी से ज्यादा न बनाते और जब तक वह बिक न जाती तबतक दूसरी टोपी न बनाते। दो दिरम से ज्यादा अपनी बनाई टोपी की कीमत न लेते। उन दो दिरमो मे से एक दिरम उस अधिकारी पुरुष को देते जो सबसे पहले इनके पास आता और दूसरे दिरम से खाने की चीज़ें खरीदकर किसी दरवेश के साथ एकान्त मे बैठकर आनन्द से खाते।

जीवन का यह सिलसिला चल ही रहा था कि इनका एक मुरीद इनके पास आया। वह शिष्य पर्याप्त धनी था और यह पूछने आया था

कि मुस्लिम शरीयत के अनुसार सम्पत्ति की हैसियत के मुताबिक जो दान दिया जाता है और जिसे इस्लामी धर्म के अनुसार ज़कात कहा जाता है, वह किसे देनी चाहिए ? यह बोले—"जिस पर विश्वास हो कि यह अधिकारी है, उसी को दे।"

यह बात सुनकर वह चला गया। राह मे उसे एक अधा फकीर मिला। उसने सोचा, इससे ज्यादा ज़कात का मुस्तहक और कौन होगा ? और उसने उसे एक अशर्फी दे दी। दूसरे दिन उसने देखा कि वह अधा किसी आदमी से कह रहा है कि कल मुझे एक अशर्फी मिली और मैंने अमुक स्त्री के साथ उसकी शराब पी।

उसने तो गुरु की आज्ञा के अनुसार ज़कात दी थी, उसका ऐसा विपरीत और अप्रिय परिणाम देखकर वह सत अबुल अब्बास के पास यह कहने आया। मगर पेश्तर इसके कि वह कुछ कहे, इन्होने टोपी की कीमत मे से एक दिरम देकर कहा कि "जाओ, जो पहला आदमी तुम्हे मिले उसे यह दे देना।"

शिष्य बाहर आया। सबसे पहले उसे एक सैयाद मिला और वह दिरम उसने उसीको दे दिया। दिरम लेकर सैयद जिधर से आ रहा था, उसी ओर वापस चल दिया। शिष्य भी यह देखने के लिए कि यह सैयाद इस दिरम का क्या करता है, उसके पीछे-पीछे हो लिया। सैयाद जगल मे गया और वहा अपने दामन में छिपे मुर्दा तीतर को निकालकर फेंक दिया। शिष्य को यह देखकर आश्चर्य हुआ और उसने सैयाद से पूछा—यह क्या माजरा है ? सैयाद अपनी जान मे दुनिया की नजर से छिपाकर यह काम कर रहा था। दिरम देने वाले शख्स ने जब उसकी कार्रवाई देखकर कारण पूछा तो वह बोला—"आज सात दिन से मेरे बाल-बच्चे भूखे हैं। मुझे किसी से मागने की जिल्लत गवारा नही। इसलिए रोजी की तलाश मे निकला। जंगल मे यह मुर्दा तीतर मिला तो इसीको उठाकर लिये आ रहा था। मैंने सोचा, मागने की ज़िल्लत से तो यही बेहतर है कि मुर्दे तीतर से ही इस वक्त का काम चलाऊ। इतने मे तुम मिले और तुमने बिना मांगे ही एक दिरम पेश किया। तब मैं मुर्दा तीतर को फेंक देने के लिए जगल की ओर वापस लौट पडा

और यहा उसे फेंक दिया।"

इस नई घटना से प्रभावित हुआ वह मुरीद अपने पीर की खिदमत मे हाज़िर हुआ। मगर पेश्तर इसके कि वह अपने दिल की बात कहे, सत अब्बास बोले—"कहने की कोई ज़रूरत नही है। आगाह हो कि हराम कमाई और ज़ुल्म से हासिल किया हुआ माल शराबखाने में सर्फ होता है।" और अपने चकित मुरीद की आत्मा को जाग्रत करते हुए आगे कहा—'और हलाल की कमाई का माल, जैसा कि तूने देखा, एक गैरतदार सैयाद को मुश्किल के वक्त मदद देता है और उसके बाल-बच्चों को मुरदार खाने को अपवित्रता से बचाता है।"

अत्यन्त नाटकीय ढंग पर ये दो घटनाए आज के ससार का ध्यान एक परमावश्यक तथ्य की ओर बडे वेग से आकर्पित करती हैं और इनसे यह स्पष्ट ध्वनि निकलती है कि यदि ससार अपनी अधोगामी वृत्ति को सम्हालना चाहता है तो उसे चाहिए कि शुद्ध कमाई पर ध्यान दे।

इनके जीवन की एक घटना इनकी सौम्य विश्वस्त सहृदयता के कारण परीक्षा लेने के लिए आये हुए एक आतिशपरस्त को द्रवीभूत करके उसे मुसलमान बनाती हुई दीख पडती है। बात यो हुई कि उस आतिशपरस्त ने सत की प्रशसा सुनी तो उसकी इच्छा हुई कि चलकर इनकी परीक्षा करे। उसने मुसलमान सूफियो का-सा लिबास पहना और वही तर्ज़ इख्तियार करके पहले इन्ही के नामराशि शेख अबुल-अब्बास अस्साब की खानकाह की तरफ गया। मगर उन्होने तो दूर से ही डाटकर कहा—"आशनाओ मे वेगानो का क्या काम?" तब वह सत अबु अल अब्बास निहावन्दी के पास आया और कई महीने तक इनकी ख़ानकाह मे ठहरा रहा। दूसरे फकीरो की तरह वह भी वुज़ू करता और झूठ-मूठ खड़ा होकर नमाज़ भी पढता। सब-कुछ जानते हुए भी सत ने उससे कुछ न कहा। अत मे जब उसने घर जाने का इरादा किया तो वह बोले—"यह अमर जवामर्दी के खिलाफ है कि जिस तरह तू बेगाना आया, उसी तू बेगाना चला जाय।" तब सत की सौम्यता से प्रभावित होकर वह मुसलमान हो गया और इनकी खिदमत मे रहकर ऐसा कमाल हासिल किया कि इनके बाद वही इनका जां-नशीन (उत्तराधि-

कारी) हुआ ।

सत अबुल अब्बास निहावन्द के रहनेवाले थे, जहा के इब्राहीम बिन अदहम किसी समय बादशाह थे । यह कहते थे कि बारह साल तक रियाज़त करने के बाद मेरे दिल के एक गोशे को कष्फ (आत्म-शक्ति द्वारा गुप्त बातो का ज्ञान) अता हुआ है ।

इनका कहना है कि "मोमिक को खल्क के साथ कम और खालिक के साथ ज्यादा सोहबत इख्तियार करना और सासारिक वासनाए निकालकर भगवान के भजन मे लीन रहना चाहिए ।"

कहते थे कि "लोग चाहते है कि अल्लाह उनके साथ हो और मैं चाहता हू कि अल्लाह मुझे ऐसी तौफीक दे कि मैं अपने आपको देखू, लेकिन अब तक मेरी यह आरजू पूरी न हुई। अपने मरातिब को जाहिर करना और मुसलमानो की इज्जत करना तसव्वुफ है ।"

यह भी कहते थे—"फुक्र का आखिर तसव्वुफ का अव्वल है ।" अर्थात् साधक जब फुक्र की साधना करते-करते उसकी अन्तिम सीढी पर जा पहुचता है तब वह तसव्वुफ की प्रथम सीढी के नजदीक पहुचता है । किसी ने दुआ मागी तो कहा, "अल्लाह तुझे अच्छी मौत अदा करे ।"

: २४ .

शेख अबु उस्मान सईद

अबु उस्मान बडे साहेब ज़िक्रो-फिक्र थे । रियाज़त (तपस्या) और करामत (चमत्कार) मे इन्हे कमाल हासिल था । बहुत दिनो तक इन्होने हरम में मुजाविरी (सेवा) की और दीर्घ आयु होने के कारण वह बहुत-से सतो और सिद्धो के दर्शन और सत्सग से लाभान्वित हुए । एक सौ तीस वर्ष की अवस्था मे नेशापुर मे इन्होने अन्तिम समाधि ली ।

यह बचपन से ही अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के थे । बडे होने पर इन्होंने तीस वर्ष तक जगल मे एकातवास करके साधना की और ऐसी तन्मयता से

ईश्वर-भजन मे लगे कि इनके जिस्म का मास जलने लगा और आखो मे हलके (कालिमा) पड गये। आकृति इनकी एकदम भयानक-सी हो उठी। तब इनके मन मे अन्तर्वाणी हुई कि एकान्त छोडकर दुनिया मे जाओ। और ये उस ईश्वरीय आदेश को मानकर मक्का आये, जहां के प्रसिद्ध शेखो ने इनका प्रेमपूर्वक स्वागत किया और इनके शरीर की दशा देखकर कहा – "तुमने इतने साल तक इस तरह ज़िन्दगी बसर की कि आजतक किसी ने ऐसा नही किया। तुम सबसे बाजी ले गये। बताओ, तुमने क्या देखा और क्या पाया ?"

इतनी गहरी और लम्बी तपस्या के बाद भी अबु उस्मान सईद अपनी अभीष्ट उपलब्धि तक सन्तोषजनक रूप मे न पहुच सके थे और कुछ निराश होकर ही लौटे थे। बोले "मैं शुक्र के लिए गया था। शुक्र की आफत को देखा और नाउम्मीदी नज़र आई। आजिज़ होकर वापस आया। मैं असल हासिल करने गया था, मगर हासिल न कर सका।'

उस्मान ने कहा—"मैंने एक गैबी आवाज सुनी कि कोई कह रहा था, 'ऐ उस्मान ! सुख-चैन से मस्त रह। असल हासिल करना सरल काम नही, असल हकीकी हमारे हाथ मे है।' मैं निराश होकर वापस आ गया।" शेखो ने कहा—"जो हक था वह तुमने अदा किया। असल हासिल करने की इच्छा थी, उसके लिए तपस्या की और तपस्या के फलस्वरूप यह ज्ञान मिला कि वह अप्राप्य है।"

इस कहानी का सार यही है कि जो असल है वह अपने पूर्णरूप मे अप्राप्य है। वह चेष्टा करने से भी प्राप्त नही किया जा सकता। उसका प्राप्त होना न होना किसी और के हाथ मे नहीं, उसीके हाथ मे है। यो कोई ऐसा नही जिसे वह प्राप्त न हो। वह अपनी इच्छानुसार अपने स्वरूप को, जिसको जितना और जैसा चाहता है, दिखाता है। वह होशियार है। अपनी गठरी किसी और को देने वाला नही।

तव क्या इतनी साधना व्यर्थ ही गई ? नही, अच्छा किया हुआ कार्य कभी व्यर्थ नही जाता। खुद अबु उस्मान कहते है कि तपस्या के प्रारम्भ मे मेरा यह हाल था कि अगर मुझे आसमान से गिरा देते तो मैं इससे ज़्यादा खुश होता कि खाना खाऊ या नमाज़ के लिए वुज़ू करू, क्योकि

इन हालातो मे मुझसे ज़िक्र की लज्जत गायब होती थी। और ज़िक्र की लज्ज़त गायब होने से ज्यादा और कोई बात मेरे लिए दुश्वार न थी, क्योकि ज़िक्र (मन-ही-मन ईश्वर-स्मरण) में मुझे बडा आनन्द आता था, और उस हालत मे मुझपर ऐसी चीज़े ज़ाहिर होती थी कि अगर दूसरे पर ज़ाहिर होती तो वह उन्हें करामात समझता, लेकिन मैं होशियार रहा और उनको अपने दिल पर काबू नही होने दिया।

निश्चय ही चमत्कार ऊची उडान भरनेवाली आत्मा के लिए नीचे की ओर खीचने का, गिराने का काम देते हैं। इसीलिए उस्मान कहते हैं कि मैं उन्हे गुनाहे-कबीर (महापाप) से भी बढकर समझता था, ताकि दिल उनकी चमक मे फसकर कही गुमराह न हो जाय। चमत्कार के प्रभाव से बचने का सचमुच उस्मान ने ठीक रास्ता निकाला था।

अपनी साधना की स्थिति का वर्णन करते हुए कहते है—"मैं कभी नही सोता था और नीद के ज़ोर से बचने के यह लिए तरकीब करता कि ऐसे छोटे पत्थरो पर बैठता जिसके नीचे गहरा पानी होता कि अगर ज़रा ऊघू तो नीचे गहरे पानी मे गिर पडू।" फिर कहते कि अगर मुझे उस पत्थर पर नीद आ जाती तो जब जागता, देखता कि मैं ऐसे पत्थर पर बैठा हू जो हवा मे मुअल्लक (अधर मे लटका) है।"

यह अपने को हवा मे लटके हुए पत्थर पर बैठा पाते, इस अनुभव मे एक गहरी मिठास है। जिसके लिए तपस्या करके अपनी जान जोखिम मे डाल रहे थे, आखिर उसे भी तो कुछ खयाल था। यह जब अपना काम इतनी तनदेही और बेदर्दी से करते तो वह अपना काम करने से क्यो चूके? भक्त और भगवान की यह होड बडी मीठी है और कभी ही कही देखने को मिलती है।

ऐसी मधुर-ललित घटनाए होती भी ऐसे ही भक्तो के साथ हैं जो सब ओर से विरक्त होकर एकदम उन्ही के हो रहते हैं। इनकी इस स्थिति का दिग्दर्शन करानेवाली एक घटना यह है कि कोई आदमी इनके पास आया और दिल मे खयाल किया कि अगर यह कोई इच्छा प्रकट करें तो मैं उसे पूरी करू। यह बोले—"सिवा अल्लाह के मैं किसी से कुछ कहना नही चाहता, न किसी और से मदद चाहता हू।"

एक बार का जिक्र है। ईद की रात थी। सत अबु उल फोरस साथ मे थे। वह जब सो गये तो इन्हे खयाल आया, अगर इस वक्त घी होता तो मैं दोस्तो को कोई पकवान बनाकर खिलाता। ठीक उसी वक्त सोयी हुई हालत मे ही सत अबु उल फोरस बोल उठे—'इस घी को जल्द फेक दे ! फेंक दे ! फेंक दे !" इस तरह नीद की हालत मे तीन बार उन्होने घी फेकने को कहा। जब वह जागे तो इन्होने सारा हाल बयान करके कैफियत पूछी। वह बोले—"मैंने ख्वाब देखा कि हम लोग एक बुलन्द महल मे है और वहा से दीदारे-इलाही की तमन्ना कर रहे हैं। तुम भी वहा मौजूद थे, लेकिन तुम्हारे हाथ मे घी था, इसीलिए मैंने कहा कि इस घी को जल्द फेक दो।" अनिच्छैव परम् पदम् मे सत्कर्म भी बाधक है।

स्वप्नादेश के द्वारा एक और अच्छी शिक्षा इनकी जीवनी मे देखने को मिलती है। अबु उस्मान जजैजी का कहना है कि मैं बहुत दिनो तक इनकी सेवा मे इस तरह रहा कि दमभर भी जुदा न हुआ। एक दिन मैंने और दूसरे मुरीदो ने ख्वाब देखा कि कोई कह रहा है—'तुम कबतक अबु उस्मान मे मशगूल रहकर हमारी दरगाह से दूर रहोगे ?' जागे तो सबने चाहा कि इनसे कहे। इतने मे क्या देखते हैं कि नगे पाव घर से बाहर आये और हमसे कहा—"तुम लोग खुद सुन चुके हो। जाओ और मुझे अल्लाह की याद मे रहने दो और तुम सब भी अल्लाह के हो रहो।" यह एक अच्छी शिक्षाप्रद कहानी है जिससे आजकल के गुरु-शिष्य दोनो को सबक लेना चाहिए। गुरु का सत्सग इतना ही ठीक कि वह परम गुरु की राह दिखा दे।

इस्लाम मे निराकार की ही धारा प्रबल है, फिर भी बहिश्त मे अल्लाह का सुन्दर और सूक्ष्म साकार रूप मे दर्शन होना तो सर्वमान्य सिद्धान्त है ही। कुछ इससे आगे की झलक इन्हे बगदाद मे मिली, जिसका उल्लेख इन्होने अबु बकर फोरक से किया था। अबु बकर कहते हैं कि सत उस्मान ने मुझसे अपने ईश्वर-सम्बन्धी विश्वास की बात यो कही थी—'मेरा विश्वास था कि अल्लाह ताला जात है कि जहत मे है। जब मैं बगदाद मे आया तो मेरा यकीदा दुरुस्त हुआ, यानी अल्लाह ताला

शिश जहत से परे है। मैंने मक्का के शेखों को खत मे लिखा कि मैं बग-दाद मे आकर अजसरे-नो (नये सिरे से) मुसलमान हुआ।' फिर से मुसल-मान होने का मुहावरा अच्छा मालूम देता है और कई बार इस ग्रन्थ मे आया है।

इन्होंने अपने एक शिष्य से पूछा, "यदि कोई व्यक्ति तुझसे यह सवाल करे कि तेरा माबूद (ईश्वर) किस हालत में है? तो तू क्या जवाब देगा?" शिष्य बोला—"मैं जवाब दूगा कि जिस हालत मे अजल मे था, अब भी उसीमे है।" बोले—"अगर कोई यह सवाल करे कि अजल मे किस हालत मे था?" शिष्य बोला—"तब कहूगा, जिस हालत मे अब है वैसे ही अजल मे भी था।" बोले—"सच कहता है।"

अपने अतरग को वहिरग मे प्रतिबिबित देखने की अवस्था का वर्णन इनकी जीवनी मे आया है। सत अब्बुल रहमान कहते है कि एक बार मैं इनकी खिदमत मे था। पास के कुए से कोई शख्स पानी भर रहा था और चर्ख की आवाज़ आ रही थी। बोले—'क्या तू जानता है कि यह क्या कह रहा है?' मैंने कहा—'नही।' बोले—'यह अल्लाह-अल्लाह कह रहा है।' इनकी इसी तन्मय मानसिक स्थिति का दिग्दर्शन इस कौल से होता है—'जिसको परिन्दो की आवाज़, दरख्तो का हिलना और हवा का चलना सुनाई न दे, वह श्रवणशक्ति के दावे मे झूठा है। सगीत केवल मनुष्यो के पास ही नही है, प्रकृति के प्रत्येक क्रियाकलाप मे प्रतिबुद्ध मानस के लिए ईश्वरभक्ति की मनोहर तान-सी छिडी हुई है।'

इसी तरह यह कहते हैं—"ज़ाकिरे-हकीकत को अल्लाह एक नूर अता करता है जिससे वह तमाम हस्ती के ज़र्रे-ज़र्रे का निरीक्षण करता है और उसके ज़िक्र से, जप और सुमिरन से, ऐसी लज्ज़त हासिल होती है कि वह नेस्त हो जाना चाहता है, क्योंकि उसके माधुर्य की लज्ज़त को वह बर्दाश्त नही कर सकता।' मतलब यह कि मुसीबत ही मुसीबत नही, माधुर्य की लज्ज़त भी मुसीबत है।

लिखा है कि जब यह इस आनन्द के वेग को सहन न कर सके तो एकान्त छोडकर बाहर आ गये और हर तरफ दौडने लगे। कहते थे कि ज़िक्र करनेवाले को चाहिए कि 'ला इल इलिललिलाह' को अपने इल्म के

साथ शामिल करे और इस कल्मे की कुव्वत से तमाम नेकोबद को अपने दिल से दूर करे और इस गैरत की तेज़ तलवार से नेकी और बदी का सिर काटे, इसलिए कि अल्लाह उससे जुदा है।

यह कहते थे कि ज़ाकिर और आरिफ का मरतबा मौत से ज़्यादा होता है और मौत उनको ज़िक्र और मारफत से जुदा नही कर सकते। अल्लाह तक पहुचने के दो रास्ते हैं. एक नबी होना और दूसरे नबी के हुक्म की पैरवी करना। नबी होने का रास्ता तो बन्द है, क्योकि मोहम्मद खातुम-उल-अम्बिया कहलाते है। हा, नबी के अनुकरण का रास्ता खुला हुआ है। इसलिए तालिबे हक को नबी के दिखाये मार्ग पर चलना अपना शेवा बना लेना चाहिए।

इससे भी अच्छी इनकी सूक्ति यह है कि "जो शख्स एकान्त मे रहना चाहता है वह तमाम चीज़ो की याद अपने दिल से निकाल दे और सिर्फ अल्लाह की याद बाकी रखे और उसकी रज़ा का तालिब हो, नफ्स की ख्वाहिश एकदम तर्क कर दे।"

इनका यह कहना यथार्थ है कि जिसमे उपर्युक्त बातें न हो उसके लिए खिलवत बला है, क्योकि उसका ध्यान ईश्वर की ओर न जाकर जो-जो वासनाए उसके मन मे छिपी हैं, उनकी ओर चला जायगा, और वे उसे आक्रात कर डालेगी। एकान्त का लाभ तो यह है कि जो चीज़ तुम्हारे दिल मे है उसके साथ बिना बाहरी हस्तक्षेप के मज़े से खेल सकते हो।

इसीलिए यह कहते थे कि जब तक नफ्स और दुनिया की मुहब्बत तालिबे हक के दिल मे ज़रा सी भी बाकी रहती है, उसे ईश्वर के विशिष्ट प्रेमियो का दर्जा नही मिल सकता। दावा करने वाले से पापी बेहतर है, इसलिए कि पापी अपने गुनाह पर इकरारी है और उससे मुक्ति चाहता है, मगर दावेदार दावे मे मदहोश है।

ज़रा तेज़ी से यह कहते हैं कि जो लोग फकीरो की सगत छोडकर अमीरो की सोहबत इख्तियार करते हैं अल्लाह उनको अधा कर देता है और जो लोभ या मोह के वश होकर अमीरो के खाने पर हाथ मारते है उनको हर्गिज़ मुक्ति नही मिलती और न ऐसे आदमी का कोई उज्र कबूल

होता है। हा, उसका उज्र कबूल होता है जो मजबूरी से ऐसा करता है।

इनकी सूक्ति है—"खल्क के हाल मे मशगूल होनेवाला अपने हाल को ज़ाया करता है, क्योकि अपने हाले-दिल की बेहतरी तो इसमे है कि दिल तमाम ख्वाहिशो से मुक्त होकर बिल्कुल खिलवत मे, सच्ची खिलवत मे, जहा उसके और अल्लाह के बीच मे बाधा डालनेवाला कोई न हो, अपने महबूब से बात करे, उसके रग मे अपने को रँगे।"

मार्के की एक सूक्ति है—"बडा सफर यह है कि मुरीद शहबत (काम-वेग) और हवा (लोभ-लिप्सा) से सफर करे।" लोग हज और तीर्थ-यात्रा के लिए बडे ज़ौक-शौक से निकलते है, मगर अक्सर वे अपनी सासारिक चिन्ताए साथ ही लेते जाते हैं। सच्ची तीर्थयात्रा तो यही है कि काम और लोभ-आदि वासनाओ को पीछे छोडकर उनसे आगे निकल जाय कि वे उसे छू न सके।

कहते "ख़ालिक और मकलूक की असलियत से खबरदार होने को मारफत कहते हैं। मारफत यानी ब्रह्मज्ञान का एक अग यह भी है कि मखलूक, जिसे खालिक ने बनाया, उसकी हकीकत से वाकिफ हो कि खुद कुछ भी करने मे लाचार है। उसे बनानेवाला, उसे चलानेवाला खालिक ही है, इसलिए दिल उसी से लगाये।"

यह भी कहते—"सबसे अच्छी खसलत यह है कि जो चीज तू अपने लिए पसन्द करे उसे अपने भाई मुसलमान के लिए भी पसन्द कर और जो चीज़ तेरे पास हो वह उसे दे और जो उसके पास है उसे खुद तलब न कर। उसकी जफा (अत्याचार) पर सब्र कर और खुद जफा से दूर रह। उसको इन्साफ दे और ख़ुद उससे इन्साफ का तालिब न हो। खुद उसकी खिदमत कर, उससे अपनी खिदमत न ले।"

इनके अनुसार सबसे अच्छा वह अमल है जो इल्म के मुआफिक हो। इनकी सूक्ति है—'विधि-निषेध का ध्यान रखने से बडा ऐतफाक है—निश्चित होकर भगवान के भजन के लिए मदिर के प्रागण मे समासीन होना। बुरे काम से बचना और अच्छे काम करते रहना मदिर मे बैठकर पूजा करने के समान है।"

कहते—"कोई शख्स किसी चीज़ को नही जानता जब तक कि उसकी ज़िद को, उसके विरोधी पक्ष को, न पहचाने। इसलिए जबतक मुख़लिस मक्कारी की बुराई से आगाह नही होता, इख़लास की अच्छाई नही जान सकता।" कहते—"सिर्फ ख़ौफ इख्तियार करनेवाला नाउम्मीद और सिर्फ आशा पर आधार रखनेवाला काहिल हो जाता है।"

इसलिए, "मर्द वह है जो अहले खौफ मे खायफ और अहले-रज़ा में रज़ा इख्तियार करता है।" उनका अभिप्राय यह है कि न केवल ख़ौफ और न केवल रज़ा (आशा) से ठीक-ठीक काम चलेगा। अत्यधिक भय की भावना निराश बना देती है और आशा पर आधार किये बैठे रहने वाला काहिल होता है। ख़ौफ की जगह ख़ौफ और रज़ा की जगह रज़ा हो।

इनकी सूक्ति है—"राहत मे मौत को अज़ीज रखना शौक की अलामत है। इसान जब मुसीबत मे होता है तो उससे बचने के लिए अक्सर मौत को याद करता है, पर ऐश की हालत मे मौत की याद उसे मज़ा किरकिरा-सा कर देनेवाली मालूम देती है। ऐश के वक्त मौत को प्रिय मानना विरक्ति और भगवत् प्रेम का द्योतक है।

वह कहते—"आरिफ को गौर और इल्मे-मारफत अता होता है और वह उससे अजायबात-कुदरत देखता है।" और—"मरदे-रब्बानी चालीस दिन मे एक बार कुछ खाता है—और मरदे समादानी ८० दिन मे एक बार कुछ खाता है।" मानना होगा, यह बुभुक्षा-तपस्या के दो दर्जे है। सूफी कई-कई साल तक भूखे रहने की बात कहते हैं।

कहते—"जो औलिया को मानता है, अल्लाह उसको औलिया मे शामिल करता है।" पर इनका कहना है, औलिया मशहूर होते हैं, मफ्तून नही होते। और यह ठीक भी है। औलिया तो अल्लाह के वली बनकर आते हैं। उन्हे लोगो से खुदा के अहकाम की पाबन्दी करानी होती है। इसलिए उन्हे अपने-आपको दूसरो पर ज़ाहिर करना लाज़मी है।

पर मफ्तून तो प्रेमी होते हैं, अपने प्रेम मे मदहोश। उनका तो हाल यह है—लबो पर मुहर-ख़ामोशी दिलो मे याद करते है। जो ज़ुबान

से कुछ कहता ही नहीं, उसे लोग क्या जाने ? वह शोहरत से बचता है, जैसे धनवान डाकू को दूर रखता है। उसे दुनिया से लेना क्या है ? वह अपने मन की मिठास मे इतना लीन है कि दुनिया उसके लिए रह ही नही जाती।

जब यह बीमार हुए तो लोग हकीमो को बुलाकर लाये, मगर इन्होने कहा—हकीम तो मेरे लिए ऐसे ही हैं जैसे कि हजरत यूसुफ के लिए उनके भाई थे। भाइयो ने यूसुफ को जिस तरह परेशान किया वैसे ही ये मुझे परेशान ही करेंगे। इनसे मुझे कोई फायदा न होगा। फिर इन्होने सगीत सुनाने के लिए कहा और सगीत सुनते-सुनते इन्होने देह त्याग दिया।

२५

अबु इसहाक़ इब्राहीम

सत अबु इसहाक इब्राहीम बिन अहमद खवास अच्छे सत थे और इन्हे तवक्कुल की वजह से लोग रईस-उल-मुतवक्कलीन कहा करते थे। मगर आरफि के लिए तवक्कुल भी एक कैद है, जिससे छूटना उसके लिए लाजिम है और यही सकेत मुतवक्किलो के इस बादशाह के जीवन के अन्तिम दृश्य से मिलता है।

यह कहानी यो है : इनकी नमाजे जनाजा के लिए कही से एक बुजुर्ग आये और उन्होने इनके तकिये को उठाकर देखा तो एक रोटी का टुकडा रखा मिला। आमतौर पर तो यह बडी ही नामोशी की बात समझी जाती, जैसे कि नई दुल्हन अपने पति के घर आबखोरे पर रोटी का टुकडा देखकर अपने मायके जाने लगी थी। मगर वह ऊचे मरतबे के सत अपनी जिन्दगी के आखिरी दौर मे थे। इसलिए तकिये के नीचे रोटी के टुकडे को देखकर वह सत खुश हुए और सन्तुष्ट स्वर मे कहा—'अगर इनके सिरहाने यह रोटी का टुकडा न होता तो हर्गिज मैं

शेर का एक और किस्सा इनकी जीवनी मे आता है। एक मुरीद के साथ यह किसी जगल मे थे। अचानक शेर के गुर्राने की आवाज आई। मुरीद शेर के दहाडने से भयभीत होकर एक दरख्त पर चढ गया और इन्होने मुसल्ला बिछाकर नमाज की ठानी। शेर आया, इन्हे देखा, इनके गिर्द घूमा और चला गया।

जब शेर चला गया तो मुरीद नीचे उतरा और ये आगे रवाना हुए। इतने मे जगली मच्छर ने सत को काटा और यह उसके काटते ही कुछ बेकरार-से हो गये। मुरीद बोला—शेर से आपको ज़रा भी खौफ न हुआ और मच्छर के काटने से इतने बेकल! बोले—"इस वक्त मैं अपने आपे मे हू, उस वक्त अल्लाह ने आपे से बाहर कर दिया था।"

शेरो की तरह सांपो से भी इन्हे वास्ता पडा। सफर मे एक रात इनका ऐसी जगह ठहरना हुआ जहा साप बहुत थे। यह तो पहाड की खोह मे इबादत के लिए चले गये। साथ मे मुरीद भी था। मुरीद ने देखा कि बिलो मे से निकल-निकलकर साप चारो ओर घूम रहे हैं। डर कर उसने इन्हें पुकारा।

इन्होने कहा—अल्लाह को याद कर। मुरीद भी सापो को भुलाकर अल्लाह की याद मे मशगूल हो गया। साप घूम-घामकर बिलो मे चले गये। मगर सुबह हुई तो मुरीद ने देखा कि एक बहुत बडा साप कुडली मारे इनके पास बैठा है। मुरीद ने पुकार कर कहा—यह मूजी आपके पास बैठा है, आपको खबर न हुई ?

प्रसन्न-सन्तुष्ट स्वर मे सत बोले—"इस रात से ज्यादा कोई रात मेरे लिए अच्छी नही है। तुफ है ऐसे शख्स पर जो अच्छी रात मे सिवा अल्लाह के किसीसे खबरदार हो।" बच्चा जैसे डरकर मा की गोद मे टिक जाता है ठीक वैसे ही, मालूम होता है, भयभीत होकर भक्त भगवान के और भी निकट आ पहुचता है।

शेरो और सापो की तरह एक बिच्छू का भी उल्लेख इनकी जीवनी मे आता है। वह बिच्छू इनके दामन पर घूम रहा था। एक शख्स ने देखकर उसे मारना चाहा, मगर इन्होने उसे मना कर दिया। बोले—"यह अपनी इच्छा से आया है। मुझे अल्लाह का शुक्र करना चाहिए कि औरो

है ! यह बात दरअसल बहुत मुश्किल है।"

जवान ने जलाली तेवर के साथ कहा—"ए इब्राहीम, दीवानो की-सी बातें न करो। अल्लाह ताला अपने बन्दो का इम्तिहान लेता है और उसको हर तरह अपने बन्दो को रोज़ी देने की कुदरत हासिल है। तुम्हारे कहने से मालूम होता है कि हरगिज़ तुमने अल्लाह पर तवक्कुल नही किया, क्योंकि तवक्कुल का अपना दर्जा यह है कि सख्ती और फाकाकशी की हालत मे भी हिले नही, सब्र करे।'

बडी करारी बात कही उस जवान ने। निश्चय ही यह ईश्वर-विश्वास की पराकाष्ठा है। जीवन मे जो कुछ भी है उसका मोह छोडकर ही यह तवक्कुल सध सकता है।

बिना अन्न के जीवित रहने के अलावा खाना सीधा गैब से आये, इसका उदाहरण भी इनकी जीवनी मे आया है। एक आतिशपरस्त हठपूर्वक इनके साथ हो लिया। आठ दिन भूखे रहने के बाद वह बोला—"ए ज़ाहिद ! हकीकी जुरत कर और अपने अल्लाह से कुछ मांग, क्योंकि भूख की शिद्दत से मैं बेताब हू।"

भूख के अलावा आतिशपरस्त की चुनौती भी थी। इन्होंने दुआ की—"ए अल्लाह ! तुझको वास्ता अपने हबीब का ! मुझको इस आतिश-परस्त के सामने शर्मिन्दा न करना।" लिखा है, फौरन एक ख्वान ताज़ा खाने, ताज़ा खुरमो और ठण्डे पानी के साथ सामने आया और दोनो ने खूब तृप्त होकर खाना खाया।

इसके बाद फिर सात दिन तक फाकाकशी मे सफर किया। आठवे दिन इन्होंने जवान से कहा, "अब तू अपना कमाल दिखा।" इनकी बात सुनकर उस जवान ने अपना असा टेका और मन-ही-मन कुछ कहा। आश्चर्य कि ठीक पहले की ही तरह ठण्डे पानी के साथ ताज़ा खाना और खुरमो से भरा ख्वान उसके सामने नमूदार हुआ और वह बोला—"आइये, हम-आप मिलकर खाये !"

इन्हें इस घटना के देखने से बडी लज्जा हुई और जब उसने साथ खाने को कहा तो और भी शर्मिन्दगी हुई। कह दिया कि तुम खाओ, मैं इस वक्त न खाऊ गा।

उस जवान ने कहा—"आप तशवीश न कीजिये। आप खाना खाइये। इसके बाद मैं आपको दो खुशखबरी दूगा। पहली तो यही कि मुझे कलमए-शहादत पढाइये।" यह कहकर उसने जन्नार तोड डाला और सच्चे जी से कलमा पढकर मुसलमान हो गया। दूसरी बात उसने यह कही कि जिस वक्त आपने मुझे कमाल दिखाने का हुक्म दिया, मैंने अल्लाह की दरगाह मे दुआ की—"ए अल्लाह, इस पीर की आबरू के सिदके मुझे शर्मिन्दा न करना।" इस वक्त जो कुछ ज़ाहिर हुआ वह मेरा कमाल नही बल्कि आपकी ज़ात का फैज़ था।

यह बात सुनकर अबु इसहाक इब्राहीम के दिल को तसल्ली हुई। दोनो ने मिलकर खाना खाया और फिर मक्का सफर शुरू किया। मक्का पहुचकर उस नौमुस्लिम आतिशपरस्त जवान ने मक्का की मुजावरी इख्तियार की और वही वह रहने लगा।

वैज्ञानिक युग मे हँसने के बजाय इस तथ्य के अनुसंधान की आवश्यकता है।

आध्यात्मिकता का निश्चय ही अपना एक पृथक् विज्ञान है जिसमें भौतिक उपकरणो की आवश्यकता नही होती, प्रत्युत मन को भी सभी प्रकार की भौतिकता से खाली करके परम शुद्ध और निर्मल भाव से अन्तर की ओर जाना होता है। चमत्कार चमत्कृत अवश्य करते हैं, किन्तु भौतिकता से सलग्न होने से है निषिद्ध।

इन सत की जीवनी मे कौतुकपूर्ण घटनाओ का बाहुल्य है। वह कहते हैं कि एक बार मैं जगल मे था। राह भूल गया। एक शख्स मुझे मिला सलाम किया और कहा, मेरे साथ आ, तुझे रास्ता मिल जायगा। मैं कुछ दूर तक उसके साथ चला। एकाएक वह गायब हो गया। मैंने देखा, रास्ता सामने था। फिर न रास्ता भूला और न प्यास लगी।

एक बार का वर्णन करते हुए यह कहते है. जगल मे मैंने एक बद-सूरत शख्स को देखकर कहा—तू कौन है? वह बोला—अल्लाह का बन्दा ज़ईफ (वृद्ध) परेशान-हाल हू और मक्का जा रहा हूं। मैंने कहा—तूने बेसबरी और बिना सामान के इतने बड़े सफर का इरादा क्यो किया? वह बोला—हमारी जमात के सब लोग इसी तरह बिना सामान और

बेसवारी सफर करते है। मैंने उससे पूछा—तवक्कुल किम चीज़ का नाम है ? तो उसने जवाब दिया—अल्लाह से लेने को तवक्कुल कहते हैं।

तवक्कुल का एक नया सबक एक बद्दू ने इन्हे बताया। यह कहते हैं कि एक बार मैं जगल मे था और भूखा था। मुझपर ग़लबा हुआ। एक बदुई आया और उसने मुझसे कहा—'ओ बडपेट्ट, भूख का गालिब होना तवक्कुल नही है।' तवक्कुल की यह झाकी नि सन्देह नई और अच्छी है। खाना अनायास ही मिल गया तो खा लिया, वरना भूख-प्यास जैसी कोई चीज़ ही नही।

यह सत इस सबब मे निश्चय ही बडे सौभाग्यशाली थे कि तवक्कुल के कई रूप इन्हे कई लोगों ने प्रभावशाली व्यावहारिक ढग से बताये। नाटकीयता की दृष्टि से आगे की घटना अपने अमिट प्रभाव के कारण अविस्मरणीय है। कहानी इन्हीकी जुबानी मगर कुछ सक्षेप से यो है एक बार मैं मुल्क शाम मे ऐसी जगह घूम रहा था जहा अनार के बहुत-से पेड थे। अनार खाने को मेरा जी तो बहुत चाहा, मगर अनार खट्टे होने की वजह से मैंने एक दाना भी अनार का न चखा। वहा से आगे बढा तो एक शख्स अजीब हालत मे मुझे मिला। वह लुजा था। उसका जिस्म एक दम खराब हालत मे था। मक्खिया भिन-भिना रही थी और बर्रें डक मार रही थी। मुझे तरस आया। मैंने कहा—मैं तेरी सेहत के लिए दुआ करू ? वह बोला—नही। मैंने कहा—क्यो ? तुझे तकलीफ तो बहुत है। वह बोला—मुझे आफियत पसन्द भले ही हो, पर अल्लाह को बला पसन्द है। इसलिए मैंने उसकी पसन्द को अपनी पसन्द पर पसन्द किया है। मैं बोला—अगर तुम कहो तो मैं इन बर्रों को तुम्हारे पास से हटा दू। वह तडाक से बोला—ए खवास पहले मीठे अनार की ख्वाहिश अपने दिल से दूर कर दे, फिर मेरी भलाई चाहना।

मैंने आश्चर्य से पूछा—"तुम्हे मेरा नाम क्योकर मालूम हुआ और किस तरह तुम वाकिफ हुए कि मुझे मीठे अनार की ख्वाइश है ?" वह बोला—"जो बन्दा अल्लाह को पहचानता है अल्लाह उससे किसी चीज़ को पोशीदा नही रखता।" मैंने पूछा—"इन बर्रों के काटने से तुमको कष्ट नही होता ?" उसने जवाब दिया—"नही। इसलिए कि बर्रें अल्लाह के

मेरे डक मारती है, कीडे अल्लाह के हुक्म से मेरा गोश्त खाते हैं और अल्लाह के हुक्म से मुझको पीडा नही होती।"

यह कहानी एक अत्यन्त प्रभावशाली पदार्थ-पाठ के रूप मे ससार के लोगो की दृष्टि के समक्ष प्रस्तुत हुई है, जिससे शारीरिकता से ऊपर उठने की प्रेरणा मिलती है।

माता की सेवा करनेवाला एक चमत्कारी पुरुष भी इन्हे मिला। जगल मे उसे देखकर इन्होने पूछा—कहा से आते हो? बोला—सागोन से। पूछा—कहा जाते हो? बोला—मक्का जाता हू। पूछा—किसलिए जाते हो? बोला—आबे-जमजम मे हाथ धोने जाता हू, मैंने अपनी मा को निवाले बनाकर खिलाये थे। सागोन मे मा को प्रेम से अपने हाथो खाना खिलाया और सने हाथो को धोने को मक्का जा रहा है। मुस्लिम भावना की दृष्टि से जमजम के पवित्रतम जल मे। इसलिए स्वभावत. ही यह प्रश्न उठा—लौटोगे कब? बोला—शाम तक घर लौट आऊगा, क्योकि मुझे मा का बिछौना बिछाना है और यह कहकर वह गायब हो गया।

गैरमुस्लिम ऊचे दर्जे के लोग भी अक्सर किसी-न-किसी बात से मुसलमान होते देखे जाते हैं इस ग्रथ मे। पर एक बूढ़ा राहिब शानदार अपवाद के रूप मे सामने आ खडा होता है। इन्होने सुना कि मुल्क रूम मे एक राहिब ७० साल से एक बुतखाने मे ग़ोशानशीन है तो यह उससे मिलने गये।

यह कहते है—जब मैं उस बुतखाने के करीब पहुचा तो उस राहिब ने खिडकी से सिर बाहर निकालकर कहा—इब्राहीम, तुम मेरे पास क्यो आये हो? मैं राहिब नही बल्कि कुत्ते का रखवाला हू। मेरा नफ्स कुत्ता है। मैं हमेशा उसकी निगहबानी किया करता हू और उसको खलकत के शोर से बचाने की कोशिश करता हू।

अब इतने बूढे और ऊचे राहब को मुशर्रिफ-ब-इस्लाम न किया तो इतने दूर आये ही क्यो? सत कहते है, मैंने दुआ की—ए अल्लाह, इस राहिब को इसी हालत मे हिदायत कर। फिर उस राहिब ने कहा—ए इब्राहीम, तुम कबतक मुर्दो की तलाश करते फिरोगे? जाओ और अपनी तलाश करो और जब अपने को पा जाओ तो नफ्स की निगहबानी करो,

क्योंकि वह हजार बानक बनाकर परेशान करता है।

हाकिम और महकूम बनने की इनकी कहानी मजेदार है। एक दरवेश ने इनके साथ हज मे जाना चाहा। वह बोले—"एक बात मानो। हममे से एक हाकिम बने और एक महकूम, ताकि काम ठीक से चले।" वह हँसकर बोला—"अच्छा आप हाकिम बनिये, मैं महकूम।" शाम को जब पडाव पर पहुचे तो हाकिम साहब उठे पानी भर लाये, आग जलाई और दूसरी खिदमतें अजाम दी। दरवेश बेचारा परेशान, वह कुछ कहे तो यह कह दें—"मैं हाकिम हू, हाकिम की मुखालिफत मुनासिब नही।" एक रोज़ जब वर्षा हुई तो यह सारी रात उसके ऊपर चादर ताने खडे रहे। आखिर थककर उसने कहा—'अब मैं हाकिम बनता हू, आप महकूम बनिए।" यह तुरन्त ही राज़ी हो गये, मगर खिदमत के सारे काम इन्होने खुद ही किए। जब उसने अपने हाकिम होने की बात कहकर अपना हुक्म चलाना चाहा, यानी खिदमत खुद करनी चाही, तो यह बोले—"मैं हाकिम की मुखालिफत नही कर रहा हू। जो महकूम का काम है वही अजाम दे रहा हू।" मक्का पहुचकर वह दरवेश मारे शर्म के भाग गया। एक बार कही मिला तो यह बोले—"जो सलूक मैंने किया वही तुम मुसलमानो के साथ करना।"

अब इनकी कुछ सूक्तिया नीचे दी जाती हैं—

"मैं अल्लाह ताला से दुआ मागता हू कि मुझे दुनिया मे हयाते-दायमी अता करे, ताकि मै हमेशा उसकी इबादत मे मशगूल रहू और जब लोग ज़िन्नत मे जाकर ज़िन्नत की नियामतो मे मशगूल हो, उस वक्त भी मैं आदावे-शरियत के साथ महल उबूदिया मे कयाम करके उसकी खूबियत को याद करता रहू।"

"हाथ साकिन (स्थिर) और दिल फारिग (निश्चिन्त) तलब करो और जहा दिल चाहे वहा जाओ। जो शख्स अल्लाह को उसकी मारफत के मुताबिक पहचान लेता है वह वफा का अहद अपने ऊपर लाजिम करता है और अल्लाह पर दिल से भरोसा करता है और उसके साथ उसको आराम और राहत होती है। जिस शख्स पर लोग दुनिया मे रोते है वह कयामत मे हँसेगा।

ज्यादा इल्म से इंसान आलिम नही होता, बल्कि आलिम वह है जो हासिल किये ज्ञान के अनुसार अपना आचरण बनाये। तमाम इल्म इन दो बातो मे है—एक तो यह कि जिस चीज़ की अल्लाह ने तुझे तकलीफ नही दी तू उसमे तकलीफ मत कर, यानी जिसमे खुदा की मर्जी नही वह काम मत कर, दूसरे, जो तेरा फर्ज़ है उसे अदा कर।

जो शख्स मारफते इलाही का दावा करता है और अल्लाह के सिवा उसे और किसी चीज़ मे आराम मिलता है, अल्लाह उसको सख्त बला मे मुब्तिला करता है। जो यह कहता है कि मैंने सब वासनाए और कामनाए छोड दी हैं, वह झूठा और पाखण्डी है।

जो शख्स मारफत का दावा करके खल्क से मिलना-जुलना बद नही करता, अल्लाह उसे अपनी रहमत से दूर कर देता है और लालची बना देता है। उसकी यह हालत हो जाती है कि खल्क भी उसको बुरा समझती है और निकृष्ट मानती है। उसको न दुनिया मिलती है, न आखिरत। उसे लज्जा और पश्चात्ताप के अतिरिक्त और कुछ नसीब नही होता।

असल मे मुतवक्किल वह है जिसके तवक्कुल का असर दूसरे लोगो पर पडे और उसके पास बैठनेवाला भी मुतवक्किल हो जाय। अल्लाह पर साबित-कदम रहनेवाला मुतवक्किल है।

किसी ने पूछा—मुतवक्किल को तमा होती है या नही ? बोले—तमा नफ्स की सिफ्त है। वह होता तो है, मगर उसके अधीन रहती है, हानि नही पहुचाती।

लोगो ने पूछा—आप खाना कहा से खाते है ? इस प्रश्न का उत्तर इन्होंने रईस-उल-मुतवक्किलीन की शान से ही दिया। बोले—मेरे लिए वहा से खाना आता है जहा से बच्चे के लिए मा के पेट मे खाना आता है और वहा से खाता हू जहा से जगल के जानवर खाते हैं। अल्लाह कहता है—मैं रिज्क देता हू ऐसी जगह से जो खयाल मे न आये।

यह अक्सर सीने पर हाथ मारकर 'वाशूकाह' कहा करते थे। इसका भाव यह है कि मुझको उस अल्लाह के दीदार का शौक है जो मुझे हर वक्त देखता है। आखिरी दिनो मे यह मुल्क 'रे' की जामा मस्जिद मे रहने लगे थे। सख्त बीमारी की हालत मे भी इन्होने तिहारत (पवित्रता)

मे कमी न आने दी। हमेशा बावुज़ू और बानमाज़ रहे।

इसीलिए स्वर्गवास होने पर जब एक बुज़ुर्ग ने स्वप्न मे इन्हे देखकर पूछा—"अल्लाह ने आपके साथ क्या सलूक किया?" तो बोले—"मैंने दुनिया मे इबादत बहुत की और तवक्कुल भी बहुत किया, मगर मौत के वक्त मैं साफ और बावुज़ू था, यह बात अल्लाह को बहुत पसन्द आई और ज़न्नत मे भी ऊचा रुतबा दिया और कहा—हमारी बारगाह मे पाको से ऊचा रुतबा किसी को नही मिलता।"

: २६ :

शेख अबुल अब्बास क़स्साब

पिछली जीवनी मे यदि घटनाओ की क़तार-सी आकर सामने खड़ी हो गई थी तो सत अबुल अब्बास कस्साब की जीवनी मे विचारो की एक-से-एक ऊची चोटिया दृष्टिगोचर होती हैं, जो उन्हे इस्लाम के ऊचे सतो की पक्ति मे ला बिठाती हैं।

यह महात्मा सत अबुलसईद अबुलखैर के गुरु थे और अपने आलिम मुरीद को इन्होने जो वसीयत की थी वह निहायत माकूल है। इन्होने कहा कि अगर लोग तुमसे पूछें कि तुम अल्लाह को पहचानते हो या नही, तो हर्गिज यह न कहना कि मैं अल्लाह को पहचानता हू। इसलिए कि मारफत-इलाही का दावा करना शिर्क है और निहायत नामौज़ू भी।

इसी बात के दूसरे पहलू को सामने रखते हुए इन्होने कहा—"और यह भी न कहना कि मैं अल्लाह को नही पहचानता, क्योकि मारफते-इलाही से इन्कार करना कुफ्र है। लोगो को जवाब मे कहना, 'मैं उसे जानता हू,' यह ठीक नही, न यही कहना ठीक है कि नही जानता, बल्कि ठीक यह है कि अल्लाह ने अपनी मारफत अपने फज़ल से मुझे अता की है।"

लिखा है कि एक बार यह एकान्त मे इबादत कर रहे थे, उसी

समय मस्जिद मे मुअज्जन ने अजा दी। इन्होने अपने दिल में कहा—अल्लाह के पास से उठकर उसकी दरगाह मे जाना मेरे लिए दुश्वार है। लेकिन ज्योही शरीयत का खयाल आया, यह खिलवत से उठकर मस्जिद में आये और नमाजे-जमाअत पढी।

इनकी स्वय अपने प्रति क्या धारणा थी, इसका परिचय देनेवाली घटना यो है : किसी ने स्वप्न मे मैदाने-कयामत देखा और स्वप्नावस्था मे ही उसने इन्हे हर तरफ तलाश किया मगर कही न मिले। उसने इनसे सब मामला बयान करके पूछा कि वहा दीखे क्यो नही ? इस प्रश्न के उत्तर मे यह बोले—"मैं नाबूद हू, मेरा अस्तित्व ही नही। और जिसका अस्तित्व ही नही, वह नाबूद है, उसे तुम कयामत मे क्योकर पाते ?" फिर बोले—'मैं अल्लाह ताला से पनाह मागता हू कि कयामत मे मुझे कोई न देखे। यानी मुझे अल्लाह ऐसा नेस्त कर दे कि सिवा उसके मुझे कोई देख नही सके।"

इसी भाव को और भी स्पष्ट रूप से व्यक्त करनेवाला किन्ही सूफियो का इनसे पूछा गया यह प्रश्न है कि कयामत के दिन जब बहिश्ती बहिश्त मे और दोजखी दोजख में भेज दिये जायगे, उस वक्त जवामर्द लोग कहा होगे ? बोले—जवामर्द वह है जिसकी जगह दुनिया और उक्बा (परलोक) मे कही न हो।

इनकी सूक्ति है—भागवत शिष्टता जीवन मे स्वीकार करो, अन्यथा सदा दुखी ही रहोगे। वह कहते : "तमाम दुनिया ईश्वर से आजादी चाहती है, किन्तु मैं तो उसकी वन्दना का ही इच्छुक हू, क्योकि वन्दना मे बन्दे की कुशल है और तथाकथित आजादी से जिज्ञासु जीव के भय और मृत्यु का शिकार बनकर सम्पूर्णतया विनष्ट हो जाने की ही अधिक सम्भावना है।" कहते—"अल्लाह जिसका भला चाहता है उसके अगो को इल्म अता करता है। फिर एक-एक अग को अपनी ओर आकर्षित करके उसे नेस्त कर देता है, ताकि उसकी नेस्ती मे अपनी हस्ती को प्रकाशित करे। और जिस समय वह नेस्त हो जाता है और अल्लाह की हस्ती उसमे प्रकाशित होती है, वह अपनी उस रूपान्तरित स्थिति से दुनिया को देखता है कि यह दुनिया एक गेंद है जिसे गरदिश देनेवाला

अल्लाह है।'

अपने शिष्यो से प्रेमपर्वक कहते · "मुझमे और तुम मे केवल इतना अन्तर है कि मैं जो कुछ कहता हू 'उसकी' प्रेरणा से कहता हू और तुम जो कहते हो वह मुझसे प्रेरणा लेकर कहते हो, मैं उसको देखता और उससे सुनता हू और तुम मुझको देखते और मुझसे सुनते हो। यदि यह बात न होती तो मुझमे और तुममे कोई अन्तर न होता, क्योकि जिस तरह तुम मानव हो, उसी तरह मैं भी मानव हू।"

यह भी कहते—"गुरु अपने शिष्य के लिए शीशे के समान है। इस शीशे मे शिष्य उसी तरह देख सकता है जिस तरह वह विचार और बुद्धि के प्रकाश मे देखता है। अतएव शिष्य का गुरु की सेवा मे रहना सौ बार नमाज़ पढने से अधिक पुण्यप्रद है।" और मनोरजक ढग से यह भी कहते · "सारी रात आराधना करने से जो पुण्य होता है उससे अधिक पुण्य इसमे है कि खाते वक्त भूख से एक ग्रास कम खाये।"

वह व्रत-साधना के बडे पक्षपाती थे, क्योंकि इनका अपना निजी अनुभव यह था कि जब उपवास करते तो इनके मन मे आराधना की भावना बढती और पेट-भर भोजन कर लेते तो मन में पाप की प्रेरणा उठती। इसीलिए इनका सिद्धान्त है कि भूखा रहना स्वय एक ऐसी आराधना है जो आराधना की ओर प्रेरित करती है।

इनकी कुछ सूक्तिया निम्न प्रकार है—

"प्रत्येक सूफी, ज्ञानी और भक्त ईश्वर से किसी-न-किसी कामना की पूर्ति की आशा रखता है। पर मैं न तो उससे कोई सासारिक पदार्थ ही चाहता हू और न ही किसी पारलौकिक पद-प्रतिष्ठा का इच्छुक हू। हां, इतनी भावना मेरे मन मे अवश्य है कि ईश्वर कृपा करके मेरी खुशी, मेरे अह को मिटाकर मेरे मन को स्वच्छ कर दे।"

"सासारिक लोगो के दिल मे जिन पदार्थों की बडी मान्यता और प्रतिष्ठा है, परलोक मे उनकी रत्ती-भर भी न मान्यता है और न प्रतिष्ठा।"

"दुनिया मे अल्लाह के ऐसे भक्त भी हैं जिन्होने दुनिया को और दुनिया के तमाम ऐशोआराम को दुनिया वालो के लिए छोड दिया,

पृथ्वीके [illegible] सुख और आनद को परलोक वालो के लिए छोड दिया और अल्लाह के सिवा दुनिया या उकवा (लोक-परलोक) की किसी भी चीज़ के इच्छुक नही। उनको सतोष इसीमे है कि ईश्वर ने उन्हे आराधना का सौभाग्य प्रदान किया।"

"अल्लाह फना और बका (सत् और असत्), ज़ुल्मत और नूर (प्रकाश और अप्रकाश सब बन्धनो से मुक्त है। सत् और असत् के बंधन मे तो वह नही है, पर यह जो कुछ सत् और असत् है उसका उद्गम वह है। वह हस्त की हस्ती है। सबसे अधिक भाग्यवान वह बदा है जिसको अल्लाह ने अपनी कृपा से उसकी हस्ती पर मुत्तला कर दिया है।"

"जवामर्द खल्क के लिए न राहत है न वहशत, क्योकि जवामर्द लोग अल्लाह के पार्षद हैं और खालिक ही से खल्क को देखते हैं। नेक लोगो की सोहबत इख्तियार करने से और पवित्र स्थानो के दर्शन करने से अल्लाह का कुर्ब (सान्निध्य) प्राप्त होता है। सगत ऐसे व्यक्ति की करो कि जिसके असर से तुम्हारा जाहिर और बातिन नूरे-मारफत से मुनव्वर हो जाय।"

"दुनिया नापाक है और दुनिया की नापाकी से भी अधिक अपवित्र वह दिल है जो दुनिया से प्रेम करता है। तमा (लालच करना) जवामर्दी नही है। अल्लाह हज़ार बदो मे से किसी एक को अपना कुर्ब अता करता है। जो वदे ख़ालिक से नज़दीक होते है वे ख़ल्क से दूर रहते हैं और ख़ल्क को उनकी और उनके हाल की ख़बर नही होती।"

ख़ल्क को ऐसी सिफत हासिल करनी चाहिए जिसके हासिल करने के वाद ख़ल्क न हक रहे और न बातिल। जबतक मैं और तू बाकी है, तबतक ईशारत और इबादत भी रहती है; जब मैं और तू बाकी नही रहता तो ईशारत और इबादत भी मिट जाती है, क्योकि फिर उनकी कोई ज़रूरत नही।"

"जो शख्स अल्लाह के सिवा दूसरी चीज़ तलाश करता है वह दो खुदा की परस्तिश (उपासना) करता है। अल्लाह को इस तरह ढूढो जिस तरह उसे ढूढने का हक है और अल्लाह की इबादत इस तरह करो जिस तरह

उसकी इबादत करना हक है।"

सब पीर अपने मुरीदो से अदब चाहते हैं, मगर यह एक मीठी-सी नई बात कह गये हैं : "मैं तुम लोगो से यह तलब नही करता कि तुम लोग मेरा अदब करो, क्योकि बदसलीका वह मा है जो दूध-पीते बच्चे से अदब की तालिब हो। अदब का तालिब होना तुम-जैसे लोगो की ज़ेबा और मुझ-जैसे लोगो की नाज़ेबा है।" सच है, बेचारा मुरीद अदब क्या जाने, अदब का बोझ उठाने की ताकत तो पीर मे ही हो सकती है।

एक और ऐसी ही अनूठी बात कह गये है—"शैतान अल्लाह का कुश्ता है और अल्लाह के कुश्ते को पत्थर से मारना जवांमर्दी के ख़िलाफ है।" साथ ही एक और बात कहते हैं और शैतान की जिम्मेवारी उसीके गले मढते हैं—"अगर अल्लाह कयामत के दिन तमाम खल्क का हिसाब-किताब मेरे सुपुर्द कर दे तो मै सबको बरी करके सारे गुनाहो और बुराइयो का हिसाब-किताब सीधे शैतान से ही करूगा।"

मगर समझदार आदमी की तरह यह भी कह देते हैं, "लेकिन मैं जानता हू कि कयामत के दिन अल्लाह ताला खल्क का हिसाब-किताब मेरे सुपुर्द न करेगा। मगर क्यो ? इसीलिए न कि कही वह अपनी सफाई पेश न कर बैठे।" कहा—"मुझको दुनिया मे किसीने नही देखा, यानी किसीने मेरे मरतबे को नही पहचाना, क्योकि जो जिस मरतबे का होता है उसी कदर नूरे-मरतबा देखता है।"

एक सूक्ति यह है—"अगर अल्लाह मुझे नेस्त करके अपनी हस्ती से नेक सिजदा कराये तो वह एक सिजदा तमाम आलम की इबादत से ज्यादा होगा।" बात माकूल है, पर कोई प्रश्न कर सकता है कि ये जो सिज़दे हो रहे है इन्हे करानेवाला कौन है ? जैसे बादशाह अपनी मर्ज़ी से अपने बच्चे को कोई रुतबा दिलाता है वैसे ही वह भी किसी सिजदे को वैसी अहमियत दे देता है जिसका जिक्र सत कर रहे हैं।

अपने रब्बानी जोम (आकस्मिक उत्साह) में वह कह उठते हैं—"मै हजरत आदम के फख्र का बायस हू और हजरत रसूल का कुर्रतुल-ऐन हू, यानी हजरत कयामत के दिन इस बात पर फख्र करेंगे कि मैं उनकी औलाद हू और नबी की आखें इस ख़ुशी से चमक उठेंगी कि मैं उनकी उम्मत मे

हूं।" और इससे भी एक कदम आगे बढ़कर कहते हैं—

"कयामत के दिन सब झण्डों से मेरा झण्डा बुलन्द होगा। जबतक हजरत आदम से लेकर हजरत मोहम्मद मुस्तफा तक तमाम नबी मेरे झण्डे के नीचे न आयगे, मैं बाज न रहूंगा।"

अदब और मर्यादा का खयाल रखनेवाले भक्त अत्तार यहां पर कहते हैं कि इन संत का यह कौल वैसा ही है जैसा बायजीद बस्तामी का क़ौल था।

बायजीद बस्तामी मुस्लिम जगत् के सबसे ऊंचे चार-छह संतों में हैं और जलाली महात्मापन के जोश में आकर कह गये थे—"लबाए आज़म मन-लवाये मोहम्मद।" लिखा है कि किसी ने बायजीद से कहा कि कयामत के दिन तमाम खल्क लवाये मोहम्मद के साये में होगी, तो यह बोले—"मैं कसम खाकर कहता हूं कि मेरे झण्डे के नीचे अलावा खल्क के तमाम नबी होंगे।"

ऐसे अवसरों पर मर्यादा की रक्षा के लिए भक्त अत्तार यह युक्ति पेश करते हैं कि इन बातों को कहनेवाला दरअसल अल्लाह ही होता है। वही किसी भक्त के मन में जलाल का खयाल डालकर ऐसी साधारण बात कहलाता है, जैसेकि मंसूर ने 'अनल हक' कहा और बस्तामी ने 'सुभानी आजम शानी' कहा। और भी ऐसे संत हुए हैं जिन्होंने ब्रह्मलीनता में ऐसे वचन बोले हैं।

कहने को तो स्वयं अत्तार ही ने कहा है कि जिसके मुख से एक बार यह न निकला कि 'मैं ब्रह्म हूं' वह दरअसल अभी काफिरों की जमात में ही है। पर भक्त को बड़ी मुश्किल पड़ जाती है, जब कोई अपने झण्डे को मोहम्मद के झण्डे से ऊंचा बताता है, या कहता है कि मेरे झण्डे के नीचे आदम से लेकर दुनिया में जितने नबी हुए हैं सबको आना ही होगा।

भारतीय साहित्य में भी शिव, विष्णु आदि देवताओं के सम्बन्ध में ऐसी समस्याएं उठ खड़ी होती हैं। कहीं शिव सर्वोपरि हैं, तो कहीं विष्णु, कहीं दूसरे ही कोई देवता। यह बात तो सर्वमान्य है कि एक वह स्थान है, जहां न कयामत है न बहिश्त, न शिवलोक है न विष्णुलोक, पर इस प्रश्न कुछ नीचे के स्तर पर एक बहुत बड़ी समस्या जरूर आ खड़ी होती है।

शिवलोक मे शिव सबसे बडे हैं और विष्णुलोक मे विष्णु सर्वोपरि हैं।" और ये सभी देवता सचालित होते हैं किसी और ही परमदेव के द्वारा। पारस्परिक श्रद्धा और सम्मान यदि हो, क्योकि अन्तत. सब एक ही सत्ता के विभिन्न स्वरूप हैं, तब तो कठिनाई होती ही नही, जैसाकि एक बादशाह दूसरे बादशाह के यहा जाकर अभिनंदित और सम्मानित होता है, पर शासन उसीका रहता है जिसका वहा राज्य है।

यह कहते—"दिन और रात मे कोई घडी ऐसी नही जिसमे भगवान की भक्त पर कृपा की वर्षा न होती हो। यदि भगवान तुझे अपने आदेशानुसार व्यवहार करने की सामर्थ्य दें तो यह तेरा परम सौभाग्य है। पर यदि भगवान की कृपा तुझपर न हो तो यह एक इतनी बड़ी मुसीबत है कि तेरे दु ख पर सारी दुनिया को सहानुभूति मे रोना चाहिए।"

अपनी मानसिक कल्पना के इतिहास का एक चित्र-सा इन्होने यहां खीचा है—"मैं गैब के दरिया के किनारे खडा हुआ था और एक बेलचा मेरे हाथ में था। बस एक बार मैंने बेलचा लगाया और आकाश से पाताल तक सब नष्ट कर दिया। फिर दूसरी बार बेलचा लगाया तो कुछ भी बाकी न रहा। साधना मे ऐसा अनुभव होता है कि सब निश्शेष हो जाता है।"

इसी भाव की पुष्टि अशत इनकी इस सूक्ति से होती है : "अल्लाह कयामत के दिन एक गिरोह को जन्नत में और एक गिरोह को दोज़ख मे भेजेगा। इसके बाद बहिश्तियो और दोजखियो को गैब के दरिया मे डाल देगा, अर्थात् ये दोनो ही भेद लुप्त हो जायेंगे।" और ये भेद हैं भी निम्न स्तर पर।

अन्तिम सूक्ति इनकी यह है—"जहां अल्लाह है, वहां सिवा रूह के किसी की गुज़र नही।"

: २७ :

अब्दुल्ला ख़फ़ीफ़

अब्दुल्ला फारिस के शाही खानदान के एक रत्न थे और लिखा है कि इनके बाद फारस मे इनके-जैसा और कोई मर्द हक साहबे कमाल बशर (ईश्वर या सत्य को पहचानने वाला और गुणवान) न हुआ। बहुत-से शेख़ो के यह शेख़ थे और जुनैद तथा मसूर हल्लाज आदि संतो को इन्होंने देखा था और तने-तनहा (एकाकी) इन्होने बहुत सफर किया।

कहते है कि इब्तिदा मे ही इन्हे इबादते-इलाही का गहरा शौक था और अक्सर सुबह से शाम तक इन्होने एक हजार रकत (खडा होना, झुकना और दो बार ज़मीन पर माथा टेकना) नमाज़े पढी और कभी-कभी एक रकत मे दस हज़ार बार सूरते-इखलास पढ़ा करते थे। बीस साल तक टाट का लिबास पहना और इनका नियम था कि हर साल चार चिल्ले खीचते।

चालीस दिन के उपवास को 'चिल्ला' कहते हैं और जब इनका स्वर्ग-वास हुआ तो यह चालीस चिल्ले बराबर खीचते चले आये थे और आख़िरी चिल्ले मे जान-बहक तस्लीम हुए। खफीफ का अर्थ है थोडा स्वल्प। और लोग इन्हे खफीफ इसलिए कहने लगे थे कि यह रोज़ाना शाम को रोजा तोडते वक्त सात मुनक्को से ज्यादा न खाते।

लिखा है कि एक बार इनके नौकर ने इन्हे कमज़ोर होता देखा तो सात के बजाय आठ मुनक्के खाने को रख दिये। यह बिना देखे रोज़ के विश्वास पर उन्हे खा गये। मगर उस रात इबादत मे इन्हे वैसा लुत्फ न आया जैसा रोज आता था। अब इन्हे सही बात मालूम हुई तो उस नौकर को ख़िदमत से हटा दिया।

कभी इन्होने अपने पास इतना माल न रक्खा कि जकात वाजिब हो, पर सफर मे अपने साथ पानी पीने को जो डोल-रस्सी रखते थे उसपर भी

इनकी टीका हुई।

सफर मे प्यास लगी। एक हिरन को पानी पीते देखा तो यह भी नज़दीक पहुचे, मगर पानी नीचा हो गया। इनके दिल को चोट लगी। बोले—"क्या मैं हिरन से भी गया-बीता हू?" तो आवाज़ आई—"हिरन के पास डोल और रस्सी नही थी, इसलिए हमने खुद पानी को उसके नज़दीक कर दिया। तुम्हारे पास डोल-रस्सी है इसलिए पानी को नीचा कर दिया।"

यह बडे लज्जित हुए और डोल-रस्सी फेककर चल दिए; फिर आवाज़ आई—"हमने तुम्हारे सब्र को आज़माया था। जाओ और पानी पियो!" देखा तो पानी ऊपर तक आ गया था।

इन्होने प्रेम से पानी पिया, वुज़ू किया और उसी वुज़ू से मदीना की पवित्र नगरी मे प्रवेश किया। फिर मक्का जाकर हज किया। जब हज से वापस बगदाद पहुचे और जुनैद से मुलाकात हुई तो उन्होने इन्हे देखते ही कहा—"अगर तुम और थोडा सब्र से काम लेते तो पानी तुम्हारे कदमो से बहने लगता।"

यह कहते हैं कि आलमे-जवानी मे एक शख्स ने मेरी दावत की। वह खुद कौर बना-बनाकर मुझे खिला रहा था। मगर सालन सडा हुआ और बदमज़ा था। उसकी दिलशिकनी न हो, इसलिए मैंने कुछ न कहा, पर अचानक उसकी नज़र मेरे चेहरे पर पडी तो मेरी हालत देखकर वह भी लज्जित हुआ और मैं भी।

बाहर आकर कुछ लोगो के साथ हज को चला। कदसिया मे पहुच कर हम लोग राह भूल गये और फाको-पर-फाके होने लगे। साथियो ने चालीस दीनार मे एक कुत्ता खरीदा, उसे जिबह करके भूना और खाने को मेरे सामने रक्खा। मुझे इस मेज़बान की खिजालत (लज्जा) याद आई। तौबा की राह मिल गई।

कितनी अच्छी थी वह नसीहत जो बहुत इसरार करने पर मिस्र के एक जवामर्द ने दी थी। उसका और एक समाधिस्थ वृद्ध का हाल सुनकर यह मिलने गये। सलाम किया दो बार, तीन बार, पर जवाब न मिला। आखिर यह बोले—"कसम है तुम्हें अल्लाह की, मेरे सलाम का जवाब

"तब उसने सलाम कहकर अपना सिर झुका लिया।

अब यह नसीहत के लिए उसके पीछे पडे। वह कहने लगा—"ऐ खफीफ! दुनिया थोडी है और थोडी मे से थोडी बाकी है। इस थोडी से बडा हिस्सा हासिल कर। मालूम होता है, तू वेफिक्र है, इसीलिए मेरे सलाम को आया है।"

यह कहते है कि उस वक्त मुझे बडी भूख लग रही थी। मगर उसके इतना कहने से भूख प्यास सब जाती रही।

इन्होने उसके साथ जुहर (दोपहर) और अस्र (सूर्यास्त से पहले) की नमाज़ पढी और फिर उस जवान से कोई नसीहत की बात कहने को कहा। वह बोला—"हम अहले-मुसीवत हैं। नसीहत के लायक हमारी ज़ुबान ही नही, बल्कि हम चाहते हैं कि कोई हमे नसीहत करे।" पर यह भला उसे इस तरह बिला कुछ लिये कब छोडने वाले थे?

बहुत इसरार करने पर वह बोला—"ऐसे शख्स की सोहबत इख्तियार कर कि उसका दीदार तुझे अल्लाह की याद दिलाता रहे और तुझे अमल की ज़ुबान से आमिल बनाये, न कि गुफ्तार की ज़ुबान से। ऐसे कुछ लोग भी हो तो दुनिया इतनी बुरी क्यो हो?"

यह कहते हैं कि मैंने सहराए-रूम (रोम के जगल) मे देखा कि एक राहक की लाश जलाई गई। फिर उसकी राख अधो की आख मे लगाई गई तो उनकी आखो से दीखने लगा और बीमारो ने उसे खाया तो वे अच्छे हो गये। मैंने कहा, "या अल्लाह! इनका मज़हब झूठा है, फिर यह करामात?" स्वप्न मे रसूल ने कहा, "यह सत्य और तप का फल है।"

रसूल का कहना था कि जिसका मज़हब बातिल (झूठा) है वह भी सिद्क (सचाई) और रियाज़त (तपस्या) की वजह से इस दर्जे पर जा पहुचता है, तो ज़रा ख्याल करो कि जो बच्चे धर्म को माननेवाले है वे लोग अगर जीवन में सच्चाई, तपस्या और भूतदया की भावना से प्रेरित हो तो कैसा अच्छा फल होगा? कमी है अमल मे।

इसी बात को रसूल ने एक बार स्वप्न मे प्रकट होकर खफीफ को जोरदार भाषा मे समझाया। वह बोले—"राहे-सलूक को जाननेवाले अगर उस राह को इख्तियार न करेंगे तो कयामत मे सबसे ज्यादा अज़ाब

(पाप कष्ट) में गिरफ्तार होगे।" यह एक भयकर सत्य की घोषणा है और न जाने कितने इस राह के राही हैं।

स्वप्न मे इन्होंने रसूल को एक बार और देखा। रसूल का अनुकरण करके इन्होने चाहा कि यह भी अगूठे के बल खडे होकर नमाज पढे। मगर न पढ सके। अफसोस हुआ तो ख्वाब मे रसूल को देखा कि कह रहे हैं—"अगूठे पर नमाज पढना मेरे ही लिए था। तुम ऐसा न करो।"

एक बार स्वप्न देखा कि कयामत लगी हुई है, लोग परेशान हैं। इतने मे एक लड़का आया और अपने बाप का हाथ पकड़कर पुल सरात से गुज़रते हुए उन्हे जिन्नत मे ले गया। वह जगे तो पुत्र की आवश्यकता का ध्यान आया। विवाह किया, एक लडका हुआ और मर गया। बीवी से कहा, "मुराद पूरी हुई, अब चाहो तो तलाक दे दू।"

कहते हैं कि इन्होंने चार सौ निकात किए थे, क्योंकि स्त्रिया इनके साथ विवाह की इच्छुक थी। एक वजीर की लडकी ४० साल तक इनकी ब्याहता रही, मगर इनका भाव अलिप्त था। वजीरज़ादी के यहा जब यह जाते, खाना खाते और उसे देखते। इस प्रकार सब्र का अभ्यास करते और सब्र की पेट पर अठारह गाठे थी

इनके दो मुरीद थे। दोनो का नाम अहमद था। फर्क के लिए इन्होने एक का नाम कह रखा और दूसरे का मह। मह इबादत ज्यादा करता, मगर यह कह पर विशेष कृपा रखते। लोग बुरा मानते। एक दिन इन्होंने मह से कहा—"ऊंट को छत पर बाध आओ।" तड़ाक से मह बोला—"हज़रत, छत पर ऊंट कैसे जा सकता है?"

अब इन्होंने यही बात अहमद कह से कही। वह उठा और कमर बाधकर ऊट को उठाने चला। पेट के नीचे जाकर दोनो हाथो से ऊट को उठाना चाहा। लेकिन अत्तार कहते हैं, कहां ऊंट और कहां आदमी; उसे हरकत भी न हुई। यह बोले—"बस, चले आओ।" और कहा—"मुरीदो, तुमने फर्क देखा? यह ज़ाहिरदार (दुनियादार) है और वह दिल से मेरा मुतीय (आज्ञाकारी) है।"

काला मातमी लिबास पहने एक मुसाफिर इनके पास आया। इन्होंने पूछा, यह क्यो? वह बोला—"मुझपर हावी काम-वासना और लोभ-

दुलाके मर गए हैं। उनका मातम मना रहा हूं।" इन्होंने उसे झिडककर बाहर निकलवा दिया और फिर बुलाया। इसी तरह ७० बार हुआ, पर उसने बुरा न माना। यह बोले—"तेरा लिबास बजा है।"

दो सूफी दूर का सफर करके इनकी ज़ियारत को आये, मगर मालूम हुआ कि बादशाह के दरबार मे गये हैं। दिल मे सोचा, यह कैसा सूफी जो बादशाह से मिलता है! जेब ठीक कराने वे दर्जी के पास गये। उसकी कैंची गुम हो गई। चोर समझकर पकड़े गये। बादशाह ने हाथ काटने का हुक्म दिया, तब खफीफ की सिफारिश पर छूटे।

दरबार से रिहा होकर जब वे दोनो सूफी अब्दुल्ला खफीफ के पास आये तो इन्होंने रहस्यमय स्वर मे कहा, "मैं इन्ही कामो की गरज़ से बादशाह के पास जाता हू।" अब सूफ़ियो को उस अवमानना का ध्यान आया जो उन्होंने मन-ही-मन की थी। बहुत ही लज्जित होकर उन्होने खफीफ से क्षमा-याचना की।

एक बार एक बीमार मुसाफिर उनके पास ठहरा। इन्होने रातभर उसकी सेवा की। पिछली रात को आख लग गई। उसने पुकारा, पर यह न जागे। गुस्से मे बोला—लानत है! सुबह लोगो ने शिकायत की तो कहा—"बुरी बात सुनने को मेरे कान ही नही हैं। मैंने तो सुना, वह कहता है, तुझ पर रहमत हो।"

यह एक बहुत अच्छा उसूल है—बुरी बात को न सुनना, बुरी बात को न देखना, किसी भी तरह अपने दिल और दिमाग पर बुराई का असर होने ही न देना। यही बुराई के उन्मूलन का रास्ता है कि न बुराई देखे, न बुराई करे; न किसी पर लानत डाले, न लानत ले। रहमत ही दे और रहमत ही ले।

यह कहते थे—अल्लाह ने फरिश्ते और जिन पैदा किये और फिर असमत और किफायत और हिल्लत को पैदा किया और हुक्म दिया कि हर कौम हर चीज इसमे से ले ले। फरिश्तो ने असमत को, जिन्नोने किफायत को और इसानो ने हिल्लत (धर्मानुसार आचरण) को पसंद किया। और यही वजह है कि इसान कारे-खैर मे हिले-बाजी बहुत करता है।

इनका कहना है—पहले सूफी देव जिन्नों पर गालिब रहते थे, अब

देव सूफी पर गालिब रहते हैं। सूफी वह है जो सूफे-सफा पहने, यांनी ऊन के कपड़े को बातनी सफाई के ऊपर पहने। जब दिल सूफी हो तभी सूफी का लिबास ज़ेब (शोभा) देता है। सूफी को लाज़िम है कि दुनिया को तर्क करे और नफ्स पर जफा करे।

इनकी सूक्तिया हैं—दुनिया से पाक जाना राहत है। तकदीर पर सब्र करना और मसायब यानी तकलीफे उठाना तसव्वुफ है। कश्फे-गैब की तस्दीक करना ईमान है। तर्के राहत और रजे-दायमी को इरादत कहते हैं। वस्ल यह है कि महबूब से ऐसा एकात्म्य हो कि उसके सिवा कोई याद न रहे।"

"आजिज़ बनकर खुदा से सवाल करना इनबिसात अर्थात् आनद है। नफ्स और दुनिया और शैतान से दूर रहना तकवा है। खुदा की इबादत से नफस को तोडना रियाज़त है। कनाअत (सतोष) यह है कि जिस चीज़ पर काबू नही उसको तलब न करना और जिसपर काबू है उससे बेपरवाह रहना।"

"माल और दौलत को त्याग देना ज़ुहद है। रज़ा अर्थात् आशा यह है कि किसी दिन ब्रह्मलीन होगे हो, इस आशा से सदा प्रसन्न रहना।"

यह सूक्ति ज़रा गहरी है—सिफत से बाहर आना फुक्र है। हकीकत का यकीन इसरार है। तमाम कार्मे अल्लाह के सुपुर्द करना और मुसीबत मे सब्र करना उबुदीयत है।

दरवेशी को ज़ाहिर करना बुरा है और दरवेशी यह है कि अगर अल्लाह दे तो खा ले और शुक्र करे और अगर न दे तो न खाये और सब्र करें। एक सत को ऐसा कहने पर दूसरे सत ने कहा था—यह तो कुत्ते भी करते हैं। उसने पूछा, फिर आप क्या करते हैं? बोले—मिलता है तो खैरात, नही तो शुक्र करता हू।"

"खफीफ ने मरते वक्त अपने नौकर को यह वसीयत की कि जब मर जाऊ तो मेरे हाथ रस्से से बाधना और तौक गले मे डालना और किबला रुख बिठाना। शायद अल्लाह मुझे बख्श दे। क्योकि मैंने उसके बहुत गुनाह किए हैं, यह दशा देख शायद दया दिखाये।"

कहते हैं कि नौकर ने वफात के बाद वसीयत के मुताबिक जब अमल

करने का इरादा किया तो गैब से आवाज़ आई—'ओ बेअदब ! ज़रा अदब कर। हमारे अज़ीज़ को ख्वार करने का कस्द न कर।' स्वभावतः ही नौकर ने अपना इरादा छोड़ दिया और समझ गया कि मालिक मकबूल हुए हैं।